वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

TARKSHEEL PATH

जनवरी-फरवरी 2025

अन्दर पढ़ें
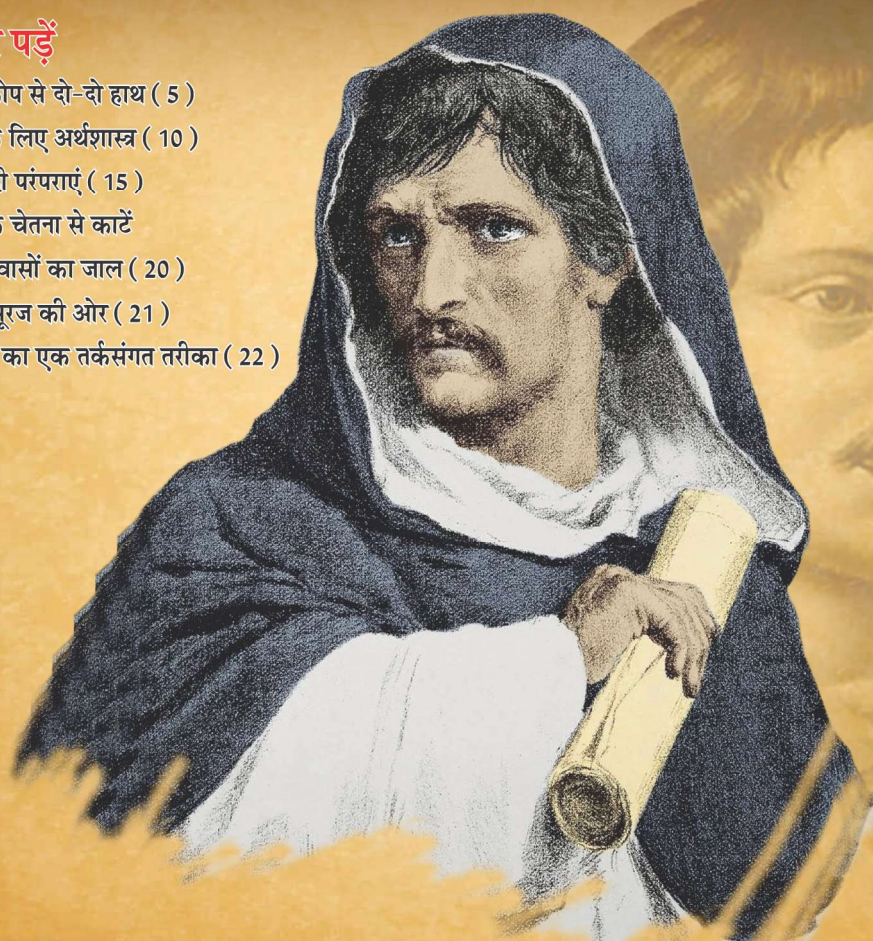
ब्रूनों : वैज्ञानिक सत्य के प्रति अटूट निष्ठा और बलिदान की कहानी (2)

30/-

फलसफा उन लोगों के लिए है जो सोचते हैं, धर्म उन के लिए हैं जो पीछे लगते हैं

वो खेत में मिलेगा खलिहान में मिलेगा

वो खेत में मिलेगा
खलिहान में मिलेगा,
इन्सान तो ऐ मानव
इंसान में मिलेगा।

मजदूर में मिलेगा
किसान में मिलेगा,
इन्सान तो ऐ मानव
इकबाल में मिलेगा।

मेहनत में मिलेगा
मशक्कत में मिलेगा
इन्सान तो ऐ मानव
बस काम में मिलेगा।

ना हकमार में मिलेगा
ना बेईमान में मिलेगा,
इन्सान तो ऐ मानव
ईमान में मिलेगा।

ना दुख दर्दों में मिलेगा
ना आंसूओं में मिलेगा,
इन्सान तो ऐ मानव
मुस्कान में मिलेगा।

ना पाखंडों में मिलेगा
ना कर्मकांडों में मिलेगा,
ज्ञानवान तो ऐ मानव
विज्ञान में मिलेगा।

– मुनेश त्यागी

अमित शाह की तरफ से डा. अंबेडकर पर शर्मनाक निंदनीय टिप्पणी

दलितों को दबा कर रखने की पैरवाई करती 'मनू-स्मृति' का सख्त विरोध करने वाले चिंतक डा. भीम राव अंबेडकर के बारे में भारत की लोक सभा में गृह मंत्री अमित शाह की तरफ से की गई टिप्पणी ''माननीय, आज कल तो अंबेडकर एक फैशन हो गया व अंबेडकर, अंबेडकर अंबेदकर... अगर इतना नाम भगवान का लिया होता तो सात जन्मों तक इनकों स्वर्ग मिल जाता।'' अति निंदनीय व भाजपा की दलित विरोधी मानसिकता का नंगा-चिट्टा प्रगटावा है। भारतीय संविधान की धज्जियां उड़ाने वाली हिंदूत्वी फाशीवादी भाजपा सरकार औरतों, दलितों, कम गिनती पर, प्रगतिशील लोगों पर जबर किए जाने के हिमायती ग्रंथ 'मनू-स्मृति' को भारत में ऊँचाई पर लागू करने के लिए हर संभव यत्न जुटा रही है। इस का विरोध करने वाले को निशाने पर लेती है। इसलिए डा. अंबेडकर भी उनकी आंख का कांटा बने हुए है। यह बहुत ही निंदनीय व विरोध में खड़े रहने का समय है।

मुख्य संपादक
बलबीर लौंगोवाल
balbirlongowal1966@gmail.com
98153 17028

संपादक
गुरमीत अम्बाला
tarksheeleditor@gmail.com
94160 36203

संपादकी मंडल
अजायब जलालाना (94167 24331)
कृष्ण कायत (98961 05643)

विदेशी प्रतिनिद्धि
अवतार बाई कनेडा
प्रधान TRSC (+1-672-558-5757)
अछर सिंह खरलवीर कवैंटरी (इंगलैंड)
(+44-748-635-1185)
मा. भजन सिंह कनेडा, बलदेव रहिपा टोरांटो

पत्रिका शुल्क :–
वार्षिक : 150/– रू.
विदेश : वार्षिक : 40 यू.एस.डॉलर
रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:
मुख्य कार्यालय
तर्कशील भवन, संघेडा बाईपास
तर्कशील चौंक, बरनाला–148101
01679–241466, 98769 53561
tarkshiloffice@gmail.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:
www.tarksheel.org
Tarksheel Mobile App :
Readwhere.com

राजेन्द्र भदौड़, प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी की तरफ से तर्कशील सोसायटी पंजाब (रजि.) द्वारा अप्पू आर्ट प्रैस, शाहकोट (जलन्धर) से मुद्रित करके मुख्य कार्यालय तर्कशील सोसायटी पंजाब (रजि.), बरनाला, (पंजाब) से तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण के लिए जारी किया।

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क
पंजाब नैशनल बैंक में
तर्कशील सोसायटी पंजाब (रजि.) के नाम से
खाता सं. 0044000100282234
IFSC: PUNB0004400 में जमा करा सकते है।
एंव पत्रिका भेजने के लिए एड्रैस व शुल्क की स्क्रीन शॉट/रसीद मोबाइल नम्बर +91 98156 70725 पर वट्सएप कर दें।

इस अंक में

आनलाईन पत्रिका को पढ़ने के लिए :

www.tarksheel.org,

http://tarksheelblog.

wordpress.com

सर्च करें: tarksheel :

www.archive.org

Readwhere.com

संपादकीय

'तर्कशील' के साथी पाठको! जब तक यह अंक आपके हाथ में आएगा, आप वर्ष 2025 के दरवाजे पर दस्तक दे चुके होंगे। मैं भी यही चाहता हूं कि नया साल आपके लिए खुशियों से भरा हो, लेकिन ऐसा कहने से साल खुशियों से भरा नहीं हो जाता। यह एक निर्विवाद सत्य है कि उन्हें खुशनुमा बनाया जा सकता है। इसे बनाने के लिए हमें ज्ञान और विज्ञान की मशाल की जरूरत है,यानि लोकप्रिय वैज्ञानिक साहित्य का अध्ययन। संघर्षों के साथी बनने की ,ऐसे संघर्ष जो वर्ग चेतना की समझ के आधार पर सामाजिक परिवर्तन का अग्रदूत हों। अतीत से मुंह मोड़कर हम भविष्य की स्वर्णिम सुबह का खाका नहीं ढूंढ पाएंगे। 2024 और पिछले कई वर्षों का विश्लेषण करना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। शासक वर्ग की जनविरोधी आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक नीतियां, फासीवाद के लगातार बढ़ते हमले, समाज के विभिन्न वर्गों के बीच अत्यंत सूक्ष्म तरीके से फैलाई जा रही नफरत, धार्मिक नफरत के जरिए मानवता का विनाश, नरसंहार के लिए तैयार की जा रही जमीन का विश्लेषण, इतिहास और विज्ञान के साथ की गई छेड़छाड़, और न जाने और कितनी बातें। आपकी यह पत्रिका इस उद्देश्य के लिए प्रयासरत रही है और आगे भी रहेगी। यशकायी क्रांतिकारी पंजाबी कवि लाल सिंह दिल कहते हैं: 'इसमें कोई संदेह नहीं है/जीवन इतने गहरे गड्ढों में गिर गया है/कि बेहोश लोग रात में आत्महत्या के बारे में सोचते हैं/मुझे लगता है कि मुझे एक चौकीदार बनना चाहिए और आपको जगाए रखना चाहिए।' हम लगातार आवा? लगाते रहेंगे कि आत्महत्या नहीं, बल्कि संघर्ष। शासक वर्ग आपको धर्मों और संप्रदायों में उलझाकर 1947 की तरह अपने भाइयों की हत्या करवाना चाहते हैं। शासकों की बुरी नीतियों को समझें। इसीलिए शहीद भगत सिंह कहते हैं, 'धर्म और पूर्वाग्रह हमारी प्रगति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधाएं हैं। ये हमेशा हमारे रास्ते में बाधाएं साबित हुए हैं। उन्हें फेंक दिया जाना चाहिए।' सभी प्रकार के अंधविश्वासों और भाग्यवाद से समाज को बाहर निकालना होगा। हमारे लिए केवल वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त कर 'वैज्ञानिक विचारों के वाहक' बन जाना तर्कसंगत/प्रभावी नहीं है, जब तक कि हम मानवता के लिए समर्पित न हों और उसके लिए खड़े न हों। ब्रेख्त कहते हैं कि मनुष्य का विज्ञान व्यर्थ होगा और अध्ययन बांझ अगर बिना समर्पित किए अपनी बुद्धि को लड़ने के लिए सारी मानवता के दुश्मनों के विरुद्ध। जन-हितैषी सामाजिक परिवर्तन के लिए अवसाद और निराशा की दुनिया से बाहर रहते हुए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हमारा इस में विश्वास अटूट हो। ऐसा होना ही चाहिए।

आइये 2025 का स्वागत युग कवि पाश की इन पंक्तियों के साथ करें:
हकूमत! आपकी तलवार की लंबाई बहुत छोटी है.
कवि की कलम से भी कहीं छोटी।
कविता के पास अपना बहुत कुछ है
आपके कानून जैसा नहीं।
कविता के लिए हज़ार बार जेल हो सकती है।
पर ऐसा कभी नहीं होगा।
कि कविता तुम्हारी जेल के लिए हो।
आइए हम प्रतिज्ञा करें कि हम अपने जीवन का हर पल -

शोषण मुक्त, समानता पर आधारित समाज का निर्माण करने के लिए समर्पित करेंगे। जैसा कि ग़दरी बाबाओं और भगत-सराभा ने सपना देखा था।

-बलबीर लौंगोवाल

शहादत दिवस (17 फरवरी 1600) के अवसर पर

ब्रूनो : वैज्ञानिक सत्य के प्रति अटूट निष्ठा और बलिदान की कहानी

आधुनिक विज्ञान को स्थापित करने के लिए शुरुआती दिनों में जिन लोगों ने सबसे अधिक कुर्बानी दी और विज्ञान के प्रति अटूट निष्ठा के साथ अन्त तक अपने विचारों पर डटे रहे उनमें जर्दानो ब्रूनो का नाम सबसे पहले आता है।

ब्रूनो का जन्म सन् 1548 में इटली के एक छोटे-से नगर नोला में हुआ। वह शीघ्र ही अनाथ हो गया और इसीलिए उसका पालन मठ में हुआ। तुम्हें मालूम ही है कि प्राचीन काल में जो पढ़ना चाहता था, उसे मठ में और पादरियों की शरण में जाना पड़ता था। सभी प्रकार की शिक्षा में ईसाई धर्म की छाप रहती थी। इतना ही नहीं, बालकों को सबसे पहले पढ़ायी भी जाती थीं ईसाई धर्म की पुस्तकें ही। अपने ज्ञान तथा प्रखर बुद्धि के कारण ब्रूनो को जल्दी ही पादरी का पद मिल गया।

किन्तु जर्दानो युवावस्था से ही धर्म के सिद्धान्तों पर विचार करने लगा था। इन सिद्धान्तों में से उसे बहुत-से गलत लगते थे। धीरे-धीरे सन्देह ने गियोर्दानो के हृदय में घर कर लिया। ब्रूनो की दृष्टि एक दिन अचानक ही मठ के पुस्तकालय में दूर रखी हुई अलमारी की एक पुस्तक पर जा पड़ी। धूल से अटी पड़ी यह पुस्तक चमड़े की ज़िल्दवाली थी। चूहों ने इसे जहाँ-तहाँ काट डाला था। नवयुवक पादरी ने इस पुस्तक को खोलकर देखा। उसने लैटिन भाषा में लिखा उसका शीर्षक पढ़ा-'आकाश के गोलों के घूमने के विषय में तोरूनवासी निकोलाई कॉपरनिकस की पुस्तक'।

कॉपरनिकस की इस विख्यात कृति की कुछ बातें अस्पष्ट रूप में ब्रूनो तक पहुँच चुकी थीं। और अब वह बहुमूल्य कृति उसके सामने थी! अब वह इस पुस्तक को खुद पढ़ेगा! कॉपरनिकस के सिद्धान्तों के बारे में वह खुद जानकारी हासिल करेगा। अब उसे मठवासियों द्वारा बतायी गयी अस्पष्ट बातों पर ही सन्तोष न करना होगा। जर्दानो ने चुपके-चुपके इस पुस्तक का अध्ययन किया। उसने इसे पुस्तकालय के किसी शान्त व एकान्त कोने में अथवा अपने निजी कमरे में ताला बन्द करके पढ़ा। इस पुस्तक के नये सिद्धान्तों की सरलता तथा स्पष्टता से वह आश्चर्यचकित रह गया। वह अपने उत्साह और जोश को दबा न पाया और किसी मठवासी के सामने उसने उस पुस्तक की प्रशंसा कर ही तो दी। उस मठवासी ने उसी समय ब्रूनो के शब्द मठ के संचालकों के कान में जा डाले।

नवयुवक मठवासी ब्रूनो का कठोर दण्ड पाना अनिवार्य हो गया और तब वह पादरी का पद छोड़कर अपनी मातृभूमि से भाग खड़ा हुआ। जर्दानो ब्रूनो सकुशल बच निकला। वह अपनी मातृभूमि से बहुत वर्षों तक अलग रहा। ब्रूनो जीवनभर कॉपरनिकस के सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिए संघर्ष करता रहा। ब्रूनो ने कॉपरनिकस के सिद्धान्तों को, एक परिश्रमी तथा भीरु शिष्य की भाँति दुहराया ही नहीं, बल्कि उन्हें ओर भी अधिक विस्तृत किया। स्वयं कॉपरनिकस की तुलना में उसने संसार को कहीं अधिक अच्छी तरह समझा। ब्रूनो ने बताया कि न केवल पृथ्वी ही, बल्कि सूर्य भी अपनी धुरी पर घूमता है। ब्रूनो की मृत्यु के बहुत वर्षों बाद ही यह तथ्य प्रमाणित हुआ।

ब्रूनो ने बताया कि बहुत-से ग्रह सूर्य के चारों ओर घूमते हैं और यह कि मनुष्य नये तथा अभी तक अनजाने कई अन्य ग्रहों का भी पता लगा सकता है। उसकी यह बात सच भी निकली। ब्रूनो की मृत्यु के लगभग दो सौ वर्ष बाद ऐसे अनजाने ग्रहों में सबसे पहले यूरेनस का, और कुछ समय बाद, नेप्चून और प्लूटो ग्रहों का तथा दूसरे सैकड़ों छोटे-छोटे ग्रहों का पता लगा। इन्हें एस्ट्रॉयड कहते हैं। इस प्रकार इस प्रतिभाशाली इतालवी की भविष्यवाणी सोलह आने सच साबित हुई। कॉपरनिकस दूर के तारों की ओर कम ध्यान देता था। परन्तु ब्रूनो ने निश्चय के साथ कहा कि हर तारा हमारे सूर्य जैसा ही विशाल सूर्य है। उसने यह

भी कहा कि ग्रह हर तारे के चारों ओर घूमते हैं। हम केवल उन्हें देख नहीं पाते हैं, क्योंकि वे हमसे बहुत ही दूर हैं। ब्रूनो ने यह भी कहा कि हर एक तारा अपने ग्रहों के साथ एक वैसा ही विश्व है, जैसा कि हमारा सौर जगत। और ब्रह्माण्ड में ऐसे विश्वों की संख्या अनन्त है। ब्रूनो ने बताया कि ब्रह्माण्ड के सभी संसारों की अपनी स्वयं की उत्पत्ति और अपना स्वयं का अन्त है और वे बराबर बदलते रहते हैं। यह विचार बहुत ही साहसपूर्ण था, क्योंकि ईसाई धर्म के अनुसार तो संसार अपरिवर्तनशील है और वह सदा वैसे ही बना रहता है जैसा कि ईश्वर ने इसे बनाया है।

पादरी ब्रूनो को अपना जानी दुश्मन मानने लगे। ब्रूनो के ये सिद्धान्त कि बसे हुए संसारों की संख्या अनन्त है, और ब्रह्माण्ड का कोई आरम्भ और कोई अन्त नहीं है, विश्व की सृष्टि के विषय में तथा पृथ्वी पर ईसा मसीह के आने के विषय में 'बाइबल' के कथनों को मलियामेट करने के लिए काफी थे। 'बाइबल' के यही कथन तो ईसाई धर्म के आधार स्तम्भ थे। पादरियों ने जर्दानो ब्रूनो के विरुद्ध जो अभियोग-पत्र तैयार किये उनमें पूरे एक सौ तीस पैराग्राफ़ थे। पादरियों ने इस महान वैज्ञानिक को ''ईश्वर को गाली देने वाला'' कहा और वे बराबर प्रयत्न करते रहे कि सभी जगहों के शासक ब्रूनो को अपने देशों से निकाल दें। किन्तु ब्रूनो जितना ही अधिक मारा-मारा फिरता रहा, उतना ही अधिक वह अपने साहसपूर्ण सिद्धान्तों का प्रचार भी करता रहा।

विदेश में रहते हुए ब्रूनो ने दर्शन, गणित और ज्योतिषशास्त्र के बीस से अधिक ग्रन्थों की रचना की। वह कहता था कि दर्शन और विज्ञान के क्षेत्र में जो भी व्यक्ति काम करना चाहता है उसे हर चीज़ पर सन्देह करने से शुरुआत करनी चाहिए। ऐसा कहा जाता था और कि ब्रूनो के पास एक जादू है जिससे वह याददाश्त बढ़ा देता है। ब्रूनो ने स्पष्ट किया कि उसका जादू सिर्फ इस बात की समझदारी में था कि दिमाग में जानकारियों को व्यवस्थित ढंग से कैसे रखा जाये। इसके बारे में ब्रूनो ने एक किताब भी लिखी। विदेश प्रवास का ज़्यादातर समय ब्रूनो ने फ्रांस, इंग्लैण्ड, जर्मनी और प्राग में बिताया। वह कहीं भी लम्बे समय तक टिककर न रह सका क्योंकि यूरोप में उस समय प्राचीन यूनानी दार्शनिक अरस्तू को ही सबसे बड़ा विद्वान समझा जाता था और अरस्तू की बात का विरोध करने वालों की विशेष इज़्ज़त नहीं की जाती थी। यही कारण था कि ब्रूनो को प्राग विश्वविद्यालय में नौकरी नहीं मिल सकी।

स्वदेश से अलग किया हुआ ब्रूनो अपने ने खिली धूप के देश इटली के लिए बराबर आतुर रहता था। उसे मार डालने के लिए उसके दुश्मनों ने ब्रूनो की इस देश प्रेम की भावना से लाभ उठाया। कुलीन तथा नवयुवक इतालवी जियोवानी मोचेनीगो ने यह ढोंग रचा कि उसे ब्रूनो की उन अनगिनत कृतियों में विशेष रुचि है जो यूरोप के भिन्न-भिन्न नगरों में छप चुकी है। उसने ब्रूनो को लिखा कि वह उसका शिष्य बनना चाहता है और यह भी कहा कि बदले में वह उसे उदारतापूर्वक पुरस्कृत करेगा।

निर्वासित ब्रूनो के लिए स्वदेश लौटना बहुत खतरनाक था, किन्तु मोचेनीगो ने कपटपूर्वक उसे आश्वासन दिलाया कि वह अपने शिक्षक को बैरियों से बचा लेगा। ब्रूनो विदेशों में भटक भटक कर ऊब चुका था। उसने कपटी मोचेनीगो पर विश्वास कर लिया। महान वैज्ञानिक यह न जानता था कि उसे धोखा देकर इटली में वापस बुलाने की यह नीच योजना कैथोलिक चर्च के 'न्यायालय' द्वारा बनायी गयी है। स्पेन और इटली में 'इन्क्विज़िशन' नामक भयानक न्यायालय था। यह धर्म का विरोध करने वालों पर अत्याचार करता था। 'इनक्विजितरों' ने, अर्थात उपरोक्त संस्था के न्यायाधीशों ने, इस संस्था के अस्तित्व काल में लाखों बेगुनाहों की जान ली थी। ब्रूनो भी इसका एक ऐसा ही बेगुनाह शिकार हुआ।

जर्दानो ब्रूनो इटली के वेनिस नगर में पहुँचा और मोचेनीगो को पढ़ाने लगा। मोचेनीगो ने वैज्ञानिक से यह प्रतिज्ञा करवा ली थी कि जाने का विचार बना लेने पर वह मोचेनीगो से विदा अवश्य लेगा। यह भी एक चाल थी। मोचेनीगो को यह भय था कि यदि कहीं ब्रूनो को 'इन्क्विज़िशन' की योजना का पता चल गया तो फिर वह अपनी युवावस्था की भाँति, अवश्य ही चुपके से भाग खड़ा होगा। परन्तु यदि ज्योतिषशास्त्री उससे विदा लेने आया तो फिर उसे रोकना मुश्किल न होगा। कुछ महीनों की शिक्षा के बाद मोचेनीगो ने कहा कि ब्रूनो उसे ठीक ढंग से नहीं पढ़ाता है और यह कि वह उससे अपने भेद छिपाता है।

इस आरोप के उत्तर में ब्रूनो ने वेनिस - छोड़ देने का निश्चय किया, और मोचेनीगो ने इसकी सूचना 'इनक्विज़िशन' को दे दी। 23 मई सन् 1592 को इस विख्यात वैज्ञानिक को जेल में डाल दिया गया। उसने जेल में यातनापूर्ण आठ वर्ष

बिताये। ब्रूनो को उसके विचारों के लिए ज़िन्दा जला दिया गया। वह कोठरी, जिसमें ब्रूनो को रखा गया था, जेल की सीसे की छत के नीचे थी। ऐसी छत के नीचे गर्मियों में असह्य गर्मी और उमस तथा जाड़ों में नमी और ठण्ड रहती। ऐसी कोठरी में बन्दी का जीवन भयानक तथा यातनापूर्ण था यह तो जैसे तड़पा-तड़पाकर मारने वाली बात थी।

हत्यारों ने जर्दानी ब्रूनो को आठ वर्षों तक जेल में क्यों बन्द रखा? इसलिए कि उन्हें आशा थी कि वे इस ज्योतिषशास्त्री को अपने सिद्धान्त त्याग देने के लिए बाध्य कर सकेंगे। यदि ऐसा हो जाता, तो यह उन सबके लिए एक बड़ी विजय होती। पूरा यूरोप इस विख्यात वैज्ञानिक को जानता था और उसका आदर करता था। यदि ब्रूनो यह घोषणा कर देता कि वह गलती पर था और पादरी लोग ठीक थे, तो बहुत से लोग फिर से विश्व की सृष्टि के विषय में धर्म के कथनों पर विश्वास करने लगते। किन्तु जर्दानो ब्रूनो चट्टान की तरह दृढ़ और साहसी व्यक्ति था। पादरी न तो धमकियों और न ही यंत्रणाओं द्वारा ब्रूनो को विचलित कर पाये। वह दृढ़ता से अपने विचारों की सत्यता को सिद्ध करता रहा।

अन्त में हत्यारों ने उसे प्राणदण्ड देने का निर्णय सुनाया। 'न्यायालय' का निर्णय सुनकर, गियोर्दानो ब्रूनो ने 'इनक्विज़ितरों' से शान्तिपूर्वक कहा-"आप दण्ड देने वाले हैं और मैं अपराधी हूँ, मगर अजीब बात है कि कृपा सिन्धु भगवान के नाम पर अपना फैसला सुनाते हुए आपका हृदय मुझसे कहीं अधिक डर रहा है।" 'इनक्विज़िशन' की यह प्रथा थी कि वह अपना निर्णय इन पाखण्ड-भरे शब्दों में सुनाता था - "पवित्र धर्म इस अपराधी को बिना खून बहाये मृत्युदण्ड देने की प्रार्थना करता है।" किन्तु वास्तव में इसका अर्थ होता था भयानक मृत्युदण्ड यानी जीवित ही जला देना।

17 फ़रवरी, सन् 1600 को गियोर्दानो ब्रूनो को रोम में प्राणदण्ड दिया गया। उस मैदान में, जहाँ प्राणदण्ड दिया जाने वाला था, तथा उन सड़कों के किनारे, जहाँ से यह जुलूस धूमधाम से गुज़र रहा था, हजारों रोम-निवासी इकट्ठे हुए। इस तमाशबीन भीड़ के लिए यह सब कुछ एक खुशी के त्योहार जैसा था। केवल कुछ ही ऐसे लोग थे जिनका हृदय, इस साहसी वैज्ञानिक के भयानक-प्राणदण्ड की कल्पना करके काँप उठा था। प्राणदण्ड के पहले, जर्दानो ब्रूनो से एक बार फिर अपने सिद्धान्तों को त्यागने के लिए कहा गया। इसके लिए उसे जीवनदान का वचन भी दिया गया। महान ज्योतिषशास्त्री ने की उपेक्षा के साथ इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया और एक वीर की भाँति चिता में जा बैठा। जब लपटों ने उसे चारों ओर से घेर लिया उस समय भी ब्रूनो के मुँह से एक आह तक न निकली।

वैज्ञानिक तो जल गया, किन्तु पादरी लोग विज्ञान की प्रगति तो फिर भी न रोक सके। एक वीर शहीद का स्थान, दूसरे अनेक शहीद ले लेते थे। रोम के उसी मैदान में जहाँ यह महान वैज्ञानिक शहीद हुआ था सन् 1889 में उसका एक स्मारक स्थापित किया गया।

(अनुराग ट्रस्ट की प्रकाशित पुस्तक 'धरती और आकाश' पर आधारित)

यदि प्रजा किसी
तरह बस में ना आए तो
राजा को धर्म का सहारा
लेना पड़ता है।

मैकियावेली

पूजा-स्थल की ओर ताकता देश

जिस देश के भीतर देस
भूख, गरीबी, बीमारी से मरता है
और देश अपने बचे रहने के लिए
किसी पूजा-स्थल की ओर ताकता है
तब असल में वह अपनी असाध्य बीमारी के
उस चरम पर होता है
जहाँ खुद को सबसे असहाय पाता है

ऐसा असहाय देश
अपनी बीमारी का ईलाज
अगर किसी पूजा-स्थल में ढूँढ़ता
है तब उसे अपने ही हाथों
मरने से कौन बचा सकता है?

- जैकिंटा केरकेट्टा

दैवी प्रकोप से दो-दो हाथ

– डॉ. नरेंद्र दाभोलकर

समिति की 'सत्यशोधक' यात्रा कुड़ाल (महाराष्ट्र) पहुँची। दोपहर में नगर वाचनालय में मेरा 'वाद-संवाद' का कार्यक्रम था। उस समय विकास गवंडे ने चर्चा रोक दी। उसका कहना था कि 'चमत्कारों के खिलाफ प्रचार का आपका नियम डुंगेश्वर के जाग्रत् देवस्थान पर लागू नहीं होता। आपमें यदि हिम्मत है तो वहाँ की रिवाज तोड़कर दिखाएँ। डुंगेश्वर के रोष की महत्ता ऐसी है कि आपको ऐसी चोट लगेगी जो हमेशा याद रहेगी। इस मामले में आपके कार्य-कारण भाव की कौड़ी की भी कीमत नहीं है। यदि हिम्मत है, तो चुनौती को स्वीकार करें। आपको दैवी सामर्थय तथा प्रकोप की प्रतीति हुए बिना नहीं रहेगी।'

विकास गवंडे द्वारा दी गई चुनौती मैंने कबूल की। शाम की बड़ी सभा में ही मैंने इसकी घोषणा भी की।

किसी भी चुनौती प्रक्रिया को पूरा करते समय समिति दोनों पक्षों को मान्य लिखित और सार्वजनिक सम्मति लेती है। चुनौती प्रक्रिया पूरी करने के लिए बनाया गया मसौदा विकास गवंडे को दिया गया, जो इस प्रकार था 'ऐसी चुनौती-प्रक्रिया को पूरा करने के लिए संबंधित देवस्थान के विश्वस्त की सम्मति लिखित रूप में लेना अनिवार्य है। विश्वस्त मंडल मौजूद न होने पर जिस ग्राम पंचायत की सीमा में संबंधित देवस्थान आता है उस ग्रामपंचायत की स्वीकृति का प्रस्ताव पेश किया जाए। उस देवता से संबंधित व्यवस्था और देवता की किसी भी प्रकार की निंदा करने का आरोप नहीं लगाया जाएगा और जनता भी ऐसा नहीं मानेगी। यह बात स्पष्ट रूप से स्वीकृति पत्र में रहेगी। बाद में किसी भी प्रकार की शिकायत के लिए मौका नहीं रहेगा।' साथ ही इस परीक्षण की तिथि 16 फरवरी, 1995 तय की गई।

10 फरवरी, 1995 तक स्वीकृति प्रस्तुत करने तथा प्रक्रिया पूरी करने पर दोनों पक्षों में सहमति बनी। स्वीकृत प्रस्ताव इस प्रकार था :

(अ) डुंगेश्वर, कोयरे

1. चुनौती थी कि मौजूदा जगह से महाराष्ट्र के 10 कार्यकर्ता एक-एक घंटी उठाकर अपने घर ले जाएँगे। इन लोगों को उससे भयानक पीड़ा होगी। तीन महीनों के भीतर उन्हें घंटी वापस करने के लिए विवश होना पड़ेगा। परंतु यदि किसी भी कार्यकर्ता को कोई तकलीफ नहीं हुई तो वह ईश्वर के पास घंटी लेकर वापस नहीं जाएगा। यदि ऐसा हुआ तो यह चुनौती-प्रक्रिया की सफलता मानी जाएगी।

2. संबंधित जगह पर जहाँ कार्यकर्ता रात भर सोएगा, उस जगह आवश्यक प्रकाश व्यवस्था समिति द्वारा की जाएगी। साथ ही सोने की जगह से 20 फीट की दूरी पर कार्यकर्ता और पत्रकारों के साथ पुलिस रहेगी ताकि इस मामले में कोई बाहरी दखलअंदाजी संभव न हो।

(ब) देवभौम, आन्दुर्ले

1. समिति के कुल पाँच कार्यकर्ता संबंधित ढोल को दस मिनट तक बजाएँगे। इसमें से कोई भी हो रही अपनी पीड़ा के लिए ईश्वर की शरण में नहीं जाएगा।

चुनौती प्रक्रिया पूरी करने के लिए उपर्युक्त ढाँचा बनाया गया। प्रत्यक्ष परिस्थिति के अनुरूप तथा आवश्यकता के अनुसार इस संबंध में अधिक ब्यौरे दोनों ओर की चर्चा से निश्चित किए जाएँगे। चुनौती की सारी प्रक्रियाएँ पत्रकार, पुलिस की मौजूदगी में और नियंत्रित परिस्थिति में पूरी की जाएँगी।

इस चुनौती प्रक्रिया के लिए 5 लाख रु. का पुरस्कार घोषित करने की इच्छा रहने पर हर चुनौती के लिए 5,000/- अग्रिम पेशगी रखनी होगी। चुनौती सफलतापूर्वक पूरी होने पर पाँच लाख रु. के साथ अग्रिम पेशगी भी वापस की जाएगी। अग्रिम पेशगी न जमा करने पर चुनौती प्रक्रिया का संबंध पुरस्कार के रुपयों से नहीं रहेगा।'

इसके बाद सिंधुदुर्ग जिले में लोगों के बीच चर्चा शुरू

हो गई तथा समाचार-पत्रों के पन्नों में वैचारिक घमासान शुरू हुआ।

सिंधुदुर्ग जिले के वेंगुर्ला तहसील में कोपरा, रामवाडी, किला निवती जैसे गाँवों की सीमा पर अरब समुद्र से लगा, कछुए की पीठ के आकार का, हरे पेड़-पौधों से ढँका हुआ एक छोटा-सा पहाड़ खड़ा है। इस पहाड़ के पश्चिम में तहलटी पर डुंगेश्वर देवस्थान बसा हुआ है। वहाँ की घास-फूस की छोटी पगडंडी पर से, नाक-मुँह पर टकराने वाली लताओं और प्राचीन वृक्षों की नीची झुकी हुई टहनियों से बचते, समुद्र की ओर से चलते हुए आगे का बड़ा सा नाला पार कर हम देवस्थान की ओर जा सकते हैं। यह सच है कि यहाँ जाने पर थोड़ा मोहभंग हो ही जाता है, क्योंकि वहाँ पर मन की इच्छानुसार न ही डुंगेश्वर की डौलदार गुंबद है और न ही नक्शेदार मूर्ति। वहाँ है जमीन में गड़ा हुआ डेढ़ फीट ऊँचा, आधा फुट चौड़ा खड़ा काला पत्थर। वहाँ अभिषेक करने के लिए पाषाण पर ताँबे का एक अभिषेक पात्र लटकाया हुआ है। पाषाण के पीछे गेरुए रंग के असंख्य निशान (झंडे) जमीन में गाड़े गए हैं। पाषाण के रमनेवाली खुली जगह पर मौजूद पेड़ों पर पीतल की घंटियों की कई मालाएँ टँगी गई हैं। पेड़ों के हिलने पर जब ये सैकड़ों मालाएँ हिलने लगती हैं तब घंटाओं की खनखनाहट वहाँ के वातावरण को गंभीर बना देती है। इस देवस्थान के बारे में कई बातें आसपास के गाँवों में फैली हैं। डुंगेश्वर की राई के नाम से प्रचलित इस परिसर में किसी पेड़ का हरा पत्ता तोड़ना भी पाप समझा जाता है। गलती से भी इस इलाके से हरी पत्ती या छोटी टहनी तोड़ी गई तो उस व्यक्ति को किसी न किसी प्रकार की दैवी बाधा का सामना करना पड़ता है। इसी कारण इलाके में रहने वाला कोई भी व्यक्ति डुंगेश्वर की राई से पत्ता तक नहीं तोड़ता। गाँव वाले बताते हैं कि यहाँ पर दिखाई देने वाली घने वृक्षों की कतारें इस अलिखित नियम के कारण ही प्राचीन काल से सुरक्षित हैं। वे बताते हैं कि डुंगेश्वर की राई से सिर्फ पत्ते ही नहीं बल्कि किसी भी वस्तु के उठाने से दैवी प्रकोप होता है। वहाँ पर लटकती घंटाओं को कोई उठा ले गया तो उसे तीन महीनों के अंदर कोई न कोई बाधा अवश्य होती है।

डुंगेश्वर देवस्थान जिस पहाड़ पर है, उस पहाड़ी से समुद्र बिल्कुल सटा हुआ है। वह चारों दिशाओं से सफेद बहू के किनारों से घिरा है। क्षितिज तक फैला हुआ नीला समुद्र, उसमें एक छोटे टाप पर द्वीपगृह, किनारे पार अधूरी स्थिति में खड़ा शिवाकालीन किला, सफेद बालू के चलते डुंगेश्वर स्थल को प्राकृतिक सौंदर्य के साथ एक गूढ़ता भी प्राप्त हुई थी। इसी कारण इस चुनौती-प्रक्रिया की ओर सिंधु दुर्ग की जनता आश्चर्य की दृष्टि से देख रही थी।

11 अप्रैल को महाराष्ट्र और सिंधुदुर्ग जिला समिति के 13 कार्यकर्ता कुडाल से डुंगेश्वर के लिए रवाना हुए। रास्ते के पाट गाँव में चुनौती देने वाले विकास गवंडे से भेंट हुई। उन्होंने आग्रह किया कि डुंगेश्वर कोचरा और रामवाडी गाँव का देवस्थान है, इसलिए कार्यकर्ता उस रास्ते से जाएँ। उसकी बखेड़ा खड़ी करने वाली माँग का मतलब आंदोलन में कई सालों तक काम करने वाले हम कार्यकर्ताओं को तुरंत समझ में आ गया। उस ओर से देवस्थान के लिए जाते समय प्रक्ष्युब्ध गाँव वाले निश्चित ही हमें रोकते। बात चर्चा से हाथापाईपर आ जाती और ऐसे तनाव में चुनौती-प्रक्रिया पूरी करना असंभव हो जाता और इससे विकास गवंडे को अपने आप सुविधा मिल जाती। इस कारण देवस्थान की ओर जाने के लिए हमने किले निवती का रास्ता ही बेहतर समझा।

दोपहर 12:30 बजे हम डुंगेवर देवस्थान पहुँचे। अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति किसी न किसी कारण से ऐन वक्त पर पीछे हटेगी, ऐसा लोगों को न सिर्फ लग रहा था बल्कि उन्हें पूरा भरोसा था। इसी कारण प्रत्यक्ष रूप से डुंगेश्वर के सामने चार गाँववाले, पत्रकार और पुलिस भी मौजूद थी। पत्रकारों से वार्तालाप करते समय मैंने कहा, ''दैवी प्रकोप कार्य-कारण संबंध भाव से विसंगत होता है या नहीं, हमें इसकी जाँच करनी है। ऐसा कुछ होता नहीं है, इस पर हमारा पूरा भरोसा है। फिर भी कोई व्यक्ति यदि घंटी उठाकर अपने पास ले जाता है और गलती से स्कूटर फिसलकर उसे थोड़ी-सी चोट आई, तो इसे भी दैवी प्रकोप ही माना जाएगा। इसके लिए जान बूझकर हम 13 कार्यकर्ता यहाँ से घंटियाँ ले जा रहे हैं। आने वाले तीन महीनों में हम पर किसी भी प्रकार का प्रकोप होने पर भी हमारी कोई शिकायत नहीं रहेगी, लेकिन यह बात 13 लोगों में से अधिकतर लोगों के साथ घटित होनी चाहिए। एक-दो लोगों के साथ घटित छोटा सा हादसा, दैवी प्रकोप नहीं माना जाएगा।''

इसके बाद आस-पास के पेड़ों से हजारों की संख्या में लटकती हुई घंटियों में से 22 घंटियाँ कार्यकर्ताओं ने उतार लीं। वे उन घंटाओं को लेकर अपने घर चले गए। बिना किसी डर के निर्भय होकर उन्होंने अपने घर में उन्हें लटकाया। उनके परिवार वालों ने भी इनका मन ही मन साथ दिया। कुडाल के प्रा. श्रीकांत सावंत एक सुंदर सी घंटी अपने साथ घर ले गए थे। कक्षा दूसरी में रहने वाली उनकी बेटी को वह बहुत अच्छी लगी। वह उनसे पूछ रही थी, ''बाबा, ऐसी तीन-चार घंटियाँ ओर क्यों नहीं लाए ?''

वेंगुर्ला तहसील के आन्दुर्ले का देवभौम परिसर, एक बड़ा नाला, उसके दोनों ओर बड़े-बड़े पेड़, नाले की ओर थोड़ी ऊँचाई पर अलग-अलग रंगों की मुलायम फर्श बिछाई हुई है। उस पर तिलक लगाए हुए चार पत्थर हैं। ऊपर आसमान की छत है। खुले में रहने वाले इस देवता की ओर दस-दस पैसों का ढेर लगा हुआ था। अगरबत्ती के गुच्छ ही गुच्छ चारों ओर फैले हुए थे। इस देवता को कौल (देवता की मूर्ति पर फूल आदि लगाकर शकुन पूछना, ईश्वरीय आज्ञा प्राप्त करना) लगाया जाता है। हर दिन की आमदनी हजार रुपए के करीब होती है। बताया जाता है कि इस देवता को आवाज सहन नहीं होती। इसी कारण यहाँ किसी के द्वारा असभ्यता से आवाज करने पर ईश्वर उसे दंडित करता है।

ढोल बजाने पर ईश्वर द्वारा दंडित करने की बात से हमें कोई आपत्ति नहीं थी। लेकिन आस-पास के पेड़ों पर मधुमक्खियों के छत्ते होंगे, (जिनकी डंक भयानक जहररीली होती है) तो मात्र उनकी नापसंदी को झेलना बड़ा कठिन होने की संभावना थी। असल में इसकी जानकारी हमें पहले ही कर लेनी चाहिए थी। लेकिन अब कोई उपाय भी न था। यदि ऐसा कुछ हुआ भी तो उसका कोई उपाय ढूँढकर चुनौती-प्रक्रिया को पूरा करने का हमने निर्णय किया था। लेकिन ऐसा कुछ न होने के कारण हमने चैन की सांस ली।

देवस्थान की ओर जाते समय गाँव के लोगों की रास्ते के दोनों ओर भीड़ थी। उनमें बेहद जिज्ञासा थी। धार्मिक भावनाओं का प्रश्न होने के कारण उचित सुरक्षा व्यवस्था मुहैया करने की विनती वेंगुर्ला पुलिस थाने को की गई थी। वहाँ से कोई नहीं आया। लेकिन म्हापण आउट पोस्ट के दो पुलिस वाले जरूर आए थे, जो कुछ विपरीत होने पर सरकारी गवाह बन सकते थे। शाम के 6 बनने पर करीबन आधे घंटे तक हम जोर-जोर से ढोल पीट रहे थे। महिला कार्यकर्ताओं ने भी बड़े उत्साह से उसमें हिस्सा लिया। स्थानीय हाई स्कूल में पढ़ने वाले कुछ उत्साही बच्चे आगे आए। उन्होंने भी अपनी वाद्यकला को आजमाया। विशेष बात यह थी कि विकास गवंडे के गाँव के बच्चे भी इसमें शामिल थे।

12 अप्रैल को शाम 6 बजे हम फिर एक बार डुंगेश्वर परिसर में पहुँचे। 23 कार्यकर्ताओं के साथ पत्रकार भी थे। बैटरी के सिवाय ओर कोई सुविधा न थी। बंदूक तो दूर, लाठी तक नहीं थी। वहाँ जाते समय हमने पूरा विचार किया था। घंटियाँ उठाते समय वातावरण में बड़ा तनाव था। छल-कपट की संभावना 'ईश्वर' से नहीं थी, लेकिन मनुष्य के बारे में बताना बड़ा कठिन था। इसी कारण देवस्थान की ओर आने वाले दोनों रास्तों पर निगरानी रखना तय हुआ। देवस्थान के नजदीक खड़ी चट्टान पर कोई चढ़ जाता तो वहाँ से पत्थर खिसक कर नीचे आने का खतरा था, इसलिए उस कठिन चट्टान पर हमारे तीन लोग पहले ही डेरा जमाए थे। एक-दूसरे को इशारा करने वाली सीटियों की आवाज से निश्चित कर, रात के नौ बजे डुंगेश्वर के सामने गप्प हाँकते बैठ गए। हम किस प्रकार के संकट को आमंत्रण दे रहे हैं, इसकी गंभीरता चारों दिशाओं में फैले घने अँधेरे को देखकर आ रही थी। आस-पास घना जंगल, नाले में बड़े-बड़े पत्थर, दिन गर्मी के थे। इन दिनों कोंकण में साँप ज्यादा रहते हैं। अनजाने में किसी को काट लिया, तो क्या करेंगे? बड़ी चिंता थी। आस-पास के जंगल से एकाध बड़ा पत्थर धँसकर नीचे आया और सोए हुए कार्यकर्ता को लगा तो, ईश्वर द्वारा सिखाया गया सबक माने जाने का अंदेशा था। फिर भी कोई डरा नहीं था लेकिन गंभीरता का अहसास जरूर सभी को था।

पाटगाँव के गुडाजी गुरुजी रातभर 'ईश्वर' के सामने सोने वाले थे और वहाँ से 20 फीट की दूरी पर हम रुकने वाले थे। घड़ी ने रात के 10 बजे का संकेत दिया और एकाएक तेजी से चलते पैरों से आठ-दस लोग चुनौती स्थल पर दाखिल हुए। ऊँची आवाज, भाषा में घमंड। उनका कहना था कि चुनौती ॲड. परुलेकर ने दी है, इसी कारण वे ही यहाँ सोएँगे और आप 20 फीट पर नहीं बल्कि 200 फीट पर जाकर रुकें। असल में इस संबंध में सारी बातें पहले ही विचार-विमर्श से

तय हुई थीं। उसके कागज़ात भी हमारे पास थे। हमने उन्हें दिखाए भी, लेकिन वे झगड़ा करने के इरादे से ही आए थे। चुनौती प्रक्रिया को पूरी करने के लिए अंत में हमने उनकी इस बात को भी स्वीकार लिया। देवदत्त परुलेकर देवस्थान के सामने बिलकुल अकेले, केवल मोमबत्ती के उजाले में सोए। बाकी कार्यकर्ताओं ने दूसरी तरफ नाले वे सूखे पात्र में पनाह ली। घने पेड़ों की जाल में बसा डुंगेश्वर देवस्थान और ॲड. परुलेकर–इनमें से कोई भी वहाँ से दिखाई नहीं देता था।

रात आगे बढ़ रही थी। ढाई बजे चुके थे। कार्यकर्ता सावधान थे। वे आराम कर रहे थे कि अचानक एक बार फिर जोर–जोर से पैर पटकते हुए दस–पंद्रह लोग आ धमके। वे झगड़े और आवश्यकता पड़ने पर मार–काट करने की तैयारी के साथ आए थे। उनका कहना था, ''आप हमारे 'भगवान' का मजाक उड़ा रहे हैं, जिसे हम बर्दाश्त नहीं करेंगे। तुरंत इसे बंद कर दो, और यदि आपने अक्लमंदी नहीं दिखाई तो आपको यहाँ से कैसे निकालना है, यह हम अच्छी तरह से जानते हैं।''

मैंने बड़ी शांति से उनसे कहा, ''असल में इस बात के लिए आपको विकास गवंडे को जिम्मेदार ठहराना चाहिए था। चुनौती उसने दी है। हम तो सभी की अनुमति लेकर, पुलिस को सूचित कर यह कर रहे हैं। पिछले माह भर ही नहीं बल्कि आज शाम तक आप ने मना नहीं किया, तो फिर अभी इतने उतावले क्यों बन रहे हैं? हम सत्याग्रही हैं। आप हमें जरूर मारें, हम किसी भी प्रकार से प्रतिकार नहीं करेंगे, लेकिन सुबह 6 बजे तक यहाँ से नहीं हिलेंगे।'' हमारी दृढ़तापूर्ण भाषा से उनकी आवाज में थोड़ी नरमी आई।

मैंने जी–जान से उन्हें समिति की भूमिका को समझाने का प्रयास किया। उन्हें बताया, ''हमारी समिति लोगों की देव–भावना का पूरा आदर करती है। हमारे कार्य से आपकी भावनाओं को ठेस पहुँची हो तो मैं आपसे क्षमा माँगता हूँ। एक तो हमें चुनौती दी गई थी। इसलिए यह चुनौती प्रक्रिया पूरी की जा रही है और दूसरी बात यह कि सामने सोए हुए आदमी को बिना वजह सबक सिखाने वाले 'ईश्वर' का रूप हमें मंजूर नहीं है। संतों को भी यह मंजूर नहीं था। विज्ञान के नियमों को झूठलाकर किसी भी प्रकार का चमत्कार नहीं हो सकता। इसे हम साबित कर सकते हैं। ईश्वर के होने या न होने से इसका कोई संबंध नहीं।''

संतुष्ट होकर गाँव वाले चले गए, फिर भी मुँह अँधेरे तक लोगों के अलग–अलग झुंड यह देखने के लिए आने लगे कि परुलेकर सचमुच सोए हैं या नहीं। किसी भी अनुचित घटना के बिना 13 तारीख की सुबह 6 बजे तक चुनौती–प्रक्रिया समाप्त हुई।

अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति इतनी निडरता से और सफलतापूर्वक चुनौती–प्रक्रिया को पूरी करेगी, ऐसा बहुत से लोगों ने सोचा भी न था। परंतु सच्चाई को नकारा नहीं जा सकता। विकास गवंडे को अपना कुछ न कुछ बचाव तो करना ही था। उसने जाहिर किया कि, मैंने चुनौती देते समय डुंगेश्वर देवस्थान से कौल लिया और वह मेरे पक्ष में था। इसी कारण मैं साफ–साफ कहता हूँ कि जो घंटा लेकर गए हैं और जो उस स्थान पर सोए हैं उन्हें निश्चित तौर पर आज नहीं तो कल दंड मिलेगा ही। इलाके के लोगों में भी इसी प्रकार की चर्चा शुरू हुई। 'अंनिस' वालों ने घमंड से चुनौती–प्रक्रिया पूरी की। डुंगेश्वर में जो सामर्थ्य है, वह उन्हें सजा दिए बगैर नहीं रहेगा। कुछ लोगों की राय थी कि यह झमेला विकास गवंडे ने ही खड़ा किया है। डुंगेश्वर सबसे पहले उसे ही आघात पहुँचाएगा। तीन महीनों में ही फैसला होगा, इस पर इलाके के लोगों का भरोसा था और यही चर्चा का विषय बना हुआ था।

इस बीच 'धर्मरक्षक समिति' ने मामले को गंभीर मोड़ दे दिया। इस सभा ने 'अंनिस' पर पवित्रता को भंग करने का आरोप लगाया। डुंगेश्वर और भौम देवस्थान की शुद्धि की घोषणाएँ की गई। उस सभा में शिवसेना के सिंधुदुर्ग जिला प्रमुख ॲड, डी.डी. देसाई ने 'अंनिस' पर आरोप लगाया कि उसने डुंगेश्वर और भौम देवस्थान के बारे में आतंकी तथा अविवेकी भूमिका अपनाकर श्रद्धालु जनता की श्रद्धा को ठेस पहुँचाया है। साथ ही 'अंनिस' के कार्यकर्ताओं का मुंडन कर, उनके मुँह पर कालिख पोत कर, उन्हें गधे पर बिठाकर जुलूस निकालने की धमकी तथा चेतावनी भी दी। सभा में उपस्थित 300 से 400 लोगों ने अंनिस के कार्यकर्ताओं पर कानूनी कार्रवाई की माँग करने वाला प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किया। इसी के साथ दोनों देवस्थानों का शुद्धीकरण और धार्मिक उत्सव बड़े पैमाने पर करने की घोषणा की गई। आरोप लगाया गया कि विज्ञाननिष्ठा की डींग हाँककर शीघ्रता से सस्ती प्रसिद्धि पाने हेतु कुछ लोग यह कार्य करते हैं। इस

सभी के पीछे की बेचैनी का असली कारण था, 'अंनिस' के दल का कार्यकर्ता शब्बीर शेख मुसलमान था। कहा गया, पवित्रता को नापाक बनाने का काम किसने किया, इस पर भी विचार किया जायेगा। चुनौती किसने दी, यह बात दोयम है, ऐसी घोषणा कर पवित्रता को भंग करनेवाले अंनिस के कार्यकर्ताओं को इसके बाद महाराष्ट्र में घूमने नहीं दिया जाएगा, जैसी चेतावनी दी गई।

असल में माहौल गरमाता देख कुडाल में अदालती कामकाज के सिलसिले में वहाँ के वकीलों के शिष्टमंडल ने शिवसेना के तत्काली मंत्री नारायण राणे से भेंट की। वहाँ डुंगेश्वर का जिक्र किया। राणे ने एकाएक छक्का लगाकर प्रश्न को आसान बना दिया। उन्होंने डाँटकर कहा कि, म्हापण में प्रर्मरक्षक समिति की सभा में हुए भाषण से हम सहमत नहीं हैं। मैं हिंदू-मुसलमान भेद नहीं मानता। मेरे कई कार्यकर्ता मुसलमान हैं। महाराष्ट्र में अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के कार्य को हमारा पूरा समर्थन है तथा सरकार की भी यही नीति है। स्वजनों द्वारा की गई भत्सर्ना से धमकाने वालों के हौसले अपने आप ठंडे पड़ गए।

हमारे 13 कार्यकर्ताओं के मन में यह डर बना रहता कि यदि गलती से भी छोटा-मोटा हादसा हुआ तो इसके पीछे दैवी कोप को ही जिम्मेदार माना जाएगा। लेकिन तीन महीने बीत जाने पर भी हमारे कार्यकर्ताओं को कुछ भी न हुआ। असल में हमने चुनौती प्रक्रिया सही-सलामत पूरी की।

लेकिन उस दौरान घनघोर वर्षा हो रही थी, घंटियाँ वापस जाकर रखना बिलकुल असंभव था इसलिए हमने तीन महीनों की अवधि को दुगुना कर लिया। छह महीने बाद मैं कुडाल गया। सभी 22 घंटियाँ और कार्यकर्ताओं को लेकर डुंगेश्वर पहुँचा। वहाँ पत्रकारों से वार्तालाप करते हुए कहा कि इन छह महीनों में घंटियाँ उठाने वाले तथा ढोल पीटने वाले कार्यकर्ता तथा उनके परिवारजनों को किसी भी प्रकार की पीड़ा नहीं हुई। कोई भी तटस्थ व्यक्ति इसकी जाँच कर सकता है। समिति लोगों की देवभावना का सम्मान करती है, लेकिन दैवी प्रकोप की कल्पना कार्य-कारण भाव संबंध को नकारने वाली है। यह बात लोगों के सामने स्पष्ट रूप से आए, इसी कारण यह चुनौती अपनाई गई थी। उसकी पूर्ति हो चुकी है, इस कारण समिति के कार्यकर्ता अब घंटियों को पहलेवाले स्थल पर रख रहे हैं।

इस तरह चुनौती को स्वीकार कर समिति ने देव और धर्म संबंधी लोकमानस की ओर आदरपूर्वक मगर वैज्ञानिक दृष्टि से देखने की बात लोगों तक पहुँचाई।

(स्त्रोत : पुस्तक '' अंधविश्वास : उन्मूलन : आचार'' दूसरा भाग, डा. नरेंद्र दाभोलकर, संपादक : डॉ. सुनील कुमार लवटे, अनुवादक : प्रकाश कांबले)

जनवरी-फरवरी की कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

3 जनवरी (1831) स्त्रियों की शिक्षा और अधिकारों के लिए जीवनभर संघर्षरत रहीं भारत की प्रथम स्त्री शिक्षिका सावित्रीबाई फुले का जन्म दिवस

5 फ़रवरी (1922) **चौरी-चौरा काण्ड,** अंग्रेज़ों के जुल्म के खिलाफ जनता की बगावत की यादगार तारीख।

21 फ़रवरी : महाकवि 'निराला' की जयन्ती।

10 फ़रवरी (1898) महान जर्मन कवि व नाटककार बर्टोल्ट ब्रेष्ट का जन्मदिवस

12 फ़रवरी (1809) महान वैज्ञानिक चार्ल्स डार्विन का जन्म दिवस

18 फ़रवरी (1946) भारतीय नौसेना के बहादुर नौजवानों ने अंग्रेज़ों के खिलाफ विद्रोह किया था जिसे हम नौसेना विद्रोह के नाम से जानते हैं।

19 फ़रवरी (1473) महान वैज्ञानिक कॉपर्निकस का जन्मदिवस।

27 फ़रवरी (1931) महान क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आज़ाद का शहादत दिवस।

8 मार्च : अर्न्तराष्ट्रीय महिला दिवस

23 मार्च (1931) : शहीदे आज़म भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव ने आजादी के लिए ही हँसते-हँसते फाँसी का फन्दा चूमा था। इसे दिन पंजाब के क्रांतिकारी कवि अवतार 'पाश' खालिस्तानी आतंकवादियों के हाथों मारे गये थे।

25 मार्च (1931) महान राष्ट्रवादी पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी आज ही के दिन साम्प्रदायिक दंगों को रोकने की कोशिश में शहीद हो गये थे।

28 मार्च (1868) विश्व प्रसिद्ध महान लेखक मक्सिम गोर्की का जन्म दिवस।

मार्क्स की 'पूँजी' पर आधारित पाठ

बच्चों के लिए अर्थशास्त्र

– रंगनायकम्मा

मूल्य सारा श्रम का ही!
किसी पदार्थ का अपना कोई मूल्य नहीं!

क्या हम यह कह सकते हैं कि कोई वस्तु सिर्फ श्रम से ही बनी है? ऐसा कहना गलत होगा। क्योंकि किसी वस्तु को बनाने के लिए सिर्फ 'श्रम' ही काफी नहीं होता। कोई 'कुदरती पदार्थ' भी तो होना चाहिए न? मतलब यह कि किसी वस्तु को बनाने के लिए दोनों, (1) कुदरती पदार्थ और (2) श्रम जरूरी होते हैं। कुदरती पदार्थ + श्रम = वस्तु। सबसे पहले वस्तु के बारे में हमें यह समझ लेना होगा।

अब दूसरी बात : वस्तु को बनाने के लिए दो अलग-अलग तत्व जरूरी हों, तो भी उस वस्तु का मूल्य इन दोनों का नहीं, सिर्फ एक का ही मूल्य होता है। 'श्रम' का ही। इस बात को अगर ठीक से समझा जाये, तो यह 'अर्थशास्त्र' का सार ग्रहण करने जैसा हो जाता है। अगर इस बात को समझ लिया जाये, तो बाद की सारी बातें आसानी से समझ में आ जायेंगी।

हम कमीज को लें। मान लें कि कमीज बनाने के लिए 3 घण्टे का श्रम लगता हो। इस कमीज का पूरा-पूरा मूल्य इसी श्रम का मूल्य होता है।

कमीज में 'कपड़ा' भी एक पदार्थ है न? इसके बारे में क्या? क्या इसका कोई 'मूल्य' नहीं है? कपड़े का मूल्य तो है। लेकिन अगर हम इस बात का विश्लेषण करें कि कपड़े को उसका मूल्य कैसे मिला, तो पायेंगे कि इसका भी मूल्य श्रम से ही पैदा हुआ होता है। कपड़ा जिस सूत का बना होगा उसका भी मूल्य होता है। अगर हम इसका भी विश्लेषण करें कि इस सूत को उसका मूल्य कैसे मिला, तो पायेंगे कि यह सूत भी श्रम की ही उपज है। सूत जिस कपास का बना होगा उसका भी मूल्य होगा। कपास भी श्रम की ही पैदाइश है। अगर हम वहाँ पहुँचेंगे जहाँ से कपास उपजा हो, तो पायेंगे कि यहाँ एक कुदरती पदार्थ है 'धरती'। धरती का कोई मूल्य नहीं होता। मूल्यहीन मिट्टी पर जब कोई श्रम किया जाने लगता है, तभी कपास के पैदा होने की शरुआत हो जाती है।

इस कपास में अगर कोई मूल्य हो, तो यह धरती के कारण नहीं, बल्कि कपास उगाने के लिए किये गये तरह-तरह के नये श्रम और उत्पादन के साधनों से भी जुड़े पिछले श्रम के कारण हासिल हुआ होता है। मूल्य इस तरह-तरह के श्रम का होता है, न कि कपास के पदार्थ का।

अगर एक हजार किलो कपास हो, तो हमें देखना होगा कि उसमें से कितना कपास और कितना मूल्य कमीज बनाने के लिए जरूरी होगा। कपास में से सूत तैयार करने के लिए कपास के मूल्य (पिछले श्रम) के साथ औजार बनाने का पिछला श्रम भी जुड़ जायेगा। इस पर इन औजारों से किये जाने वाले नये श्रम को भी जोड़ लें, तो यह कुल श्रम सूत का मूल्य होगा। सूत से जब कपड़ा बनाया जाता है और उस कपड़े से कमीज, तव भी यही चीज होती है। हर मंजिल पर वैसी ही प्रक्रिया चलती है। कच्चे माल के पिछले श्रम के साथ औजारों का पिछला श्रम और इन औजारों के प्रयोग से किया जाने वाला नया श्रम जुड़ता जाता है। इससे श्रम का प्रमाण बढ़ता जाता है और नतीजे के रूप में मूल्य चढ़ता जाता है।

कमीज का मूल्य अगर 3 घण्टे का श्रम हो, तो इसका मतलब यह होगा कि कपास उगाने के समय से शुरू करें और बाद की मंजिलों पर अन्य प्रकार के श्रम जोड़ते चलें, तो कुल मूल्य 3 घण्टे हो जायेगा। तात्पर्य यह कि यह पूरा का पूरा मूल्य सिर्फ कपास उगाने से लेकर दर्जी की सिलाई तक होने वाले तरह-तरह के श्रम का ही होगा, न कि कमीज में पाये जाने वाले किसी पदार्थ का। कमीज बनती है कपड़े, सिलाई के लिए लगने वाले धागे, कमीज पर टाँके जाने वाले बटनों, कॉलर के अन्दर लगाये जाने वाले अस्तर के कपड़े के आदि से। मगर कमीज का 'मूल्य' इनमें से किसी भी चीज का नहीं होता।

किसी चीज के मूल्य को समझने के लिए शुरू करना होता है सबसे नये, अभी-अभी किये गये श्रम से और पीछे की ओर बढ़ते हुए सभी तरह के पिछले श्रम की पड़ताल करनी होगी। जब हम 'पिछले श्रम' की बात करते हैं, तो किस बिन्दु तक पीछे जाना चाहिए? उस बिन्दु तक जहाँ कुदरती पदार्थ हो। उस बिन्दु तक जहाँ पहली बार श्रम किया गया हो। पीछे जाते-

जाते हमें हर मंजिल पर कच्चे माल और औजारों के जरिये जुड़े तरह-तरह के श्रम को घटाते चलना होगा और अन्त में देखना होगा कि कितना श्रम बचा है। अगर हम कमीज के पिछले चरणों की पड़ताल करते-करते पीछे चलें, तो पायेंगे कमीज के पीछे कपड़ा, कपड़े के पीछे सूत, सूत के पीछे कपास और कपास के पीछे कुदरत की देन धरती। इस तरह पाते हैं इस क्रम को। किसी भी वस्तु को लेकर अगर हम पिछले चरणों की पड़ताल करते चलें, तो उस मंजिल तक पहुँच जायेंगे जहाँ कोई श्रम न हो। यहाँ होगा कोई कुदरती पदार्थ। इस कुदरती पदार्थ पर जब कोई श्रम किया जाता हो, तो वह नया श्रम होगा। वहाँ जहाँ कोई पुराना श्रम न हो।

जंगल में पेड़ और पेड़ों पर फल कुदरती पदार्थ हैं। इनका कोई मूल्य नहीं होता। कोई व्यक्ति अगर इस पेड़ के पास जाये, कोई फल चुने और तोड़ लाये, तो यह सब नया श्रम होगा। लेकिन यहाँ न तो कोई कच्चा माल होगा और न ही कोई औजार। यह होगा नया श्रम, वहाँ जहाँ कोई पुराना श्रम न हो। 'श्रम' यहीं से शुरू होता है। हम इसकी छानबीन करें, तो समझ पायेंगे कि मूल्य कहाँ से पैदा होता है। तब यह जान पायेंगे कि जब भी कोई श्रम किया जाता हो, तो उस श्रम को ही मूल्य मानना होगा।

कोई घड़ा, कुर्सी या कोई भी दूसरी वस्तु देखने पर हमें लग सकता है कि मूल्य उसके शरीर का होगा, उसके शरीर में बसे पदार्थों का होगा। मगर मूल्य किसी भी पदार्थ का नहीं होता। यह बात सिर्फ घड़े के ही साथ या कमीज के ही साथ नहीं होती। किसी सोने के जेवर या फिर सात-मंजिला इमारत के साथ भी यही सच होगा। और किसी समुद्री जहाज या हवाई जहाज के साथ भी। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वस्तु बड़ी है या छोटी। वस्तु कितनी भी बड़ी हो, यही बात लागू होगी। वस्तु का मूल्य उसके कच्चे माल, औजारों और सारी सहायक सामग्री को विभिन्न मंजिलों से होते हुए उसे बनाने में लगे कुल लाखो-करोड़ों श्रम-घण्टों का ही माप होता है। यही कुल श्रम उस वस्तु का मूल्य होता है।

सवाल और जवाब

1. क्या 'श्रम' दिखायी देता है ?

जवाब : कोई भी श्रम और हर श्रम जब हो रहा हो तब वह जरूर दिखायी देता है। कपड़े सिलते वक्त क्या सिलाई का श्रम दिखायी नहीं देता? बुनाई हो रही हो, तो क्या वह दिखायी नहीं देती? खाना बनाना क्या दिखायी नहीं देता? इसी तरह कोई भी श्रम और हर श्रम दिखायी देता है। श्रम होते समय ही नहीं, हो जाने के बाद भी दिखायी देता है। जब हम वस्तुओं की ओर देखते हैं तो यह श्रम उस वस्तु के शरीर में दिखायी देता है। कमीज की ओर देखें, तो यह जाहिर होता है कि बुनाई और सिलाई हुई है। यही किसी भी उत्पाद के साथ होता है।

2. कुदरती पदार्थ + श्रम = वस्तु। ऐसा ही है न? फिर क्या कुदरती पदार्थ किसी वस्तु में दिखायी देता है? क्या हम घड़े, कमीज, कुर्सी या किसी भी और वस्तु में कुदरती पदार्थ देख सकते हैं?

जवाब : कुदरती पदार्थ अगर किसी वस्तु के शरीर में हो, तो हम उसे नहीं देख पाते। अगर वह किसी वस्तु में न हो, तो हम उसे देख पाते हैं। हम मिट्टी (धरती) की ओर देखें, तो वह कुदरती पदार्थ है। अगर हम जंगल और पहाड़ की ओर देखें, तो वे कुदरती पदार्थ हैं। अगर पेड़ पर चढ़ जायें, फल तोड़ें और नीचे ले आयें, तो वह कुदरती पदार्थ नहीं रह जाता। अब यह फल वैसा नहीं रह गया है जैसे कुदरत में पाया जाता था। अब वह ऐसा पदार्थ है जिसे इनसान के श्रम से लाया गया हो। किसी घड़े में दिखायी देने वाली धरती (चिकनी मिट्टी) कुदरती पदार्थ नहीं होती। कुर्सी में दिखायी देने वाले तख्त कुदरती पदार्थ नहीं होते। हम किसी भी वस्तु में कुदरती पदार्थ नहीं देख सकते। किसी वस्तु की ओर देखिए, सिर्फ कच्चे माल ही दिख जाते हैं। लेकिन अगर उस कच्चे माल से हम श्रम को हटा दें, तो हम कुदरती पदार्थ तक पहुँच सकते हैं। अगर कोई कुदरती पदार्थ ही न हो तो हम कोई कच्चा माल बना ही नहीं पायेगे। इसीलिए यही कहना होगा कि कुदरती पदार्थ + श्रम = वस्तु। इसका मतलब यह नहीं कि कोई कुदरती पदार्थ वस्तुओं में दिखता है।

3. कमीज के अन्दर का कुदरती पदार्थ क्या होगा ?

जवाब : कमीज़ में कपड़ा है। कपड़े में सूत है। सूत में कपास है। कपास में कुछ नहीं। पर यह कपास कोई कुदरती पदार्थ नहीं होता। कुदरती पदार्थ किसी भी वस्तु में नहीं दिखता। दिखायी देता है तो सिर्फ कच्चा माल।

4. कमीज की सिलाई से शुरू कर श्रम हटाते चलें और उस मंजिल तक पहुँचें जहाँ कोई श्रम न हो ! फिर आप कहाँ पहुँच जायेंगे?

जवाब : कमीज से एक-एक किस्म के श्रम को हटाते

चलें, तो हम पहुँचेंगे 'कपास' तक। इस कपास से भी हम खेती के श्रम को हटा दें, तो पहुँचेंगे मिट्टी (धरती) तक । उस मिट्टी तक जहाँ कंकड़-पत्थर बिखरे पड़े हों और खेती-बाड़ी का कोई श्रम न हुआ हो। लेकिन यह धरती तो कमीज में नहीं होगी।

5. कमीज बनानी है। कपड़ा, धागा और बाकी सब कुछ मौजूद है। पर सुई नहीं है। अब क्या होगा?

जवाब : काम नहीं हो पायेगा। उत्पादन के साधनों में से किसी भी एक चीज के अभाव में काम आगे नहीं बढ़ पायेगा।

कुदरती पदार्थ + श्रम = वस्तु।
कोई मूल्य नहीं + मूल्य = माल।

किसी कुदरती पदार्थ पर जब कोई श्रम किया जाता है, तो उस कुदरती पदार्थ का रूप काफी बदल जाता है। धरती से जब मिट्टी खोद निकाली जाती है, तो वह मिट्टी वैसी नहीं रह जाती जैसे धरती में रही हो। मिट्टी (चिकनी मिट्टी) से कोई घड़ा बना दिया जाये, तो घड़ा खोद निकाली मिट्टी का ढेर नहीं रह जाता। किसी सामग्री का रूप कैसा भी बदले, मूल्य न तो कुदरती पदार्थों का होता है और न ही बदली हुई सामग्री का।

समुद्री जहाज या हवाई जहाज के मूल्य की पड़ताल करते हुए पीछे की ओर चलें! इस मूल्य की दास्तान पीछे की ओर बढ़ते-बढ़ते वहाँ तक पहुँचेगी जहाँ धरती के अन्दर धातु की खानें हों। हम देख सकते हैं कि जहाँ श्रम की शुरुआत हुई थी वहाँ से सैकड़ों मंजिलों पर नये-नये तरह के श्रम जुड़ते चले जाते हैं, वहाँ तक जहाँ अन्ततोगत्वा समुद्री जहाज या हवाई जहाज का बनना पूरा हो जाता है।

'मूल्य का मतलब है श्रम' इस बात समझने के लिए, आइए, एक सरल उदाहरण लें। किसी जंगल में मिट्टी के अन्दर कोई कन्द-मूल हैं। इस कन्द-मूल के यहाँ पैदा होने के लिए इनसान का कोई श्रम नहीं लगा है। ये कन्द-मूल यहाँ कुदरती तौर पर ही हो गये हैं। यहाँ की मिट्टी और ये कन्द कुदरती पदार्थ हैं। उनका कोई मूल्य नहीं है।

इन कन्दों को खोद निकालने के लिए कोई औजार जरूरी होता है। जमीन की सतह पर पेड़ के बगल में एक छोटी-सी सूखी डाल पड़ी है। इस पेड़ को भी इन्सानों ने नहीं उगाया होता। धरती की सतह पर यह डाल भी कुदरती पदार्थ ही है। इसका भी कोई मूल्य नहीं है।

इस डाल का औजार के रूप में इस्तेमाल करते हुए कोई व्यक्ति, मान लें कि कन्दों को खोद निकालता है और यहीं जमीन की सतह पर रख देता है। इस काम को एक घण्टा लगा थे। मतलब यह कि उस व्यक्ति ने एक घण्टे तक मिट्टी की खुदाई का श्रम किया है। खुदाई में कोई कच्चा माल नहीं लगा है। इसलिए कच्चे माल के रूप में कोई श्रम नहीं जुड़ा है। इस काम में औजार तो लगा है। फिर भी यहाँ औजार के नाम पर कोई श्रम जोड़ा नहीं जा सकता, क्योंकि वह औजार श्रम से बना हुआ नहीं होता। कन्दों न को खोद निकालने पर खर्च हुआ श्रम सिर्फ 1 घण्टा ही होगा।

जमीन की सतह पर रखे कन्द क्या कुदरती पदार्थ हैं? नहीं। वे तब तक कुदरती पदार्थ होंगे जब तक मिट्टी में हो और जब तक उसी रूप में हों जैसा कुदरत ने उन्हें रचा हो। किसी श्रम के सहारे बाहर निकाले हुए कन्द कुदरती पदार्थ नहीं रह जाते। अब वे श्रम से बनी कोई सामग्री हैं या कोई चीज। कल्पना करें कि हम जमीन पर बाहर निकाले हुए इन कन्दों से श्रम निकाल दें, मानो यह श्रम हुआ ही न हो! फिर ये कन्द अभी धरती के भीतर ही रही।

मिट्टी के अन्दर कन्द + मिट्टी की खुदाई का श्रम = कन्द सतह पर। अब ये कन्द है किसके? वे उसी व्यक्ति के हैं जिसने उन्हें सतह पर बाहर निकालने का काम किया है।

सतह पर रखे इन कन्दों का अब 'मूल्य' है। मूल्य उन पर खर्च हुआ श्रम ही है। मूल उतना ही होगा जितना श्रम खर्च हुआ हो। सतह पर बाहर लाये जाने के बाद इन कन्दों का कोई मूल्य हो गया है। यह मूल्य तब नहीं था जब कन्द मिट्टी के अन्दर थे। ऐसा क्यों?

कन्दों का यह जो मूल्य हो गया है वह कन्दों के अपने शरीर का होगा या कन्दों को सतह पर लाने के लिए खर्च हुए श्रम का? यह मूल्य इस श्रम का ही है। वह श्रम नहीं लगा होता, तो कन्द सतह पर नहीं आ पाये होते। फिर उनका कोई मूल्य नहीं होता। उनका यह मूल्य तभी होगा जब उन्हें बाहर निकाला गया होगा। यह मूल्य उसी श्रम का होगा जो उन्हें बाहर निकालने के लिए लगा हो।

एक सवाल : हम यह क्यों मानें कि सतह पर कन्दों का कोई मूल्य होता है? यह सही है कि इन्हें बाहर निकालने के

लिए किसी मात्रा में श्रम लग चुका है। सिर्फ इसी वजह से इस श्रम को 'मूल्य' क्यों कहा जाये? हम इन कन्दों के मूल्य की बात किये बिना भी तो इस्तेमाल कर सकते हैं। नहीं क्या?

जवाब : सही है। बहुत अच्छा सवाल है।

अगर कन्दों पर श्रम करने वाला व्यक्ति ही उनका इस्तेमाल करे, तो 'मूल्य' का कोई सवाल नहीं होगा। 'मूल्य' का मतलब 'विनिमय-मूल्य' ही है न? 'मूल्य' की बात तभी उठेगी जब कोई विनिमय होना हो।

कोई व्यक्ति जब अपने श्रम से कोई वस्तु बनाता हो, तो सिर्फ उसे ही इस वस्तु पर अधिकार होना चाहिए। वह वस्तु उसी की होना चाहिए। उसे यह अधिकार अपने श्रम के बदौलत मिला होता है। यह अधिकार उचित है। कोई व्यक्ति 1 घण्टा श्रम लगाकर जिन कन्दों को खोद निकालता हो, क्या उन्हें कोई ओर व्यक्ति कुछ भी दिये बिना ले जा सकता है? नहीं ले सकता। वह दूसरा व्यक्ति भी यह मान लेगा कि ये कन्द पहले व्यक्ति के ही हैं। यही श्रम अगर दूसरे व्यक्ति ने किया होता, तो पहला व्यक्ति मान जाता कि ये कन्द दूसरे व्यक्ति के हैं। इसीलिए जमीन पर रखे कन्द फिलहाल पहले व्यक्ति के ही हैं। इसलिए कि उसने यह श्रम किया है। दूसरा व्यक्ति अगर कन्दों को ले जाना चाहे, तो उसे अपनी ओर से कोई ओर वस्तु देनी होगी जिसका मूल्य इन कन्दों के बराबर हो। यह फिर उसे कन्दों के मूल्य के बराबर का कोई काम करना होगा। यदि वह ऐसा करे, तो यह कन्द का मूल्य चुकाने (भुगतान करने) के बाद ले जाने जैसी हो जायेगा।

मिट्टी में कन्द + श्रम = कन्द बाहर निकले हुए

इन कन्दों का मूल्य = यही श्रम।

'मूल्य' शब्द का प्रयोग तभी होता है जब विनिमय होना हो। लोग अगर अपनी ही जरूरतों के लिए वस्तुओं का इस्तेमाल करें, कोई विनिमय न करें, तो मूल्य का हिसाब लगाने की कोई जरूरत नहीं होगी। विनिमय हो पाने लिए मूल्य की गणना इसलिए जरूरी होती कि यह जानना जरूरी हो जाता है कि दी जाने वाली वस्तु और ली जाने वाली वस्तु के मूल्य समान हैं या नहीं?

विनिमय के समय दोनों वस्तुओं को नया नाम मिल जाता है, 'माल'। एक बार विनिमय हो जाये, तो ये फिर 'वस्तु' हो जाती हैं।

मान लें कि दो व्यक्तियों ने एक-एक लकड़ी हाथ में लेकर इन कन्दों को खोद निकाला हो। इस काम को करने में आधा घण्टा लगा हो। दोनों को ही आधा-आधा घण्टा लगा हो। मतलब यह कि दोनों ने समान श्रम किया है। दो-एक मिनट का फर्क हो, तो भी यह नगण्य होगा। दोनों ही अब अपने खोदे हुए कन्दों का इस्तेमाल कर सकते हैं। अब विनिमय का प्रश्न या मूल्य का कोई प्रश्न नहीं उठता।

मान लें कि चार या पाँच लोग मिलकर किसी जमीन पर खेती का श्रम करते हों। सभी बराबर-बराबर जिम्मेदारी के साथ यह काम करते हैं। आखिर उन्हें फसल प्राप्त होती है। सभी मिलकर उसका उपभोग करते हैं। श्रम करते वक्त उन्होंने जिम्मेदारी से श्रम किया और फसल का इस्तेमाल भी जिम्मेदारी से ही किया है। इस बात से कि इन लोगों ने मिलकर श्रम किया, यह जाहिर होता है कि वे एक साथ मिलकर रहते होंगे। मिल कर श्रम करने वालों के आपसी सम्बन्ध अगर इस तरह के हों, तो कोई मूल्य की गणना और विनिमय होगा ही नहीं।

लेकिन इन्सान अभी अलग-अलग और व्यक्तिगत-व्यक्तिगत रूप से श्रम करने के आदी हैं। ऐसी ही परिस्थिति पहले से चली रही है और आज भी कायम है। इसी के मद्देनजर हमें यह समझना होगा कि विनिमय और मूल्य की गणना क्यों जरूरी है।

जितना श्रम, उतना मूल्य : चलिए, लेते हैं एक ही वजन के 2 अलग-अलग धातु। 10 ग्राम ताँबा और 10 ग्राम सोना। कौन से धातु का मूल्य ज्यादा होगा? सोने का मूल्य। ज्यादा होगा। ताँबे का मूल्य कम होगा।

ऐसा क्यों? : ज्यादा मूल्य का मतलब है ज्यादा श्रम। है न? कम मूल्य का मतलब है कम श्रम। तात्पर्य यह कि 10 ग्राम ताँबा बनाने के मुकाबले 10 ग्राम सोना बनाने में बहुत अधिक श्रम लगता होगा।

हीरे का मूल्य तो समान वजन के सोने से काफी ज्यादा है। क्यों? हीरा बनाने के लिए सोने के मुकाबले काफी ज्यादा श्रम लगता है। मतलब यह कि किसी भी वस्तु को बनाने के लिए लगने वाला श्रम ही उसका मूल्य होता है। श्रम अगर ज्यादा हो, तो उसका मूल्य भी ज्यादा होगा। श्रम अगर कम हो, तो मूल्य कम होगा।

सवाल और जवाब

1. जमीन के अन्दर पड़े कन्दों का कोई मूल्य नहीं होता। मगर जमीन के ऊपर कन्दों का मूल्य होता है। क्यों?

जवाब : जमीन के अन्दर पड़े कन्द कुदरती पदार्थ होते हैं। इन कन्दों को बनाने के लिए कोई खेती का श्रम नहीं किया गया होता। लेकिन किसी इनसान ने इन कन्दों को जमीन से ऊपर लाने के लिए श्रम किया होता है। इन कन्दों के खातिर कोई श्रम हुआ है, इसीलिए इस श्रम को मूल्य हासिल होता है। अगर इन कन्दों को कोई ओर ले जाना चाहे, तो कन्दों को जमीन के ऊपर निकालने के श्रम के बदले उन्हें कोई ओर श्रम देना होगा।

2. सोने का मूल्य कोयले से ज्यादा है। क्यों? क्या इसलिए कि सोना कोयले से कम मात्रा में मौजूद है? या इसलिए कि सोना पाने के लिए श्रम ज्यादा लगता है?

जवाब : श्रम ज्यादा लगता है, इसीलिए ज्यादा श्रम का ज्यादा मूल्य। कम श्रम का कम मूल्य। श्रम ज्यादा लगने का कारण यह है कि सोना कम मात्रा में मौजूद है। लेकिन हमें 'मूल्य' का कारण 'श्रम' के ही सन्दर्भ में बताना होगा। चूँकि इसमें ज्यादा श्रम लगता है, इसीलिए मूल्य ज्यादा होता है। उत्तर यही होना चाहिए। फिर किसी ओर सवाल की गुंजाइश नहीं रह जायेगी।

3. मान लें कि कुछ लोग सामूहिक रूप से श्रम करते हों। तब भी हद से हद वे कितनी तरह की वस्तुओं का उत्पादन कर सकेंगे? इस तरह के दो समूह अलग-अलग कार्यरत हैं। क्या उन्हें विनिमय की कोई जरूरत होगी? नहीं तो जरूरतें पूरी कैसे हो पायेंगी?

जवाब : हाँ, हमें ऐसी शंकाएँ सामने लानी चाहिए। लेकिन इस बात को समझने के लिए यही पाठ काफी नहीं है। हमें कई ओर पाठ पढ़ने होंगे। जो हमें समझना होगा वह यह है अगर इन कन्दों को दो लोग खोद निकालते हों तो दोनों ही इनका इस्तेमाल कर सकते हैं अगर इस काम को एक ही व्यक्ति करे और दूसरा खाली बैठा रहे, तो क्या दोनों को इन कन्दों का इस्तेमाल करने का हक होगा? अगर इस काम को दोनों करें, तो? अगर एक ही व्यक्ति इस काम को करे और दूसरा व्यक्ति कुछ न करे, तो? यहाँ हम इन्हीं मसलों को समझ पायेंगे। बाकी बातें बाद में समझ लेंगे।

–o–

काव्य रंग

अदम गोंडवी के नाम से चर्चित शायर रामनाथ सिंह का जन्म उत्तर प्रदेश के गोंडा जिले में हुआ। उनकी प्रमुख कृतियों में 'धरती की सतह पर' और 'समय से मुठभेड़' जैसे काव्य संग्रह हैं। आज उनके जन्मदिन पर पेश हैं उनकी गज़लों के कुछ अंश:

गाँव का मौसम

तुम्हारी फ़ाइलों में गाँव का मौसम गुलाबी है
मगर ये आँकड़ें झूठे हैं ये दावा किताबी है

उधर जम्हूरियत ढोल पीटे जा रहे हैं वो
इधर पर्दे के पीछे बर्बरीयत है नवाबी है

लगी है होड़-सी देखो अमीरी और ग़रीबी में
ये पूँजीवाद के ढाँचे की बुनियादी ख़राबी है

तुम्हारी मेज़ चाँदी की तुम्हारे जाम सोने के
यहाँ जुम्मन के घर में आज भी फूटी रक़ाबी है

हाथ में छाले हैं

वो जिसके हाथ में छाले हैं, पैरों में बिवाई है
उसी के दम से रौनक आपके बँगलों में आई है

ये रोटी कितनी महँगी है ये वो औरत बताएगी,
कि जिसने जिस्म गिरवी रखके ये क़ीमत चुकाई है

क़ौम की औक़ात

हिन्दू या मुसलिम के अहसासात को मत छेड़िए
अपनी कुरसी के लिए जज़्बात को मत छेड़िए

हममें कोई हूण, कोई शक, कोई मंगोल है
दफ्न है जो बात, अब उस बात को मत छेड़िए

हैं कहाँ हिटलर, हलाकू, ज़ार या चंगेज़ ख़ाँ
मिट गये सब, क़ौम की औक़ात को मत छेड़िए

छेड़िए इक जंग, मिल-जुल कर गरीबी के ख़िलाफ़
दोस्त, मेरे मजहबी नग़मात को मत छेड़िए।

रूढ़िवादी परंपराएं : विज्ञान की कसौटी पर

– संपादक : राकेश नाथ

विज्ञान ने धर्म और भाग्यवाद द्वारा व्याप्त ईश्वर व मोक्ष की प्राप्ति के पाखंड की पोल की परतें खोल दी हैं।

यह ज्ञान और विज्ञान का युग है. धर्म और संस्कृति के नाम पर व्याप्त अज्ञान का अंधकार अब धीरे धीरे दूर हो रहा है और इन्सान विज्ञान के प्रभाव से जाग्रति की अंगड़ाई ले कर उठ बैठा है. अब मनुष्य अपनी सुख–सुविधाओं व सामाजिक व्यवस्थाओं के लिए काल्पनिक व परस्पर विरोधी धर्मग्रंथों व नीतिशास्त्रों के जाल में फंसना नहीं चाहता, क्योंकि विज्ञान ने उस की मान्यताओं को बदलने का रास्ता दिखा दिया है।

धर्म और मोक्ष की भयपूर्ण मान्यताएं

एक युग वह भी था, जब भारतीय समाज का पूरा नियंत्रण पलायनवादी, निष्क्रिय, निकम्मे, तथाकथित ज्ञानी, महात्माओं, पंडे पुजारियों के हाथ में था और साधारण व्यक्ति का कोई स्वतंत्र अस्तित्व ही नहीं था। ऐसे लोग या तो परिवार या गृहस्थ की समस्याओं को सुलझाने में असमर्थ साबित हो चुके थे अथवा बिना श्रम ही अपनी पेट–पूजा करना चाहते थे।

इसीलिए ये लोग या तो संसार को छोड़ने का बहाना बना कर साधु संन्यासी बन गए, अथवा पंडे पुजारी बन बैठे। साथ ही स्वर्ग–नरक, पापपुण्य, धर्म–कर्म, पुनर्जन्म आदि बातों की कल्पना कर ऐसे व्यक्तियों ने साधारण जनता के सामने कई भय व आकर्षण रखे और उस पर अपना नियंत्रण कायम किया।

धर्म और मोक्ष की भयपूर्ण मान्यताओं में व्यक्ति व समाज का जीवन इतनी मजबूती से जकड़ दिया गया था कि आगे आने वाली पीढ़ियां भी उस प्रभाव से मुक्त न हो सकीं। जब भी प्रत्यक्ष प्रमाण की आवाज उठाई गई अथवा जहां भी कल्पनाओं को सिद्ध करने की मांग रखी गई, वहीं धर्म और संस्कृति के स्वयंभू रक्षकों ने हर तरह से उस आवाज को दबा कर अपना दबदबा कायम रखा। आर्थिक व सामाजिक समस्याओं से घिरा हुआ व्यक्ति इतना समय भी न पा सकता था कि वह इन स्वार्थी व्यक्तियों की किलेबंदी पर व्यवस्थित ढंग से प्रहार कर सके।

यदि क्रांति की कोई चिनगारी फूटी भी होगी, तो इतिहास में उस का कोई उल्लेख नहीं, क्योंकि प्राचीन ग्रंथों में सिवा तत्कालीन शासकों की प्रशंसा, बेबुनियाद बातों व आपसी झगड़ों के कुछ भी नहीं मिलता। यह सब जानबूझ कर किया गया है, ताकि लोगों की श्रद्धा में कभी कोई कमी न आ सके। किंतु इन तथाकथित ज्ञानी महात्माओं ने इतना अवश्य महसूस किया कि कभी न कभी उन की मक्कारियों का परदाफाश अवश्य होगा और इसलिए इन्होंने पहले से ही विभिन्न युगों की कल्पना कर डाली, ताकि लोगों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ सके। सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग आदि की कल्पना इन्हीं सब दक्ष विचारधाराओं के दुष्परिणाम हैं।

समय के साथ–साथ ये बातें मनुष्य के दिमाग पर इतना गहरा असर डालती रहीं कि फिर उन में ही सत्य नजर आने लगा और इस तरह संस्कृति की आवाज धीरे–धीरे उठने लगी। संस्कृति के नाम पर वहां की पुरानी परंपराओं, अवैज्ञानिक मान्यताओं और काल्पनिक कथाओं को सत्य का जामा पहनाया गया और लोगों के दिलों में उन के प्रति भयमिश्रित श्रद्धा उत्पन्न हो गई। इस तरह की नाकेबंदी की गई, जिस में से निकलना उस समय के व्यक्ति के लिए तो असंभव था ही, आज के युग के मानव के लिए भी कठिन प्रतीत हो रहा है।

अवतारवाद

हमारे देश का यह दुखांत रहा है कि यहां अनेक स्वार्थी व मतलबी धूर्तों ने अपनी सूझबूझ से कई 'ईश्वरों' की सृष्टि की और विभिन्न धर्मों को चलाया और इस तरह शुरू से ही पारस्परिक भिन्नता, भेदभाव व फूट के बीज बोए। पहले तो समय समय पर 'ईश्वर' के अवतार प्रकट होते ही रहते थे।

ये अवतार ओर कोई नहीं या तो संसार से भागे हुए व्यक्तियों के दिमाग की उपज थे या उस समय के सब से बलवान व शक्तिशाली व्यक्ति। किंतु ऐसे लोगों के जो भक्त थे, उन्होंने उन को 'ईश्वर' और 'भगवान' की उपाधि दे कर साधारण व्यक्ति से इतना ऊपर उठा दिया कि वे सदा पूजा के पात्र बने रहे।

इन अवतारों को सर्वत्र, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान बताया गया और फिर विभिन्न दर्शनशास्त्रों को रचा गया। दर्शन इस कथन की सत्यता प्रमाणित करते हैं और इन में से फिर कितनी

ही शाखाएं और उपशाखाएं निकलीं, इन को ले कर कितने ही मत और संप्रदाय बने। जिस का दांव लगा, उसी का झंडा गाड़ दिया, और लोगों को गुमराह किया।

एक वेद को मानने वाले ही अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, द्वैत, शुद्धाद्वैत, अचिंत्य भेदाभेद आदि कई भागों में बंट गए। इस पर भी की बात तो यह है कि हर मतावलंबी का यह दावा है कि जो वह कहता अंतिम सत्य है।

इस मत भिन्नता का दुष्परिणाम भारतवासी सैकड़ों बन चुके हैं। हज़ारों वर्षों से दासता की जो जंजीरों ने यहां के लोगों को बांधा उसी का कुफल है। किंतु जैसा कि पहले कहा जा चुका है, रूढ़ियों का प्रभाव इतना जबरदस्त रहा कि इतिहास की घटनाओं से हम ने न कोई सबक सीखा और न सीखने का मौका ही दिया गया। ईश्वरों, ज्ञानियों की कल्पनाएं हम ने अवश्य कीं, किंतु अपने को इस दायरे से निकालने की बात नहीं सोची. सोच भी कैसे सकते थे?

आदर्शों में हमारे सामने अनेक स्वर्णिम चित्र अवश्य थे, यह वही गुटबंदी थी, जिस के बल पर विभिन्न धर्मों के विभिन्न धर्मगुरु अपनी-अपनी ढपली पर अपना अपना राग अलापते थे। आश्चर्य है कि धर्म में मौलिक मतभेद होते हुए भी कुछ व्यक्ति भारतीय संस्कृति का झूठा नाम लेने में व्यस्त हैं।

ऐसे व्यक्ति सब धर्मों के समन्वय की बात करते हैं। यह हास्यास्पद हैं, अपनी दुकानदारी को कायम रखने के लिए वे हर तरह के तरीके काम में लाते हैं और परस्पर विरोधी परंपराओं में जबदस्ती सांझ बता कर भारतीय संस्कृति की दुहाई देते हैं।

कथित गौरवपूर्ण संस्कृति

हर देश की संस्कृति अवश्य हुआ करती है। मेरे कहने का भाव यह नहीं है कि अपने देश की कोई संस्कृति है ही नहीं, किंतु जिन अर्थों में भारतीय संस्कृति का उल्लेख करते हैं, वैसी कोई संस्कृति यथार्थ में यहां नहीं है।

संस्कृति में व्यक्ति का विकास निहित होता है. वही राष्ट्र की प्रगति का मापदंड होता है, उस में देश के लोगों का प्रगति को प्रथम स्थान मिलता है। लेकिन हम ने भारतीय संस्कृति के नाम पर एक ऐसी कल्पना कर रखी है, जो कोरी कल्पना ही है।

हमारे देश को एक राष्ट्र की संज्ञा दी भी जा सकती है या नहीं। यह भी संदेहपूर्ण है। यदि एक राष्ट्र मान भी लिया जाए, तो इस में संस्कृत्कि एकता कहीं भी प्रमाणित नहीं होती।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, शुरू-शुरू में यहां सत्ता में पुरोहितों, संसार से विरक्त लोगो का उल्लेख मिलता है। उन्होंने स्वर्ग-नरक, पाप-पुण्य आदि की कल्पनाएं कीं, लोक-परलोक के मनमाने नियम बनाए, स्वार्थ साधना के लिए सामाजिक जीवन को अवैज्ञानिक, किंतु भले प्रतीत होने वाले सूत्रों में बांध कर रखने का प्रयत्न किया।

इन सब के बावजूद सुंदर कल्पनाओं का वह सतयुग भी संघर्ष, शोषण, दुराचार और अनाचार का युग रहा है। कभी देवता आपस में लड़ते थे, तो कभी भगवान कहे जाने वाले व्यक्तियों में संघर्ष होता था।

पुराणों में ऐसी कई कहानियां मिलती हैं, देवताओं व असुरों में तो निरंतर युद्ध चलता ही रहता था। देवता भी अनेक वर्गों में बंटे हुए थे और दुराचार तो इतना था कि जिसे अवसर मिला, उसी ने कोई कांड कर दिया। इस तरह के अनेक उदाहरण हैं, जो पुराने ग्रंथों में भरे पड़े हैं। सतयुग में राजा हरिश्चंद्र ने अपनी पत्नी को चांडाल के हाथों खुलेआम बेच दिया, मानों नारी नारी नहीं, सोने चांदी का कोई आभूषण हो, जिसे जब जरूरत हुई, बेच दिया।

वर्णाश्रम व्यवस्था

इस से अधिक अनाचार व अत्याचार और क्या होगा? शुरू से ही समाज को चार वर्गों में बांट दिया गया-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। शंबूक का वध केवल इसलिए कर दिया गया, क्योंकि यह शूद्र हो कर भी तपस्या कर रहा था। सीता का परित्याग भी नारी जाति के प्रति किए गए अत्याचार का एक ज्वलंत उदाहरण है।

इस तरह उस समय भी युद्ध था, संघर्ष था, वर्ग भेद था, व्यक्ति व्यक्ति के जीवन में जमीन आसमान का अंतर था? फर्क केवल इतना था कि उस समय अवतारों की कल्पना कर दुष्टों के विनाश की कहानियों को गढ़ा गया और धर्म की संस्थापना की आड़ में लोगों को सत्य से दूर रखने के प्रयत्न किए गए। अन्यथा यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि सतयुग की जो कल्पना भारतीय लोकजीवन में की गई है, वह यथार्थ से एकदम दूर है। उस युग में इस युग से भी अधिक

बुराइयां और असमानताएं थीं। लेकिन क्योंकि उस समय का समाज इतना बड़ा भी नहीं था और फिर उस का कोई ब्योरेवार इतिहास भी नहीं मिलता, इसलिए आधुनिक युग की बुराइयां ही अधिक नजर आती हैं।

द्वापर युग में किस प्रकार नारी का अपमान किया गया था, किस तरह भगवान होने का दावा कर तत्कालीन शासक जनता की भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया करते थे, किस प्रकार धर्म और भक्ति के नाम पर औरतों के साथ अत्याचार होता था, छुआछूत के भेदभाव कितने गहरे थे, ये सब बातें अब किसी से छिपी नहीं हैं।

धार्मिक युद्ध तो हमारी संस्कृति का एक शर्मनाक अध्याय है ही। इन के अलावा धर्मशास्त्रों पर जो एक वर्ग का प्रभुत्व कायम रखने की नीति निर्धारित की, उस के परिणामस्वरूप जो अत्याचार हुए, वे सब इतिहास के पृष्ठों में बिखरे पड़े हैं। धर्म के नाम पर अन्य धर्मावलंबियों पर कितने अत्याचार किए, उन को जीवित जला दिया, उन के शास्त्रों को नष्ट कर दिया, ये सब बातें आज साधारण व्यक्ति की श्रद्धा को भी हिला रही हैं। कुछ समय के लिए लोगों को भले ही असलियत से दूर रखा गया हो किंतु अन्याय के जो धब्बे लग चुके हैं, वे कभी मिटने वाले नहीं।

इसी तरह उस समय के शासक धर्म के नाम पर जो चाहते कर सकते थे, उन्हें तत्कालीन कानून के निर्माताओं द्वारा हर तरह की छूट मिली हुई थी। वे 'ईश्वर' के अवतार थे, इसलिए जो भी करते, उन के लिए उपयुक्त था, अथवा उन के पीछे ऐसी शक्ति थी, जो अल्पज्ञान को दबा कर रखने में समर्थ थी और इन सब बातों के बीच विभिन्न देवी-देवताओं की रचना की गई, गलतियों को सही साबित करने के लिए नए नए अपराध घढ़े गए, शोषण किया गया, लोगों की बुद्धि को लूटा गया, कभी भाग्यवाद और कर्मवाद की दुंदुभी बजाई गई, कभी पुरुषार्थ को ऊंचा उठाया गया, यज्ञ, होम, दानदक्षिणा के रूप में आय के साधन निकाले गए, मंत्र, तंत्र, जादू-टोने के आविष्कार कर लोगों के अंधविश्वास को उभारा गया और इस तरह एक अजीब सा चक्र चलता रहा।

और यह सब हुआ उसी संस्कृति के नाम पर, उसी धर्म के नाम पर, जिस की बार-बार दुहाई देते हुए हम तनिक भी शरमाते और सकुचाते नहीं। कलियुग के आविर्भाव के साथ-साथ पुरानी मान्यताओं के कारण जो उच्छृंखलता आई, वह जनजीवन को इधर उधर मोड़ती ही रही। देश में कभी एकता नहीं रही। छोटे बड़े सम्राटों, राजाओं, महाराजाओं, सेनापतियों और सामंतों के हाथों देश को टुकड़ों में विभाजित हो कर रहना पड़ा।

ये व्यक्ति धर्म के पालक, प्रजा के रक्षक, अन्नदाता आदि के नाम से पुकारे गए, किंतु इन्होंने देश को कभी एकता के सूत्र में बंधने न दिया। आपस में लड़ते रहे। खून बहाते रहे और सब से अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि धर्म और मोक्ष के ये पहरेदार हर समय सुरा और सुंदरी के पीछे भटकते रहे।

इन सब की कमजोरी का फायदा उठा कर विदेशी आक्रमणकारी आए। उन्होंने अपना राज्य कायम किया; हजारों औरतों को इकट्ठा कर हरम बनाए, मनमाने अत्याचार किए, मौज की, लड़े और नष्ट हुए यह एक बहुत लंबा इतिहास है।

वैज्ञानिक सोच :

किंतु समय की प्रगति भी तो एक चीज होती है। विज्ञान के आगमन के साथ-साथ इस संस्कृति और काल्पनिक धर्म की चादर धीरे-धीरे फटने लगी। इस पर धर्म के ठेकेदारों ने इस युग को भौतिकवादी युग की संज्ञा दे कर अपनी बुद्धि का उपहासास्पद परिचय सामने रखा। भौतिकवाद कब नहीं था ?

धर्म की कमाई खाने वाले व्यक्तियों ने जब देखा कि विज्ञान हर सत्य को प्रत्यक्ष रूप से संसार के सामने रखता चला जा रहा है, तो उन में हलचल मच गई। पहले उन्होंने विज्ञान का विरोध किया, लोगों की धार्मिक भावनाओं को इस के विरुद्ध भड़काया, किंतु एक के बाद अनेक सत्यों का अन्वेषण करता हुआ विज्ञान धर्म की मान्यताओं को पग पग पर चुनौती देता हुआ तेजी से आगे बढ़ता गया। स्थिति को संभलता न देख और अपने अस्तित्व को अधिकाधिक खतरे में पड़ता जान धर्म के पंडों ने धर्म और विज्ञान का समन्वय सामने रखा।

इन ने यह कहा, 'धर्म व विज्ञान का मार्ग अलग अलग है, किंतु इन का लक्ष्य एक है। दोनों ही सत्य की खोज में लगे हैं।' इस से अधिक झूठी बात आज तक नहीं कही गई।

धर्म और विज्ञान एकदम अलग-अलग हैं, इन में कोई समानता नहीं। न इन का लक्ष्य एक है, न मार्ग। धर्म मस्तिष्क

की कल्पना मात्र है, स्वार्थी व्यक्तियों की पेट-पूजा का सरल तरीका है, राष्ट्र, समाज और व्यक्ति को दासता की श्रृंखलाओं में बांधने का प्रयास है। इस में कुछ यथार्थ नहीं, कुछ भी वास्तविक नहीं, यह किसी की प्रगति में कभी भी सहायक नहीं हो सका है।

विश्व का इतिहास इस का साक्षी है। धर्म से व्यक्ति की भावनाएं संकुचित, उस का व्यवहार बनावटी और उस की मान्यताएं भ्रमपूर्ण बनती हैं। इस के विपरीत विज्ञान प्रत्यक्ष सत्य है, वह मानव जाति की बौद्धिक प्रगति का निस्संदेह प्रमाण है, उस में कल्पना के घोड़ों का कोई अस्तित्व नहीं है, वह जो कुछ कहता है, उसे प्रमाणित करता है. वह लोक कल्याणकारी है, इसलिए आजकल कुछ लोग धर्म व विज्ञान की एकता की जो बहकी-बहकी बातें करते हैं, उस के पीछे एक रहस्य है और वह यह है कि वे अपने खतम होते हुए अस्तित्व को कुछ समय के लिए ओर कायम रखना चाहते हैं।

नैतिकता के झंडाबरदार

धर्म की कल्पनाओं को इस युग में जड़ पकड़ता न देख आजकल कुछ स्वार्थी व्यक्ति नैतिकता को ऊंचा उठाने के नाम पर आंदोलन कर रहे हैं. कोई अरविंद के नाम पर अपना झंडा गाड़ रहा है, तो कहीं श्रृंणवंतु (न्यू लाइफ मूवमेंट) की बात बनाई जा रही है। कोई अणुव्रत आंदोलन की आड़ में भाषण दे रहा है, तो कोई नैतिक पुनः जागरण का संदेश देना चाहता है। धर्म और नैतिकता में अंतर न समझने वालों को यह सब भले ही भ्रम में डाल दे, किंतु जो वास्तविकता से परिचित हैं, वे समझते हैं कि इन के पीछे कौन सा षड्यंत्र है।

आज के इस युग में धर्म और काम की यथार्थताएं स्पष्ट रूप से व्यक्ति के सामने आ रही हैं, और फालतू की नैतिकता की बातों में समय शक्ति व धन का अपव्यय करना राष्ट्रद्रोह है. इस युग में ऐसी कोई भी बात चल नहीं सकती, जिस से मनुष्य की आर्थिक व सेक्स संबंधी समस्याओं का हल न हो सकता हो। धर्म व मोक्ष अब सिर्फ याद रखने के विषय रह गए हैं। आज हमें अर्थ और काम के मूल्यों का अधिकाधिक सोचना होगा।

विज्ञान की प्रगति के साथ-साथ धर्म की कल्पनाओं की कीमत इतनी अधिक गिर गई है कि अब व्यक्ति को गुमराह करना अत्यंत कठिन है। हमारे वे ईश्वर, देवीदेवता, स्वर्ग नरक, पाप पुण्य अतीत की एक विस्मय भरी कहानी बन गए हैं। भले ही हम संस्कृति का नारा बार-बार बुलंद करें, भले ही अतीत को गौरवशाली मान कर उस का बखान करें, लेकिन इन सब से हमारी रोजमर्रा की समस्याओं में कोई अंतर नहीं आ सकता, यह सुनिश्चित है।

धर्म के आचार्य और इस से संबंधित व्यक्ति एक दूसरी योजना में भी लगे हैं। वह है, आपस में मिल कर प्रगतिशील के विरुद्ध मोर्चा कायम करना, 'सर्व धर्म सम्मेलन' जैसे कार्यक्रमों के पीछे यही भूमिका है। आज हमारी सरकार भी साधुओं को एक सूत्र में बांधने का प्रयत्न कर रही है। भारत साधु समाज आदि संगठन इस के प्रमाण हैं। किंतु सब धर्मों का या विभिन्न धर्मावलंबियों का मेल हो भी सकता है।

यह बात समझदार व्यक्ति की कल्पना में भी नहीं आ सकती। जब तथाकथित ईश्वरों, केवल ज्ञानियों व बीभत्सता प्राप्त व्यक्तियों के दिमाग में भी अपनी अपनी खिचड़ी अलग पकाने की धुन सवार हुई, तब इन साधारण बुद्धि वाले धर्माचार्यों का एकता का नारा सिवा उन के षड्यंत्र के ओर कुछ भी नहीं है।

धारणा में बदलाव की जरूरत

इसलिए हमारे बहुत से कर्त्तव्य हो जाते हैं। सब से पहले हमें अपनी संस्कृति के प्रति जो गलत धारणाएं हैं, उन को त्यागना होगा। भारतीय संस्कृति नाम की ऐसी कोई चीज नहीं है, जो सर्वथा दोषमुक्त, सर्वोच्च वस्तु रही हो।

दूसरी बात है, धर्म और नैतिकता की; और इन की आड़ में रचे गए प्रपंचों का हमें खुल कर सामना करना होगा।

तीसरी बात है विचारों की. वर्णसंकरता को हमें नष्ट करना होगा। और इन सब के लिए लागू चौथी बात है, हमें समाज का शोषण करने वाले धर्माचार्यों, स्वार्थी पुरोहितों, नैतिकता के ठेकेदारों व स्वयंभू नेताओं से संघर्ष करना होगा, जो कभी संस्कृति के नाम पर, कभी धर्म की दुहाई दे कर, कभी धर्म और विज्ञान की एकता का नारा लगा कर हमारी वैज्ञानिक विचारधाराओं को रूढ़िवादी परंपराओं की ओर पुनः धकेलने का प्रयत्न कर रहे हैं। यह तो हुआ हमारे सिद्धांतों का निगेटिव पहलू।

रचनात्मक बात यह है कि अर्थ व काम के सही मूल्यों को बिना किसी संकोच के हमें ग्रहण करना होगा। इस युग में

तो यह निश्चित रूप से प्रमाणित हो चुका है कि मनुष्य के जीवन का आधार अर्थ और काम ही है। ये दोनों जीवन की सब से बड़ी आवश्यकताएं हैं।

इन के अभाव में जीवन का संतुलित व स्वाभाविक अस्तित्व ही असंभव है। अर्थ में राज्य, धन, दौलत, मकान, खाना, कपड़ा, यश, कीर्ति आदि सब प्रकार की मानवोचित वस्तुएं निहित हैं। काम के अंतर्गत हैं, व्यक्ति की उत्पत्ति, उस का व्यक्तिगत जीवन, परिवार का निर्माण, समाज की रचना, जाति व राष्ट्र की उत्पत्ति व उस का व्यवहार और इन से संबंधित अन्य सभी समस्याएं हैं। शारीरिक पुष्टता, चरित्र की सबलता, जीवन का सुख, बच्चों के प्रति कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व आदि सब इस के अंदर आ जाते हैं।

इसलिए हमें इन के महत्त्व को स्पष्ट रूप से स्वीकार करना है। यद्यपि सृष्टि के आदि से ले कर अब तक व्यावहारिक जीवन में इन्हीं दो सत्यों को आधार मान कर काम किया जा रहा है, तथापि झूठे धर्म और झूठी नैतिकता के परंपरागत प्रभाव में आ कर हम स्पष्ट रूप से स्वीकार करने में लज्जा व हीनता का अनुभव करते हैं। हम जानते हैं कि बिना अर्थ के हमारा जीवित रहना मुश्किल हो सकता है, फिर भी इसे 'नरक' का हेतु या अन्य ऐसी ही संज्ञाएं देते हैं. इसी तरह 'काम' सत्य है, जिस पर प्राणीजगत की उत्पत्ति व प्रगति आधारित है।

काल्पनिक धर्मों व अवैज्ञानिक नैतिकताओं की बैसाखियां हमारी विवशताओं के प्रमाण सिद्ध हो रही हैं. विश्व के सामने आज अनेकानेक समस्याएं हैं, जिन का समाधान किसी भी देश की संस्कृति की पुरानी यादगारों में अथवा धर्म के आधारहीन सिद्धांतों में कदापि नहीं मिल सकता। सतयुग के तथाकथित ईश्वर भी ऐसी व्यवस्था न कर सके, जहां सुख ही सुख हो, तो इस वैज्ञानिक भौतिकवादी युग में धर्म और संस्कृति की दुहाई दे कर समस्याओं को सुलझा उन का विचार करना मृग मरीचिका के सिवा कुछ नहीं है. जो व्यक्ति इन प्रयत्नों में लगे हैं, वे जनसाधारण को तो धोखा देते ही हैं, स्वयं को भी राष्ट्रीय प्रगति में सहयोग दे सकने में अयोग्य साबित कर रहे हैं।

(स्त्रोत : पुस्तक ''तर्क से काटिए अंधविश्वासों का जाल'', सं. राकेश नाथ)

करामात

– सआदत हसन मंटो

लूटा हुआ माल बरामद करने के लिए पुलिस ने छापे मारने शुरु किए।

लोग डर के मारे लूटा हुआ माल रात के अंधेरे में बाहर फेंकने लगे,कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने अपना माल भी मौक़ा पाकर अपने से अलहदा कर दिया, ताकि क़ानूनी गिरफ़्त से बचे रहें।

एक आदमी को बहुत दिक्कत पेश आई। उसके पास शक्कर की दो बोरियाँ थी जो उसने पंसारी की दूकान से लूटी थीं। एक तो वह जूँ–तूँ रात के अंधेरे में पास वाले कुएँ में फेंक आया, लेकिन जब दूसरी उसमें डालने लगा ख़ुद भी साथ चला गया।

शोर सुनकर लोग इकट्ठे हो गये। कुएँ में रस्सियाँ डाली गईं।

जवान नीचे उतरे और उस आदमी को बाहर निकाल लिया गया।

लेकिन वह चंद घंटो के बाद मर गया।

दूसरे दिन जब लोगों ने इस्तेमाल के लिए उस कुएँ में से पानी निकाला तो वह मीठा था।

उसी रात उस आदमी की क़ब्र पर दीए जल रहे थे !

प्रस्तुति : परमानन्द शास्त्री

भूखी सभ्यताओं में ईश्वर

प्राचीन काल में
पहला मंत्र लिखे जाने से पहले
मज़हबी किताब के ज़मीं पे आने से पहले

किसी किसान ने
बहाया था पसीना खेत में।

क्योंकि
भूखी सभ्यताओं में
ईश्वर नहीं हुआ करते।

– जैकिंटा केरकेट्टा

वैज्ञानिक चेतना से काटें अंधविश्वासों का जाल

– जसवंत मोहाली

यह पुस्तक हिंदी भाषाई क्षेत्रों / राज्यों के विद्यार्थियों, नौजवानों के लिए तैयार की गई है। हिंदी पढ़ने / समझने वाले विद्यार्थियों के लिए इस विशेष पुस्तक की जरूरत क्यों हुई? पंजाब के स्कूल विद्यार्थियों के लिए पहले से आयोजित विद्यार्थी चेतना परीक्षण परीक्षा की तैयारी के लिए उपलब्ध पुस्तक के अनुभव से इस पुस्तक का संकल्प निकला। प्रश्न उठता है जब पढ़ने वाले विद्यार्थियों के पास पहले से ही हर विषय की अलग–अलग पुस्तकें हैं, तो फिर इस विशेष पुस्तक का क्या उद्देश्य है? इस पुस्तक का उद्देश्य छात्रों, नौजवानों की सोच/दृष्टिकोण को वैज्ञानिक बनाना, इतिहास के नायकों से अवगत कराना और ज्यादा अध्ययन करने की क्षमता पैदा करना है। इससे आप भूत, प्रेत, जिन्न और आत्माओं आदि की काल्पनिक कहानियों की असलियत जान सकोगे जिनके बारे में बचपन में ही आपके मन–मस्तिष्क में भय पैदा कर दिया जाता है। आप जब भी टी.वी. का कोई चैनल लगाते हो तो वहाँ अक्सर अंधविश्वासी कोई ज्योतिषी, साधु संत, साध्वी या बाबा मंत्र, माला, लॉकेट आदि से आपकी समस्याओं को समाधान करने का दावा कर रहा होता है। अब तो आप भी बहुत से बाबाओं के अंधविश्वासों से अवगत हो गए होंगे। जो अपने भक्तों का आर्थिक और शारीरिक व मानसिक शोषण करते हैं। इस पुस्तक को पढ़ने के बाद आप कभी भी ऐसे पाखंडी बाबाओं के चुंगल में नहीं फँसोगे।

हम कह सकते हैं कि सिलेबस की पुस्तकें पढ़ने का उद्देश्य अपनी कक्षा की परीक्षा में पास होना होता है। लेकिन इस पुस्तक का उद्देश्य जिंदगी की परीक्षा के लिए तैयार होना है। पाखंडी बाबाओं को करोड़ों रुपए की भेंट चढ़ाने वालों में से ज्यादातर पढ़े–लिखे ही होते हैं। सिलेबस की पुस्तकें यहाँ आपको ज्ञान और विज्ञान से अवगत कराती हैं, वहीं इस पुस्तक का उद्देश्य आपकी सोच/दृष्टिकोण को वैज्ञानिक बनाना है। एक उदाहरण लेकर समझते हैं.. सूर्य–ग्रहण कैसे लगता है? इस बात को विज्ञान की किताब में पढ़ कर समझ लिया और परीक्षा में आए प्रश्न का उत्तर भी ठीक लिख दिया। लेकिन समाज में हमने देखा है कि जब सूर्य–ग्रहण लगता है तो यह कहा जाता है कि सूर्य–ग्रहण के दौरान बुरे प्रभाव से बचने के लिए हमें बाहर नहीं निकलना चाहिए। खासकर गर्भवती महिलाओं को। सूर्य के दुष्प्रभाव से बचने के लिए पूजा पाठ करना चाहिए आदि। यह पुस्तक आपको ऐसे अंधविश्वासों के बोझ से अवश्य मुक्त करेगी। स्कूल के सिलेबस की पुस्तकें को अच्छी तरह से समझने में मदद करेगी और यह समझने में मदद करेगी के स्कूल में से प्राप्त ज्ञान को जिंदगी में व्यवहारिक रूप से कैसे लागू करें। यह पुस्तक स्कूल से निकलकर घर,परिवार और दुनियां, देश, समाज में कैसे जिएं... इस बात के लिए भी आपको तैयार करती है।

बचपन से ही आपके मस्तिष्क पर भूत–प्रेत और आत्माओं की गहरी छाप है। यह पुस्तक उन सभी भूत-प्रेतों और अंधविश्वासों की जो छाप आपके मन मस्तिष्क पर है, उसको साफ करने की एक अच्छी कोशिश है। वैज्ञानिकों की जीवनी से आपको प्रेरणा मिलेगी। आप जानेंगे कि महान वैज्ञानिकों के पास भी साधन ज्यादा नहीं थे। अंतर सिर्फ लगन, मेहनत और समय के सही उपयोग का है। इसके ईलावा देशभक्तों की जीवनी भी दी गई हैं। देशभक्त कौन थे ? यह वह लोग थे, जिन्होंने घर परिवार से ज्यादा देश व समाज की फिक्र की। अंग्रेजों से देश को आजाद कराने के लिए संघर्ष किया। जेल और काले पानी की सजा काटी। अंग्रेजों का लाठी चार्ज सहन किया और हँसते–हँसते फाँसी पर भी झूल गए। वह साधारण लोग नहीं थे। इसीलिए यह जानने की उत्सुकता होनी चाहिए कि जिन लोगों ने देश की आजादी के लिए

शेष पृष्ठ 21 पर
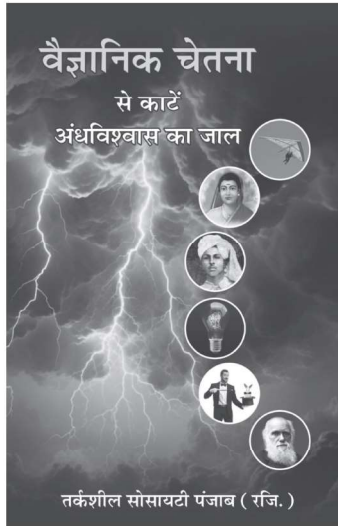
कृत्रिम सूरज की ओर : स्वच्छ और अनंत ऊर्जा का सफर

– धर्मेन्द्र आज़ाद

मानव सभ्यता ने अपनी प्रगति का अधिकांश सफर प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर होकर तय किया है। आज की दुनिया जिस ऊर्जा पर चल रही है, उसका बड़ा हिस्सा कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस जैसे जीवाश्म ईंधनों से आता है। लेकिन ये स्रोत सीमित हैं और तेजी से समाप्त हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में, वैज्ञानिक और शोधकर्ता एक नए, अनंत और स्वच्छ ऊर्जा स्रोत की खोज में जुटे हैं, जो मानवता को आने वाले ऊर्जा संकट से बचा सके। इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है चीन का ''कृत्रिम सूरज'' प्रोजेक्ट।

चीन का हान्लिऊ-3 (HL-3) टोकमैक, जिसे कृत्रिम सूरज भी कहा जाता है, उसी ऊर्जा उत्पादन प्रक्रिया को दोहराने का प्रयास है जो हमारे असली सूरज में होती है, यानी ''न्यूक्लियर फ्यूजन'' (परमाणु संलयन)। प्राकृतिक सूरज की तरह, यह प्रक्रिया भी दो छोटे परमाणुओं को मिलाकर एक बड़ा परमाणु बनाती है, जिससे विशाल मात्रा में ऊर्जा उत्पन्न होती है। अगर वैज्ञानिक इस कृत्रिम सूरज में इस प्रक्रिया को स्थिरता से चलाने में सफल हो जाते हैं, तो हमें ऐसा ऊर्जा स्रोत मिल सकता है, जो न केवल असीमित और सस्ता होगा बल्कि पर्यावरण को भी नुकसान नहीं पहुंचाएगा। HL-3 का मुख्य उद्देश्य स्वच्छ और अनंत ऊर्जा प्रदान करना है, जिससे विश्व के ऊर्जा संकट को हल किया जा सके। चीन की नेशनल न्यूक्लियर कॉर्पोरेशन (CNNC) द्वारा विकसित यह टोकमैक, मैग्नेटिक कन्फाइनमेंट न्यूक्लियर फ्यूजन पर आधारित है, जो चुंबकीय क्षेत्र के जरिए प्लाज्मा को नियंत्रित रखता है, ताकि इसे नियंत्रित तरीके से फ्यूजन प्रक्रिया में प्रयोग किया जा सके।

हाल ही में इस प्रोजेक्ट में एक नई तकनीक जोड़ी गई है, जिसे ''डिजिटल ट्विन सिस्टम'' कहा जा रहा है। यह प्रणाली एक ''सुपर आई'' की तरह काम करती है, जो पूरी प्रक्रिया की सटीक और रियल-टाइम निगरानी करती है। डिजिटल ट्विन सिस्टम, वैक्यूम चैम्बर के तापमान वितरण पर नजर रखता है और उसकी एक डिजिटल प्रतिकृति बनाता है। इसके जरिए वैज्ञानिकों को बेकिंग (चैम्बर को गर्म करने) जैसी जटिल प्रक्रियाओं की सटीक जानकारी मिलती है।

यह परियोजना न केवल चीन में बल्कि पूरी दुनिया में वैज्ञानिक समुदाय का ध्यान आकर्षित कर रही है। चीन के अलावा अमेरिका, जापान, यूरोप और दक्षिण कोरिया भी इसी दिशा में अपने-अपने फ्यूजन प्रोजेक्ट्स पर काम कर रहे हैं। इन सभी परियोजनाओं का मुख्य उद्देश्य है – ऐसा ऊर्जा स्रोत खोजना जो सतत, स्वच्छ और सुरक्षित हो।
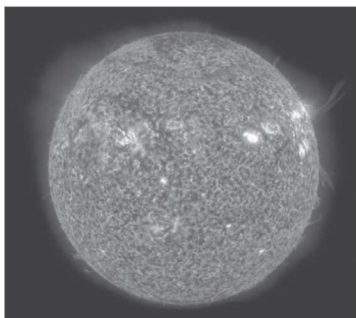
विज्ञान और प्रौद्योगिकी का इस परियोजना में महत्व अत्यंत गहरा है। कृत्रिम सूरज जैसे प्रोजेक्ट यह दिखाते हैं कि विज्ञान और तकनीकी नवाचार हमें हर समस्या का समाधान दे सकते हैं। ऊर्जा संकट, जलवायु परिवर्तन, और पर्यावरण प्रदूषण जैसी गंभीर समस्याओं का उत्तर आज की विज्ञान और तकनीकी प्रगति में छिपा हुआ है। अगर यह प्रयोग सफल होता है, तो हम एक ऐसे भविष्य की कल्पना कर सकते हैं, जहां ऊर्जा की कमी की कोई चिंता नहीं होगी, और पूरी दुनिया स्वच्छ और स्थिर ऊर्जा का उपयोग कर पाएगी।

चीन का कृत्रिम सूरज प्रोजेक्ट केवल विज्ञान का चमत्कार नहीं है, बल्कि मानवता के लिए एक नई उम्मीद भी है।

पृष्ठ 20 का शेष

इतना जबर-जुल्म सहन किया। उनका बचपन कैसा था? वे विद्यार्थी, नौजवान कैसे थे? उनकी जिंदगी कैसी थी? प्रत्येक लेख के अंत में उसके लेखक का फोन नंबर दिया गया है ताकि लेख पढ़ने के उपरांत यदि आपके मन में कोई प्रश्न, यज्ञासा आए तो आप लेखक से बात कर सकते हैं।

अंधविश्वास और चमत्कारों में विश्वास करने वालों में अमीर-गरीब, पढ़े-लिखे या अनपढ़, शहरी या देहाती कोई भी हो सकता है। अंधविश्वास अपने आप में एक बड़ी त्रासदी बन चुका है। हम अध्यापकों, साहित्य में रुचि रखने वालों, समाज देश की फिक्र करने वालों, बुद्धिजीवियों,नौजवानों से उम्मीद करते हैं कि आप इस पुस्तक को ज्यादा से ज्यादा हाथों तक पहुँचाने में हमारा पूर्ण सहयोग करेंगे।

-98555-30721
राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय समन्वय विभाग,
(तर्कशील सोसाइटी पंजाब)

अंत्येष्टि का एक तर्कसंगत तरीका

– डॉ. रणजीत (बेंगलूरु)
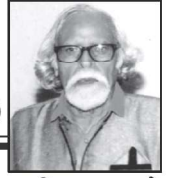
जब हम इस सवाल का सामना करते हैं कि अंत्येष्टि का सबसे तर्कसंगत और माननीय तरीका क्या है, तब हमारे सामने सबसे पहले इसके विभिन्न प्रचलित तरीके आते हैं। विभिन्न मानव-समूहों या धर्मावलंबियों में प्रचलित इन तरीकों में तीन स्पष्ट हैं। पहला हिन्दू तथा हिन्दोस्तान में जन्में धर्मों – बौद्ध, जैन, सिक्ख आदि में प्रचलित ''शव-दहन'', दूसरा ईसाई, इस्लाम और यहूदी जैसे अब्राहमिक धर्मों में प्रचलित मिट्टी में दफन करने का तरीका और तीसरा भारत के ईरानी मूल के अग्निपूजक पारसी लोगों में प्रचलित तरीका जिसमें अपने मृतक के शव को गिद्ध आदि पक्षियों के नोच खाने के लिए विशेष बने स्थानों पर छोड़ दिया जाता है। कुछ बौद्ध परम्पराओं में भी शव को गिद्धों के लिए खुले स्थानों पर रख दिया जाता है।

इससे मिलता-जुलता एक ओर तरीका है शव को नदी, तालाब, समुद्र आदि किसी जलाशय में छोड़ देना। समुद्र और बड़ी नदियों, जहाँ उन्हे शार्क, घड़ियाल आदि जलचर शीघ्र ही चट कर जाते हैं, में कोई हर्ज नहीं है, पर छोटे जलाशयों में उन्हें छोड़ना, उन्हें प्रदूषित करके अन्ततः मानव समाज को ही हानि पहुँचाता है, इसलिए उचित नहीं है।

अब हम मानव-समाज में प्रचलित दो सर्वाधिक स्वीकार्य तरीकों – दहन और दफन के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं पर आ सकते हैं। दहन, यदि विद्युत शवदाह गृह में किया जाय और उसके साथ जुड़े धार्मिक कर्मकांड छोड़ दिये जाय, तो उसमें कोई बुराई नहीं है। इसीलिए यह योरोप आदि के विकसित देशों के धर्मनिरपेक्ष मानववादी तर्कशील लोगों में अधिक प्रचलित हो रहा है। पर उसका प्रचलित परंपरागत रूप चिता में शव-दहन, न केवल वन-रक्षा और उसे फैलने वाले वायु-प्रदूषण की दृष्टि से भी गलत है, उसके साथ जुड़े हुए कर्मकांड जिसमे मृत्यु भोज जैसे अचानक आए परिवार पर खर्चे होना भी एक सवाल बनता है।

इसी तरह जमीन में गड्ढा खोद कर मनुष्य के शव को उसमें दफना देना, माटी के इस पुतले को माटी में ही मिला देना, एक सहज स्वाभाविक कार्य है। वहीं घुल मिल जाय तो प्रदूषण की भी कोई समस्या नहीं है। समस्या तब पैदा होती है, जब उस पर कोई समाधि या मकबरा खड़ा किया जाय, यदि प्रत्येक मृतक के लिए मकबरा खड़ा किया तो धरती छोटी पड़ जाएगी। विभिन्न देशों के राष्ट्राध्यक्षों, महान लेखकों, विचारकों, वैज्ञानिकों, कलावंतों और अन्य संस्कृति कर्मियों की कब्रों पर स्मारक बनाए जाने चाहिए। ये नयी पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत होंगे। तो सामान्य मृतकों के लिए क्या किया जाना चाहिए? उन्हें बाबा आम्टे के आनन्द-वन (कुष्ठ-आश्रम) की तरह सड़कों के किनारे दफ़नाना चाहिए और उन पर एक-एक पेड़ लगा दिया जाना चाहिए। शव उन पेड़ों के लिए खाद बन कर सार्थक हो उठेगा, और वे पेड़ ही उन जनों के स्मारक भी हो जाएँगे। खेतों के मालिक अपने खेत में अपने परिजनों को दफनाएँ, सामान्य जन सड़कों के किनारे और संसार में हरियाली बढ़ाएँ तो यह तरीका विद्युत-दहन से भी अधिक पर्यावरण-रक्षक और मानव-हितैषी ठहरेगा। मानव-जाति के लिए अधिक तर्कसंगत और वरणीय।

मृत्य के बाद भी मानव-शरीर को सार्थक करने का एक तरीका, जो पिछली कुछ दशाब्दियों में विवेकशील लोगों के बीच लोकप्रिय हुआ है, उसकी चर्चा किये बिना, अन्त्येष्टि पर यह लेख अधूरा ही रहेगा। वह है किसी दुर्घटना में ब्रेनडेड व्यक्ति के अन्य रोगियों के काम आने लायक अंगों का उसके परिजनों द्वारा प्रदान करना और किसी भी व्यक्ति द्वारा किसी चिकित्सा-संस्थान को मृत्यु से पूर्व वसीयत लिख कर अपनी पूरी देह समर्पित कर देना। सन 1948 में भारत में एनाटोमी एक्ट पास किया गया, जिसके अनुसार कोई भी प्रदानदाता चिकित्सा और तत्संबंधी शोध के लिए स्थापित चिकित्सा-संस्थानों को अपना शरीर वसीयत कर के प्रदान कर सकता था। इन कानूनों में यह भी प्रावधान है कि ऐसी लावारिस लाश को, जिस पर 48 घंटे तक कोई परिवार दावा न करे, शोध कार्य के लिए कब्जे में लिया जा सकता है। प्रारंभ में कुछ राजनेताओं ने, जिनमें भूतपूर्व मुख्यमंत्री ज्योति बसु के शव को मैडीकल

शेष पृष्ठ 30 पर

वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास से सामाजिक अंधविश्वास हटेंगे

– डॉ. दिनेश मिश्र

शासकीय महाविद्यालय कसडोल में व्याख्यान

''किसी भी व्यक्ति को बचपन से ही अक्षर ज्ञान के साथ सामाजिक अंधविश्वासों व कुरीतियों के संबंध में सचेत किया जाना चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास से विभिन्न अंधविश्वासों व कुरीतियों का निर्मूलन संभव है, व्यक्ति को अपनी असफलता का दोष ग्रह-नक्षत्रों पर न थोपने की बजाय स्वयं की खामियों पर विश्लेषण करना चाहिए'', उक्त विचार दौलत राम शर्मा शासकीय महाविद्यालय कसडोल द्वारा आयोजित व्याख्यान में अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष नेत्र विशेषज्ञ डॉ. दिनेश मिश्र ने व्यक्त किये।

डॉ. मिश्र ने अंधविश्वास एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आयोजित कार्यक्रम में कहा- हमारे देश के विशाल स्वरूप में अनेक जाति, धर्म के लोग हैं जिनकी परंपराएँ व आस्था भी भिन्न-भिन्न है लेकिन धीरे धीरे कुछ परंपराएँ, अंधविश्वासों के रूप में बदल गई है। जिनके कारण आम लोगों को न केवल शारीरिक व मानसिक प्रताड़ना से गुजरना पड़ता है बल्कि ठगी का शिकार होना पड़ता है। कुछ चालाक लोग आम लोगों के मन में बसे अंधविश्वासों, अशिक्षा व आस्था का दोहन कर ठगते हैं। उन अंधविश्वासों व कुरीतियों से लोगों को होने वाली परेशानियों व नुकसान के संबंध में समझा कर ऐसे कुरीतियों का परित्याग किया जा सकता है। विभिन्न सामाजिक व चिकित्सा के संबंध में व्याप्त अंधविश्वासों पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा देश के विभिन्न प्रदेशों में अनेक प्रकार के अंधविश्वास प्रचलित हैं जो न केवल समाज की प्रगति में बाधक हैं बल्कि आम व्यक्ति के भ्रम को बढ़ाते हैं, उसके मन की शंका-कुशंका में वृद्धि करते हैं।

डॉ. मिश्र ने कहा : छत्तीसगढ़ में टोनही के नाम पर महिला प्रताडऩा की घटनाएँ आम है जिनमें किसी महिला को जादू-टोना करके नुकसान पहुँचाने के संदेह में हत्या, मारपीट कर दी जाती है जबकि कोई नारी टोनही या डायन नहीं हो सकती, उसमें ऐसी कोई शक्ति नहीं होती जिससे वह किसी व्यक्ति, बच्चों या गाँव का नुकसान कर सके। जादू-टोने के आरोप में महिला प्रताड़ना रोकना आवश्यक है। अंधविश्वासों के कारण होने वाली टोनही प्रताडऩा/बलि प्रथा,तथा सामाजिक बहिष्कार जैसी घटनाओं से भी मानव अधिकारों का हनन हो रहा है। अंधविश्वासों एवं सामाजिक कुरीतियों के निर्मूलन के लिये प्रदेश में पिछले 29 वर्षों से कोई नारी टोनही नहीं अभियान चलाया जा रहा है।

डॉ. मिश्र ने कहा कि समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास अतिआवश्यक है। कई बार लोग चमत्कारिक सफलता प्राप्त करने की उम्मीद में ठगी के शिकार हो जाते हैं, जबकि किसी भी परीक्षा, साक्षात्कार, नौकरी प्रमोशन के लिए कठोर परिश्रम व सुनियोजित तैयारी आवश्यक है। तुरन्त सफलता के लिए किसी चमत्कारिक अँगूठी, ताबीज, तंत्र-मंत्र कथित बाबाओं के चक्कर में फँसने की बजाय परिश्रम का रास्ता अपनाना ही उचित है।

डॉ. मिश्र ने कहा : समाज में जादू-टोना, टोनही आदि के संबंध में भ्रामक धारणाएँ काल्पनिक है, जिनका कोई प्रमाण नहीं है। पहले बीमारियों के उपचार के लिए चिकित्सा सुविधाएँ न होने से लोगों के पास झाड़-फूँक व चमत्कारिक उपचार ही एकमात्र रास्ता था, लेकिन चिकित्सा विज्ञान के बढ़ते कदमों व अनुसंधानों ने कई बीमारियों, संक्रामकों पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया है तथा कई बीमारियों के उपचार की आधुनिक विधियाँ खोजी जा रही है। बीमारियों के सही उपचार के लिए झाड़-फूँक, तंत्र-मंत्र की बजाय प्रशिक्षित चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए। कोरोना काल में भी आधुनिक चिकित्सा के सहयोग से महामारी पर नियंत्रण पाया जा रहा है .

डॉ मिश्र ने कहा : आमतौर पर अंधविश्वासों के कारण होने वाली घटनाओं की शिकार महिलाएँ ही होती है। अपनी सरल प्रवृत्ति के कारण से सहज ही चमत्कारिक दिखाई देने वाली घटनाओं व अफवाहों पर विश्वास कर लेती है व ठगी व प्रताडऩा की शिकार होती है, जिससे भगवान दिखाने के नाम पर रूपये, गहने दुगुना करने के नाम पर ठगी की जाती है।

शेष पृष्ठ 30 पर

जेम्स वॉट

– डॉ. हरीश मल्होत्रा

जेम्स वाट का जन्म 19 जनवरी 1736 को ग्रीनॉक, रेनफ्रशायर स्कॉटलैंड में हुआ था। वह अपने पाँच भाई–बहनों में सबसे बड़े थे। जेम्स की माँ एक जाने–माने परिवार से संबंध रखती थी। वह सुशिक्षित एवं 'संस्कारवान' महिला थी। जबकि जेम्स के पिता एक ठेकेदार और पानी के जहाज के मालिक थे। जेम्स के दादा थॉमस वाट गणित के शिक्षक थे।

जेम्स को शुरुआत में उनकी माँ ने घर पर ही पढ़ाया और बाद में ग्रीनॉक डामर स्कूल में दाखिला लिया। स्कूल में उन्होंने गणित विषय पर अच्छी पकड़ दिखाई, जबकि लैटिन और ग्रीक में उनका ज्यादा मन नहीं था और इसलिए वे इन भाषाओं में ज्यादा रुचि नहीं दिखा सके।

ऐसा कहा जाता है कि खराब स्वास्थ्य ने उनका साथ कभी नहीं छोड़ा और बचपन में वह अक्सर बीमार रहते थे। इसके अलावा वे जीवन भर सिरदर्द की बीमारी से पीड़ित रहे। वह अवसाद के भी शिकार थे। स्कूली शिक्षा के बाद उन्होंने अपने पिता के व्यवसाय के लिए उनकी कार्यशालाओं में काम किया जहाँ उन्होंने इंजीनियरिंग में कई मॉडल तैयार किए। जब उनके पिता का व्यवसाय बंद हो गया, तो जेम्स ग्लासगो चले गये और वहाँ एक कारखाने में गणना उपकरण बनाने लगे।
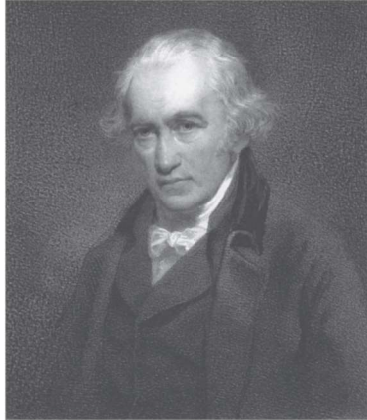
बचपन में ही जेम्स वॉट ने सोचा था कि वह भविष्य में जरूर कुछ नया और अलग करेंगे। वह बचपन से ही दूसरे बच्चों से अलग और गंभीर थे। वह खेल भी खेलता था जिसमें उसकी माँ चूल्हे के पास बैठी काम कर रही होती थी और जेम्स चूल्हे पर पानी की केतली को बड़े ध्यान से देख रहा होता था। उसने देखा कि केतली से खौलते पानी की भाप बार–बार केतली का ढक्कन उठा रही थी। उसने केतली पर कुछ डाला और थोड़ी देर बाद भाप तेज होने पर ही ढक्कन उठाया। इससे उन्होंने पता लगाया कि भाप में कितनी शक्ति होती है।

जब जेम्स 18 वर्ष के थे, तब उनकी मां की मृत्यु हो गई और उनके पिता का स्वास्थ्य भी गिरने लग गया। वह लंदन चले गए और 1755/56 में एक वर्ष के लिए एक उपकरण निर्माता के रूप में प्रक्षिशु बने। वहाँ से लौटकर वह व्यापारिक शहर ग्लासगो में रुके ताकि वहाँ औजार बनाने का व्यापार कर सकें। लेकिन वह व्यापार की बारीकियों से अनभिज्ञ थे और वहाँ उनका कोई जानकार भी नहीं था, लेकिन एक पूर्व शिक्षक ने उसे व्यापार में असफलता से बचाया था, जिसने उसे सलाह दी कि वह घूमते–फिरते उपकरण बनाने का काम करें। उन्हीं दिनों जमैका से कुछ उपकरण अंतरिक्ष की खोज के लिए ग्लासगो विश्वविद्यालय में आए थे, जिन्हें अलेक्जेंडर मैकफारलेन ने विश्वविद्यालय को भेंट किया था। जेम्स वाट ने उन उपकरणों को उपयोग योग्य बनाया और उनमें जो भी कमियों थीं, उन्हें दूर कर दिया। इन उपकरणों को बाद में मैकफारलेन वेधशाला में उपयोग में लाया गया। अब विश्वविद्यालय के तीन प्रोफेसरों ने उन्हें विश्वविद्यालय में एक कार्यशाला स्थापित करने की अनुमति दे दी। 1757 में भौतिक विज्ञानी और रसायन जोसेफ ब्लैक और एडम स्मिथ, दोनों प्रोफेसर उनके दोस्त बन गए। सबसे पहले उन्होंने विश्वविद्यालय के विज्ञान संबंधी उपकरणों को ठीक किया और उसे क्रियाशील बनाया। दूरबीन, बैरोमीटर, वजन मापने की मशाले आदि के अलावा विश्वविद्यालय की कई अन्य वस्तुएँ भी थीं।

कभी–कभी यह कहा जाता है कि उन्हें ग्लासगों में पैर जमाने के लिए संघर्ष करना पड़ा, लेकिन इतिहासकार लम्सडेन ने इस दावे का खंडन करते हुए कहा कि उनका काम अच्छी तरह से किया गया था और उनकी क्षमता को देखते हुए, उन्हें हेमरमेन कॉर्पोरेशन का सदस्य बनाया गया था।

1759 में उन्होंने जॉन क्रेग के साथ साँझेदारी की। जॉन क्रेग एक व्यापारी और वास्तुकार थे। यह अन्य चीजों के

अलावा संगीत वाद्ययंत्र और खिलौने बेचते थे। यह संयुक्त उद्यम 6 वर्षों तक चला और उन्होंने इस उद्यम में काम करने के जिए 16 श्रमिकों को नियुक्त किया। 1765 में जॉन केग की मृत्यु हो गई। उनके एक कर्मचारी, एलेक्स गार्डनर ने व्यवसाय खरीदा, जो 20वीं सदी तक जारी रहा। 1764 में जेम्स वाट ने अपनी चचेरी बहन मार्गरेट (पैगी) मिलर के साथ शादी कर ली। उनके पाँच बच्चे हुए। मार्गरेट की 1773 में प्रसव के दौरान मृत्यु हो गई। 1777 में, जेम्स में ग्लासगो के डाई निर्माता की बेटी एन मैकग्रेगर से शादी की। इस शादी में उनके दो बच्चे हुए। ऐन की मृत्यु 1832 में हुई। 1777 से 1790 तक, जेम्स बर्मिंघम के रीजेंट पैलेस में रहे।

जहाँ तक ताप इंजन के आविष्कार की बात है, तो इसका आविष्कार जेम्स वाट ने नहीं किया था, बल्कि उन्होंने न्यूकोमिन इंजन में अलग से कंडेंसर लगाकर उस इंजन को बहुत अच्छा बना दिया था। उन्होंने भाप इंजन में एक कंडेंसर लगाया, जिससे पिस्टन सिलेंडर से नीचे की ओर चला गया। अब इसमें पानी डालने की जरूरत नहीं थी। फिर, शून्य स्थिति बनाए रखने के लिए, जेम्स ने पिस्टन पैकिंग एक वायु पंप स्थापित करके उसे मजबूत किया। घर्षण को रोकने के लिए तेल डाला और एक भाप बॉक्स स्थापित किया, जो ऊर्जा हानि को रोकता है। इस प्रकार जेम्स वाट इंजन विकसित करने वाले पहले आविष्कारक बन गये।

ऊर्जा के थर्मोडायनामिक्स को समझने के लिए कि ताप और भाप कैसे काम करते हैं। इस पर उन्होंने कई प्रयोग किए और इसके लिए उन्होंने एक केतली में पानी को उबलता हुआ देखा। ये सारी बाते उनकी डायरियों से पता चलती हैं।

1709 में जेम्स के मित्र जॉन रॉबियन ने उनसे उस काम पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कहा जिसका उपयोग भाप ऊर्जा के लिए किया जा सके। जबकि न्यूकॉमिन इंजन का उपयोग पिछले 50 वर्षों से खदानों से पानी निकालने के लिए किया जा रहा था, लेकिन इसमें कोई सुधार या बदलाव नहीं किया गया। एक मित्र के आग्रह पर, जेम्स ने भाप के साथ प्रयोग करना शुरू कर दिया, भले ही उन्होंने कभी भाप इंजन को क्रियाशील होते नहीं देखा था। इस कार्य में उन्हें कई बार असफलता मिली, लेकिन वे लगे रहे और जो कुछ भी मिला उसे पढ़ा। उन्होंने गुप्त ऊष्मा आदि तापीय ऊर्जा के महत्व को समझा जो एक समान तापमान बनाए रखती है और छोड़ती है। उनके दोस्त जोसेफ ब्लैक को इसके बारे में कई साल पहले पता चल गया था लेकिन जेम्स को इसकी जानकारी नहीं थी। उस समय आप इंजन का डिजाइन अपनी प्रारंभिक अवस्था में था और केवल 100 साल बाद ही थर्मोडायनामिक्स खोजा जा सका।

1763 में ग्लासगो विश्वविद्यालय में जेम्स न्यूकॉमिन जब इंजन की मुरम्मत के लिए कहा गया, तो इसकी मुरम्मत की गई, लेकिन यह अभी भी ठीक से नहीं चल रहा था। उन्होंने बहुत सारे प्रयोग किये और मई 1765 में उन्होंने भाप इंजन की समस्या का समाधान निकाला। उसी वर्ष के अंत में, उन्होंने एक भाप इंजन विकसित किया, लेकिन इसे विकसित करने के लिए धन की आवश्यकता थी। उनके दोस्त जोसेफ ब्लैक ने कुछ पैसों से मदद की। लेकिन अधिक वित्तीय सहायता "केयर्न आयरन वर्क्स" के संस्थापक जॉन रोबक से मिली। यह फालीकिर्क के पास है। जॉन रोबक बोनेस में किनील हाऊस में रहते थे और इस घर के बगल में ही एक घर में जेम्स वाट भाप इंजन को बेहतर बनाने में लगे रहते थे। फिर गर्व की बात और सीखने वाली बात यह है कि जिस जगह और जिन चीजों पर उन्होंने प्रयोग किए थे, वे आज भी संरक्षित है।

उस समय सबसे कठिन काम पिस्टन और सिलेंडर बनाना था। ऐसे लोहार थे जो लोहे का काम करते थे, लेकिन पिस्टन और सिलेंडर का बारीकियों से अनभिज्ञ थे। वे आज के मैकेनिकों जैसे नहीं थे। जेम्स वाट ने अपने आविष्कार को पेटेंट कराने पर बहुत पैसा खर्च किया। परिस्थितियाँ ऐसी बनीं कि जेम्स को पहले मजबूरन एक सर्वेक्षक की नौकरी करनी पड़ी और फिर आठ साल सिविल इंजीनियरिंग की। जॉन रोबक दिवालिया हो गया और मैथ्यू बोल्टन ने उसके काम के अधिकारों का पेटेंट करा लिया। बोल्टन ने इसे खरीदा। मैथ्यू बोल्टन सोहो मैन्युफैक्चरिंग वर्क्स, जो बर्मिंघम के पास स्थित है। यह बात 1775 की है और बाद में उन्होंने पेटेंट को 1800 तक बढ़ा दिया। यह मैथ्यू बोल्टन ही थे, जिन्होंने जेम्स वाट को दुनिया में लोहे का काम करने वाले सर्वश्रेष्ठ लोहार दिए। फिर जॉन विल्किंसन ने उसकी मदद की।

यह बिराशम में, जो बेस्सीम नॉर्थ वेल्स के पास है, तोपें बनाया करता था। जेम्स वाट और मैथ्यू बोल्टन की साँझीदारी

एक बड़ी सफलता थी और यह साँझेदारी अगले 25 वर्षों तक चली।

1776 में, इंजनों का व्यावसायिक रूप से उत्पादन किया गया और पंपों को बिजली देने के लिए उपयोग किया गया। अगले पाँच वर्षों तक, जेम्स वाट ने अपना अधिकांश समय इंजिन बनाने में बिताया। इंजनों का उपयोग कॉर्नवाल में, जगहों से पानी बाहर निकालने के लिए किया जा रहा था। ये पहले इंजन जेम्स वाट और मैथ्यू बोल्टन की कंपनी द्वारा नहीं बनाए गए थे, बल्कि जेम्स बाट द्वारा प्रदान की गई ड्राइंग पर आधारित थे, जिन्होंने वहाँ एक सलाहकार इंजीनियर के रूप में काम किया था। जेम्स वाट और मैथ्यू बोल्टन को अपना वार्षिक वेतन मिलता था। न्यूकॉमिन इंजन की तुलना में उन्होंने इन इंजनों से जितना कोयला बचाया, वह लगभग एक तिहाई था।

मैथ्यू बोल्टन ने जेम्स को पिस्टन में सुधार करने की सलाह दी, ताकि इंजन का उपयोग बुनाई मिलों और पीसने वाली मशीनों के लिए किया जा सके।

अगले 6 वर्षों में जेम्स वाट ने इंजन में कई सुधार किए और उन्होंने 1781 और 1782 में इनमें से दो ओर सुधारों का पेटेंट कराया। इसके बाद इसमें ओर भी सुधार किये गये। 1784 में एक ओर पेटेंट दिया गया, उसके बाद 1788 में एक ओर पेटेंट दिया गया। अब जो एक इंजन बना, यह न्यूकॉमिन इंजन से 5 गुना बेहतर था।

1781 में एडवर्ड बुल ने मैथ्यू बोल्टन और जेम्स वाट के लिए कॉर्नवाल में इंजन बनाना शुरू किया। 1792 में उन्होंने अपने खुद के डिजाइन के इंजन बनाए जिसमें कंडेसर अलग था। जिसके साथ जेम्स वाट के पेटेंट के साथ छेड़छाड़ की गई थी। उसी समय, दो भाइयों, जाबेज कार्टर हॉर्नब्लोअर और जोनाथन हॉर्नब्लोअर जूनियर ने भी इंजन बनाना शुरू किया। इसी तरह कई अन्य लोगों ने भी किया और खदान मालिकों ने जेम्स वाट और मैथ्यू बोल्टन को भुगतान करने से इन्कार कर दिया। ये बात 1795 की है। खदान मालिकों की ओर इनके 21000 पाउंड बनते थे, जो 2019 में 2,190000 पाउंड के बराबर थे। खदान मालिकों ने केवल 2500 पाउंड का भुगतान किया।

1793 में, जेम्स वाट ने सबसे पहले एडवर्ड बुल पर मुकदमा दायर किया और पहला फैसला जेम्स के पक्ष में आया, लेकिन पूर्ण फैसले के लिए एक ओर मुकदमे की आवश्यकता थी। लेकिन इस निर्णय का मतलब यह था कि कोई ओर इंजन नहीं बना सकता था। अगले वर्ष जो निर्णय हुआ, वह कोई सही राह तो नहीं दिखा सका, लेकिन दूसरों पर इंजन न बनाने की बंदिश कायम रही। अन्य लोगों ने जेम्स वाट के साथ संधियाँ की, लेकिन जोनाथन हॉर्नब्लोअर अड़े रहे। जब उन पर मुकदमा चलाया गया, तो 1799 में चार न्यायाधीशों ने जेम्स वाट के पक्ष में फैसला सुनाया। मैथ्यू बोल्टन और जेम्स वाट के मित्र जॉन विल्किंसन ने 20 इंजन बनाए, लेकिन अपने दोस्तों को उनके बारे में भनक न लगने दी। ऑन विल्किंसन की इस ''चुसती'' से उन्होंने 1796 में समझौता कर लिया था। जो भी पैसा इन ''चुस्तियों'' के लिए जेम्स वाट और मैथ्यू बोल्टन को मिलना था, वह उन्हें कभी नहीं मिला, लेकिन मध्यस्थता के माध्यम से कई विवादों का निपटारा किया गया। मुकदमों में बहुत खर्च हुआ। लेकिन आखिर में सारे फैसले उनकी कंपनी के पक्ष में गए।

1780 से पहले ऐसी कोई प्रतिलिपि बनाने वाली मशीनें नहीं थीं, जो अक्षरों या रेखाचित्रों की प्रतिलिपियाँ बना सकें। जेम्स ने 1779 में यहाँ प्रयोग करना शुरू किया, लेकिन 1780 में उन्होंने जो कुछ भी खोजा, उसका पेटेंट करा लिया, जबकि अभी भी इसमें ओर सुधार की आवश्यकता थी। जेम्स वाट ने मैथ्यू बोल्टन और जेम्स कीर के साथ एक और संयुक्त उद्यम बनाया और इसका नाम जेम्स वाट एंड कंपनी रखा। मैथ्यू बोल्टन ने इसमें निवेश किया और कंपनी की देखरेख के लिए जेम्स कीर को प्रबंधक के रूप में नियुक्त किया गया।

मैथ्यू बोल्टन और जेम्स वाट ने अपने-अपने हिस्से 1794 में अपने बेटों को दे दिए। इस मशीन ने इतनी ज्यादा सफलता दी कि बीसवीं सदी तक इसका उपयोग कार्यालयों में भी बड़ी मात्रा में होने लगा था। जेम्स वाट को बचपन से ही रसायन विज्ञान में भी रुचि थी और जब वह 1786 में पेरिस में थे, वहाँ उन्होंने बर्थीलिट द्वारा किया गया प्रयोग देखा कि क्लोरीन का उत्पादन कैसे किया जा सकता है। जेम्स ने पहले ही यह खोज कर ली थी कि क्लोरीन युक्त तरल ब्लीच के रूप में कार्य करता है और इस ब्लीच का इस्तेमाल कपड़ों के लिए किया जा सकता है। जब उन्होंने इस बात का खुलासा

किया, इसे अखबारों में प्रकाशित करने के बाद कई अन्य लोगों की भी इसमें रुचि जगी। जेम्स वाट के समकालीनों ने इसका लाभ उठाया, इसकी गलतियों दूर कीं और आगे निकल गए। जेम्स ने इस दौड़ से किनारा कर लिया और चार्ल्स टेनेंट ने 1799 में ब्लीचिंग पाउडर का पेटेंट कराया, जो व्यावसायिक तौर पर काफी सफल रहा।

1794 में थॉमस बेडेस को कहा गया कि वह गैसों को संरक्षित करने के लिए सिलेंडर तैयार करे, जो कि बिस्टल के हॉटवेल्स में न्यूमेटिक इंस्टीट्यूशन के लिए चाहिए थे। जेम्स कई गैसों के साथ प्रयोग करता रहा, लेकिन 1797 तक इन गैसी का चिकित्सा प्रयोजनों के लिए उपयोग में एक ठहराव पर आ गया।

जेम्स वाट के पास थ्योरी को प्रैक्टिकल में बदलने की महारत थी और इसीलिए महान वैज्ञानिक हम्फी डेवी ने उनके बारे में कहा था, ''जो लोग जेम्स वाट को एक महान प्रैक्टिकल, मैकेनिक समझते हैं, वे उन्हें गलत समझते हैं, वे तो एक प्राकृतिक दार्शनिक हैं। वह एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे जिन्होंने दर्शन, सिद्धांत और व्यावहारिकता को एक साथ जोड़ दिया।''

इसीलिए जेम्स वाट को एक आविष्कारक, मैकेनिकल इंजीनियर और रसायनज्ञ के रूप में जाना जाता है। उन्हें ब्रिटिश में ''औद्योगिक क्रांति'' का जनक भी कहा आता है। भाप इंजन का उपयोग न केवल ब्रिटेन में बल्कि अन्य देशों में भी किया जाता है। यह भाप इंजन ही है, जिसने दुनिया को रेलवे से परिचित कराया और उद्योगविहीन लोगों के जीवन में क्रांति ला दी। औद्योगिक क्रांति लाने के लिए जेम्स वाट का उस समय के लोग बहुत सम्मान करते थे। वह लूनर सोसाइटी के एक बहुत ही महत्वपूर्ण सदस्य थे और लोग हमेशा उनके और उनकी कंपनी के साथ बातचीत करने के अवसरों की तलाश में रहते थे। वह सदैव अपना जान बढ़ाने में रुचि रखते थे। वह अपने काम के सहकर्मियों और दोस्तों के लिए एक दोस्त थे और उनके रिश्ते हमेशा आजीवन बने रहेंगे।

जेम्स वाट संपर्क में रहने में माहिर थे। जब वे कॉर्नवाल में थे, तो उन्होंने मैथ्यू बोल्टन को सप्ताह में कई बार लंबे पत्र लिखे। उन्होंने रॉयल सोसाइटी के दार्शनिक लेनदेन जैसे अपने शोध के परिणामों को प्रकाशित करने या प्रकाशित करने से परहेज किया। उन्हें अपने विचारों को पेटेंट में शामिल करना पसंद था। वह एक अच्छे ड्राफ्ट्समैन भी थे। उन्हें व्यावसायिक चालाकियों की बहुत कम समझ थी और इन चीजों के बारे में निर्णय लेने के लिए किसी के साथ बातचीत करने में वह बिल्कुल भी अच्छे नहीं थे, खासकर भाप इंजन के मामले में। उन्हें इससे इतनी नफरत थी कि एक बार 1772 में उन्होंने विलियम स्मॉल को एक पत्र लिखा था–''मैं किसी से हिसाब–किताब चुकाने और उनके ऊपर–नीचे के बीच फैसला करने के बजाय भरी हुई तोप के सामने खड़ा होना पसंद करूंगा। वे सेवानिवृत्त होने तक अपने वित्तीय मामलों को लेकर चिंतित और परेशान रहते थे। उनके स्वास्थ्य ने कभी उनका साथ नहीं दिया और वे अक्सर अवसाद और भयानक सिरदर्द से पीड़ित रहते थे।

जब मैथ्यू बोल्टन और जेम्स वाट ने एक सांझेदारी बनाई, तो उन्होंने इंजन खरीदने वाले ग्राहकों की इमारतों में इंजन ड्राइंग की देखरेख की, क्योंकि इंजन के हिस्से स्वयं कभी नहीं बनाए होते थे और फिर इंजन लगाने में भी सहायता करते थे। जेम्स वाट अधिकांश काम अपने हार्पर्स हिल, बर्मिंघम वाले घर पर करते थे, जबकि मैथ्यू बोल्टन सोही कारखाना में काम किया करते थे। धीरे–धीरे उन्होंने इंजन के पुर्जे बनाने का काम शुरू कर दिया और 1795 में सोहो कारखाने से एक मील दूर बर्मिंघम नहर के किनारे एक इमारत खरीदी, ताकि वहाँ इंजन बनाया जा सके। ''सोहो फाउंड्री'' का अधिग्रहण 1796 में किया गया था। जेम्स के बेटे ग्रेगरी और जेम्स जूनियर पूरे बिजनेस को अच्छे से चलाने में लगे हुए थे। जेम्स वाट 1800 में सेवानिवृत्त हुए और उस समय तक उनकी कंपनी ने केवल 41 इंजन बनाए थे। उसी वर्ष मैथ्यू बोल्टन के साथ उनकी सांझेदारी और मूल पेटेंट समाप्त हो गया। इस प्रसिद्ध सांझेदारी का नाम अब उनके बेटों मैथ्यू रॉबिन्सन बोल्टन और जेम्स बाट जूनियर के नाम पर रखा गया। उनकी कंपनी के एक बहुत पुराने इंजीनियर विलियम मर्डोक भी कंपनी में भागीदार बन गए और कंपनी ऊँचाइयों पर पहुँच गई। सेवानिवृत्ति के बाद भी, जेम्स वाट ने शोध करना जारी रखा और हँड्सवर्थ और स्टैफोर्डशायर में अपने घर पर कार्यशालाएँ स्थापित की। कई अन्य आविष्कारों के अलावा उन्होंने कई नकल मशीनों का आविश्कार किया, जो पूरी तरह से काम करती थीं, जो मूर्तियों की नकल कर सकती थी और उन्होंने कभी पेटेंट नहीं कराया।

उन्होंने सबसे पहले अपनी मशीन से अपने मित्र प्रोफेसर एडम स्मिथ के सिर की मूर्ति बनाई। उन्होंने सिविल इंजीनियरिंग में अपनी रुचि बनाए रखी और कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं के लिए सलाहकार के रूप में उनसे संपर्क किया गया। उन्होंने एक कुंडा पाइप का सुझाव दिया जिसका उपयोग क्साइड ग्लासगों में पानी निकालने के लिए किया जा सकता है। जेम्स वाट और उनकी दूसरी पत्नी ने फ्रांस और जर्मनी का एक साथ दौरा किया और मिडवेल्स में हाउस खरीदा।

1816 में, उन्होंने पैडल-स्टीमर "COMET" में बैठकर अपने गृहनगर ग्रीनॉक का दौरा किया। यह भी उनकी अपनी एक खोज थी। 25 अगस्त 1819 को 83 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई। उन्हें मेरी चर्च कब्रिस्तान में दफना दिया गया। चर्च को ओर बड़ा किया गया और श्मशान अब चर्च का हिस्सा है और उसकी कब्र चर्च की सीमा के भीतर है।

जेम्स वाट 1763 में स्कॉटिश फ्रीमेसनरी के एक सदस्य थे। यह लॉज 1810 में बंद कर दिया गया था। लेकिन उनके अपने शहर में मेसोनिक लॉज का नाम उनके नाम पर रखा गया है-लॉज जेम्स वाट, नं. 1215।

विनियम मडॉक ने 1777 में जेम्स वाट और मैथ्यू बोल्टन की कंपनी में एक इंजीनियर के रूप में काम करना शुरु किया। उन्होंने कंपनी के विकास में बहुत योगदान दिया और कई महत्वपूर्ण खोजें भी की।

जेम्स वाट ने सन एंड प्लैनेट गियर, जो कि भाप इंजन के लिए आवश्यक था, का पेटेंट 1781 में कराया और 1784 में स्टीम लोकोमोटिव का पेटेंट कराया। यह ही कहा जाता है कि ये दोनों खोजें मर्डोक की थी, लेकिन मर्डोक ने कभी इनका समर्थन नहीं किया। बल्कि, 1810 में, जब उन्हें फर्म में भागीदार बनाया गया, तो वे सेवानिवृत्ति तक 20 वर्षों तक वहाँ रहे और सेवानिवृति के समय उनकी आयु 76 वर्ष थी।

जेम्स वाट को कई सम्मान भी मिले जैसे 1784 में उन्हें रॉयल सोश ऑफ एडिनबर्ग का फेलो बनाया गया। 1787 में उन्हें रॉटरडैम के प्रायोगिक के लिए बटावियन सोसायटी का सदस्य चुना गया। 1789 में उन्हें स्मेटोनियन सोसाइटी ऑफ सिविल इंजीनियर्स का सदस्य बनाया गया। 1806 में, ग्लासगो विश्वविद्यालय ने उन्हें डॉक्टर ऑफ लॉ की मानद उपाधि से सम्मानित किया। 1814 में फ्रांसीसी अकादमी ने उन्हें तत्काल सहयोगी बनाया।

1889 में, ब्रिटिश एसोसिएशन की दूसरी कांग्रेस ने भाप इंजन के आविष्कार के बाद ऊर्जा के माप को ''वाट'' नाम दिया। 1960 में, वजन और माप के ग्यारहवे सामान्य सम्मेलन ने ''वाट'' नाम को बिजली की इकाइयों की अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली (या ''एस.एल.'') के रूप में अपनाया। यही कारण है कि बिजली के बल्ब को 'वाट' के रूप में जाना जाता है। यह 60 वाट का होता है या 100 वाट या शून्य वाट।

29 मई 2009 को, बैंक ऑफ इंग्लैंड ने मैथ्यू बोल्टन और जेम्स वाट की फोटो 50 पाउंड के नोट पर उकेरी थी। ये दोनों फोटो साथ-साथ थी, जेम्स वॉट के इंजन और मैथ्यू बोल्टन की सोहो मैन्युफैक्चरी की। मैथ्यू बोल्टन की फोटो के साथ लिखा है : "I sell here Sir, what all the world desire to have Power (Boulton)." [मैं यहाँ बेचता हूँ श्रीमान, पूरी दुनिया क्या चाहती है -बिजली (बोल्टन)) और I can think of nothing else but this machine. (Watt)

''मैं इस मशीन के अलावा ओर कुछ नहीं सोच सकता। (वाट)''

यह दूसरी बार हुआ कि स्कॉटलैंड के जन्मे-पले व्यक्ति की फोटो बैंक ऑफ इंग्लैंड के नोट पर मुद्रित हुई। सबसे पहले 2007 में एडम स्मिथ की फोटो 200 पाउंड के नोट पर छपी थी।

उनकी मृत्यु के बाद, जेम्स वाट को सेंट मैरी चर्च, हैंड्सवर्थ में दफनाया गया था। यह चर्च मेरे घर के बहुत करीब है और पंद्रह मिनट में पैदल चलकर पहुँचा जा सकता है। यह चर्च बर्मिंघम शहर में हैंड्सवर्थ पार्क के बगल में है।

गैरेट रूम कार्यशाला, जहाँ जेम्स वाट सेवानिवृत्ति में काम करते थे, को बंद कर दिया गया था। इसे 1853 में खोला गया जब उनके जीवनी लेखक जे. पी. मुइरहेड ने उसे देखना चाहा। उसके बाद भी उसे केवल विशेष अवसरों पर ही खोला जाता था. लेकिन उसकी कोई भी चीज आगे-पीछे नहीं की गई और कमरे को एक 'पवित्र' स्थान के रूप में माना जाता था। उनका सारा सामान पेटेंट कार्यालय में रखने का प्रस्ताव भी रखा गया, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। जब 1924 में उस घर को ध्वस्त कर दिया गया, तो जेम्स का कमरा और सामान विज्ञान संग्रहालय को दे दिया गया, जहाँ उन्होंने उसके सामान

के साथ एक समान कमरा रखा। इस प्रदर्शनी को देखने के लिए कई वर्षों तक पर्यटक आते रहे। बाद में उस गैलरी को बंद कर दिया गया। इसके बाद मार्च 2011 में उन्हें नवनिर्मित विज्ञान संग्रहालय में जनता के सामने प्रदर्शित किया गया, जिसका नाम ''जेम्स वाट और हमारी दुनिया'' रखा गया।

जेम्स वाट की एक प्रतिमा उनके जन्मस्थान स्कॉटलैंड के सीनॉक में लगाई गई है। इसलिए, क्षेत्र में कई स्थानों और सड़कों का नाम उनके नाम पर रखा गया है और एक विशेष वाट मेमोरियल लाइब्रेरी 1816 में शुरू की गई थी जब जेम्स वाट की विज्ञान से संबंधित किताबें वहाँ दान की गई थी। यह पुस्तकालय बाद में जेम्स वाट कॉलेज में बदल गया जिसे 1974 में स्थानीय सरकार ने अपने अधिकार में ले लिया। उनकी प्रतिमा कॉलेज, बर्मिंघम के जॉर्ज स्क्वायर में और अब ब्रॉड स्ट्रीट बर्मिंघम में भी है, और उनके साथ मैथ्यू बोल्टन और विलियम मर्डोक की सोने की बनी मूर्तियाँ हैं। ग्लासगो और प्रिंस स्ट्रीट एडिनबर्ग में भी उनकी मूर्तियाँ हैं। उन्हें बर्मिंघम में मूनस्टोन्स और बोल्टन रोड हैंड्सवर्थ बर्मिंघम में उनकी स्मृति में जेम्स बाट प्राइमरी स्कूल द्वारा भी याद किया जाता है।

एडिनबर्ग स्कॉटलैंड में हेरियट वाट विश्वविद्यालय उनकी याद ताजा कराती है। दर्जनों अन्य विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के नाम, विशेषकर विज्ञान और प्रौद्योगिकी के, उनके नाम पर रखे गए है। मैथ्यू बोल्टन का घर ''सोहो हाउस'' अब एक संग्रहालय है, जहाँ इन दो महान हस्तियों के कार्यों के बारे में जानकारी उपलब्ध है। इंजीनियरिंग संकाय का मुख्यालय ग्लासगो विश्वविद्यालय के जेम्स वाट बिल्डिंग में है। इसकी एक पेंटिंग भी है। ऑफ स्कॉटलैंड में अपने स्टीम इंजन के साथ जेम्स वाट की एक बड़ी मूर्ति बनाई गई, जिसे बाद में सेंट पॉल कैपेहल में में जाया गया, मूर्ति के नीचे शिलालेख में लिखा है–

JAMES WATT ENLARGED

"THE RESOURCES OF HIS COUNTRY, INCREASED THE POWER OF MAN, AND ROSE TO AN EMINENT PLACE AMONG THE MOT ILLUSTRIOUS FOLLOWERS OF SCIENCE AND THE REAL BEFEFACTORS OF THE WORLD."

मैं इसका अनुवाद इस प्रकार कर सकता हूँ :–

जेम्स वाट ने अपने देश का उत्पादन बढ़ाया, मनुष्य की शक्ति बढ़ाई और उन प्रतिष्ठित व्यक्तियों में अपना स्थान बनाया जिन्होंने विज्ञान को उन्नत किया और विश्व को लाभान्वित किया। स्कॉटलैंड के स्टर्लिंग में राष्ट्रीय वालेस स्मारक से हॉल ऑफ हीरोज में भी जेम्स वाट की एक मूर्ति लगाई गई है। जेम्स वाट ने छह आविष्कारों का पेटेंट कराया जो निम्नलिखित है :–

पेटेंट 913, जनवरी 5, 1769, पेटेंट 1244, फरवरी 14, 1780, पेटेंट 1306, 25 अक्टूबर 1781, पेटेंट 1321, मार्च 14, 1782, पेटेंट 1432, अप्रैल 28, 1782 को, पेटेंट 1485, 1785 को।

जेम्स वाट की मृत्यु की तारीख को लेकर कुछ भ्रम है। सूत्र बताते हैं कि उनकी मृत्यु 19 अगस्त 1819 को हुई थी, लेकिन वर्तमान रिपोर्ट उनकी मृत्यु 25 अगस्त 1819 को बताती है। 1858 में जेम्स पैट्रिक मुझरहेड ने जेम्स वाट की जीवनी में पृष्ठ 521 पर मृत्यु की तारीख 10 अगस्त 1819 लिखी है। जेम्स पैट्रिक मोइरहेड जेम्स वाट के भतीजे थे। लेकिन 'टाइम्स' अखबार ने अपने तीसरे पन्ने पर इसे 28 अगस्त लिखा। इस बात का भी आश्चर्य है कि मैरी चर्च, हैंड्सवर्थ, बर्मिंघम ने अपने रजिस्टर में जेम्स वाट की मृत्यु की तारीख दर्ज ही नहीं की है, हालांकि उन्हें 2 सितंबर 1819 को यहीं दफनाया गया था। जेम्स वाट की मृत्यु टाइफाइड से हुई। जेम्स वाट के डॉक्टर इरास्मस डार्विन थे, जो महान वैज्ञानिक चार्ल्स डार्विन के पिता थे, जो एक प्रसिद्ध डॉक्टर थे। जेम्स वाट और इरास्मस डार्विन लूनर सोसाइटी के सदस्य थे। इस समाज के सदस्य आविष्कारक और उद्योगपति थे जो विज्ञान, वाणिज्य, प्राकृतिक दर्शन, प्रौद्योगिकी, औद्योगिक प्रगति और सामाजिक परिवर्तन में रुचि रखते थे।

इरास्मस डार्विन वायवीय चिकित्सा को बढ़ावा देना चाहते थे। हँसाने वाली गैस की खोज 1799 में हम्फ्री डेवी ने की थी। इस शोध का अधिकांश भाग ब्रिस्टल में न्यूमेटिक इंस्टीट्यूशन की प्रयोगशालाओं में किया गया था, और इन प्रयोगशालाओं में अधिकांश उपकरण जेम्स वाट द्वारा बनाए गए थे।

1795 में जेम्स वाट, मैथ्यू बोल्टन और उनके दो बेटों ने सोहो फाउंड्री खोलने पर विचार किया जहाँ भाप इंजन बनाए

जा सकते थे और उन्हें ब्रिटिश कालोनियों में भेजा जा सकता था क्योंकि अन्य सांझेदारों से प्रतिस्पर्धा कम थी। सोही फाउंड्री 1796 में समैदिक में खोली गई थी और वहीं श्रमिकों के लिए घर भी बताए गए से। श्रमिकों के लिए कल्याण कार्यक्रम और बीमार वेतन की भी व्यवस्था की गई। इन घरों में एक रसोई घर, एक पेंट्री (घरेलू सामान रखने की जगह), एक बाथरूम और तीन शयनकक्षों की व्यवस्था की गई थी।

यह वह फाउंड्री थी, जहाँ कई पंजाबी आते थे और मंते, भारी, कठोर, गर्म परिस्थितियों में काम करते थे। उन्होंने अपने अल्प जीवन में जमीन खरीदने के लिए पंजाब में बड़ी रकम भेजी थी ताकि जमीनें खरीदी जा सके, अच्छे पक्के मकान बन सकें और उनके भाई बहन आरामदायक जीवन जी सके। यहाँ बहुल सारे पंजाबी, विशेषकर दोआबे के लोग, काम करते थे। जिन्होंने अपनी मेहनत और सात दिनों के ओवरटाइम से पैसा कमाया। बुरी परिस्थितियों में रहते हुए, उनके द्वारा भेजे गए धन ने पंजाब में हरित क्रांति ला दी, लेकिन उन पंजाबियों ने खुद को कई बीमारियों लगा ली। कइयों को तो पैशन भी नहीं मिल सकी। सबसे दुखद बात यह है कि जब उन्होंने पंजाब जाकर अपनी भेजी हुई कमाई का हिसाब माँगा तो उन्हें कुछ नहीं मिला और वे मुकदमों में फंस गए और फंसे रहे हैं।

जेम्स वाट पर गुलाम अर्थव्यवस्था में भाग लेने का आरोप है, क्योंकि वह अपने पिता के व्यवसाय का लेखा-जोखा रखते थे, जिसमें तंबाकू व्यापार भी था, जो काले अफ्रीकी दासों से संबंधित था। यह भी कहा जाता है कि 1762 में उन्होंने फ्रेडरिक नामक एक काले अफ्रीकी गुलाम लड़के को रखा हुआ था। फ्रेडरिक को जेम्स वाट का भाई जॉन या जॉकी द्वारा स्कॉटलैंड लाया गया था। मार्च 1762 में जॉन वाट ने फ्रेडरिक को बेच दिया। बाद में जॉन जब ओर दास लाने के लिए हवाना गया, तो वह 30 अक्टूबर 1762 को समुद्र में डूबकर मर गया।

जेम्स वाट के पत्रों से पता चलता है कि अफ्रीकी गुलाम फ्रेडरिक को लाने में उसका हाथ था। दूसरी ओर, 31 अक्टूबर, 1791 को, जेम्स वॉट ने अपने एक स्टीम इंजन ग्राहक को लिखा- ''मैं ईमानदारी से प्रार्थना करता हूँ कि गुलाम से जाने वाली प्रणाली मानवता के लिए इतनी अपमानजनक है कि इसे बुद्धिमानी से और उत्तरोत्तर समाप्त किया जाना चाहिए।''

हाँ। और यह भी सच है कि जब जेम्स वाट 1800 के दशक में सेवानिवृत हुए, तब भी उन्हें उन इंजनों के हिस्सों के लिए पैसे मिल रहे थे, जिनका उपयोग गन्ने की खेती के लिए किया जाता था। इन गन्ने के खेतों में अफ्रीका से जबरन पकड़ कर लाए गए दास भयानक परिस्थितियों में काम करते थे और यातनाएं सहते थे।

पृष्ठ 22 का शेष

कालेज को प्रदान कर दिया गया था। वर्ष 2024 में पश्चिम बंगाल के भूतपूर्व मुख्यमंत्री बुद्ध देव भटाचार्य, कामरेड सीता राम येचुरी, सोसल एंव राजनीतिक एक्टीविस्ट प्रो.जी.एन. साईं बाबा के शवों को मैडीकल कालेजों को प्रदान किया गया।

तर्कशील लोगों में पहले घोषित तर्कशील डाक्टर अब्राहम थॉमस कोवुर के बाद तर्कशीलों में मैडीकल खोजों के लिए मृतक शरीर प्रदान करने की परम्परा बन गई है और पंजाब में भूतपूर्व प्रधान कृष्ण बरगाड़ी की मृत्यु के बाद एक सिलसिला इस दिशा में चल पड़ा, जिसमे 'तर्कशील पथ' पत्रिका के संपादक मास्टर बलवन्त सिंह शामिल है। वर्ष 2024 तक बहुत से लोगों के शव मैडीकल कालेजों को प्रदान किए गए। पंजाब और हरियाणा में तो अब तर्कशील सोसायटी के ज्यादातर सदस्य अपने परिजनों के शवों को चिकित्सीय उपयोग हेतु मैडीकल कालेजों को प्रदान कर देते हैं।

मानव शव के ''अन्तिम संस्कार'' की बजाए अन्तिम सार्थकता का इससे अच्छा, इससे तर्कसंगत और मानव-हितैषी तरीका ओर कोई नही हो सकता है !

-91087-92360

पृष्ठ 23 का शेष

अंधविश्वास एवं सामाजिक कुरीतियों के निर्मूलन व सामाजिक जागरण में अपना अमूल्य योगदान विद्यार्थी एवं स्थानीय ग्रामीण भी दे सकते हैं। उन्हें आस-पास के लोगों को इस संदर्भ में विज्ञान सम्मत जानकारी देनी चाहिए। कार्यक्रम में व्याख्यान के बाद चमत्कारों की वैज्ञानिक व्याख्या भी प्रस्तुत की गई व प्रश्नोत्तर हुए। कार्यक्रम को डॉ शैलेश जाधव, महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ एच के एस गजेंद्र ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के डॉ. पटेल, डॉ बर्मन, सहित छात्र, उपस्थित रहे।

लिंग भेद का क्या अर्थ है?

– प्रियंका सौरभ

सामाजिक मान्यताएँ अक्सर महिलाओं को कमज़ोर और पुरुषों को आक्रामक के रूप में चित्रित करती हैं, जो असमान लिंग गतिशीलता को बढ़ावा देती हैं जो उत्पीड़न को बनाए रखती हैं। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ हेल्थ द्वारा किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि कार्यस्थल पर उत्पीड़न महिलाओं को असंगत रूप से प्रभावित करता है क्योंकि पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण जड़ जमाए हुए हैं। नियोक्ताओं और कर्मचारियों सहित कई लोगों को कार्यस्थल पर उत्पीड़न कानूनों के बारे में जानकारी नहीं है, जिसके कारण अनियंत्रित कदाचार होता है। केवल 35% भारतीय महिला कर्मचारी ही यौन उत्पीड़न रोकथाम अधिनियम, 2013 के बारे में जानती हैं। कानूनों का अकुशल क्रियान्वयन और जवाबदेही की कमी उत्पीड़कों को बढ़ावा देती है। महिलाओं की सुरक्षा के लिए आवंटित निर्भया फंड (2013) खराब प्रशासन के कारण कम उपयोग में आता है। कुछ व्यवसायों में महिलाओं का कम प्रतिनिधित्व पुरुष-प्रधान वातावरण बनाता है, जिसमें सत्ता का दुरुपयोग होने की संभावना होती है। आर्थिक सर्वेक्षण 2023-2024 के अनुसार, महिला श्रम शक्ति भागीदारी दर में वृद्धि हुई है, लेकिन यह लगभग 37% पर बनी हुई है। न्याय, पीड़ित को दोषी ठहराने या प्रतिशोध का डर पीड़ितों को उत्पीड़न की रिपोर्ट करने से हतोत्साहित करता है, जिससे चुप्पी की संस्कृति बनी रहती है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार, यौन उत्पीड़न सहित महिलाओं के खिलाफ अपराध, नतीजों के डर, अपर्याप्त जागरूकता और सामाजिक पूर्वाग्रहों के कारण बहुत कम रिपोर्ट किए जाते हैं।

लिंग भेद का अर्थ है कि महिलाओं को निरंतर सुरक्षा की आवश्यकता होती है, जिससे उनकी एजेंसी और व्यावसायिकता कमज़ोर होती है। पुरुष दर्जियों को महिलाओं के माप लेने से रोकना सुरक्षा के लिए महिलाओं की निर्भरता की धारणा को मज़बूत करता है। ऐसी नीतियाँ पुरुषों को संभावित खतरे के रूप में सामान्यीकृत करती हैं, अविश्वास पैदा करती हैं और कार्यस्थल की गतिशीलता को नुक़सान पहुँचाती हैं। अध्ययनों से पता चलता है कि समावेशी कार्य वातावरण लिंगों के बीच अधिक सम्मान और सहयोग को बढ़ावा देते हैं। अलगाव असमान अवसरों को बनाए रखता है, एक लिंग के वर्चस्व वाले व्यवसायों में भागीदारी को प्रतिबंधित करता है। भारत के सशस्त्र बलों ने ऐतिहासिक रूप से महिलाओं को लड़ाकू भूमिकाओं से प्रतिबंधित किया है, जो पेशेवर अवसरों पर अलगाव के प्रभाव को दर्शाता है। एन.डी.ए. प्रेरण जैसे सुधार प्रगति को दर्शाते हैं, लेकिन पूर्वाग्रह बने रहते हैं। सामाजिक दृष्टिकोण को सम्बोधित करने के बजाय, अलगाव लक्षणों को लक्षित करता है जबकि शक्ति असंतुलन और खराब शिक्षा जैसे मूल कारणों को अछूता छोड़ देता है। राष्ट्रीय अपराध ब्यूरो रिपोर्ट (2023) ने इस बात पर प्रकाश डाला कि आई.पी.सी. के तहत महिलाओं के खिलाफ अपराधों का एक महत्त्वपूर्ण अनुपात 'पति या उसके रिश्तेदारों द्वारा क्रूरता' से जुड़ा था। अलगाव पुरुष पेशेवरों के लिए ग्राहक आधार को कम करता है, जो निम्न-आय वर्ग के लोगों को असमान रूप से प्रभावित करता है। छोटे शहरों या गांवों में जहाँ यूनिसेक्स सैलून उपलब्ध नहीं हो सकते हैं, ऐसी प्रथाओं से पुरुष नाइयों के लिए नौकरी के अवसर कम हो सकते हैं।

उत्पीड़न की जड़ से निपटने के लिए सम्मान, सहमति और कार्यस्थल नैतिकता पर ध्यान केंद्रित करते हुए व्यापक जागरूकता अभियान चलाएँ। पॉश अधिनियम, 2013 प्रशिक्षण सत्रों को अनिवार्य बनाता है, जिसे टेलरिंग और सैलून जैसे अनौपचारिक क्षेत्रों में विस्तारित किया जाना चाहिए। आपसी समझ विकसित करने और रूढ़िवादिता को कम करने के लिए व्यवसायों में मिश्रित-लिंग स्टाफिंग को बढ़ावा दें। संयुक्त राष्ट्र महिला के ही फॉर शी अभियान जैसी पहल पुरुषों और महिलाओं को विविध सेटिंग्स में समान रूप से सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित करती है। उत्पीड़न विरोधी कानूनों के सख्त कार्यान्वयन को सुनिश्चित करें और शिकायत समाधान के लिए मज़बूत तंत्र बनाएँ। अनौपचारिक क्षेत्रों में आंतरिक शिकायत समितियों का विस्तार करने से कमजोर श्रमिकों की रक्षा हो सकती है। निगरानी के बजाय, निजी फिटिंग रूम और ग्राहक-

शेष पृष्ठ 32 पर

12 हत्याओं के आरोपी तांत्रिक की पुलिस हिरासत में मौत

अहमदाबाद, 8 दिसम्बर (प.स.) : गुजरात में एक कारोबारी की हत्या की कथित साजिश रचने को लेकर गिरफ्तार 42 वर्षीय तांत्रिक की पुलिस हिरासत में मौत हो गई। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि तांत्रिक ने स्वीकार किया था कि उसने रसायन युक्त पेय पदार्थ देकर 12 लोगों की जान ली है। उन्होंने बताया कि सारखेज पुलिस ने तीन दिसम्बर की रात करीब एक बजे नवल सिंह चावड़ा को उस वक्त गिरफ्तार कर लिया जब वह अपराध को अंजाम देने जा रहा था।

पुलिस ने यह कार्रवाई तांत्रिक के टैक्सी कारोबार के सांझेदार द्वारा दी गई सूचना के आधार पर की थी। अधिकारी ने बताया कि पुलिस ने चावड़ा की गुप्त गतिविधियों और नर बलि में संभावित संलिप्तता की जांच के लिए 10 दिसम्बर अपराह्न तीन बजे तक की उसकी रिमांड हासिल की थी। उन्होंने बताया, करीब 10 बजे चावड़ा की तबीयत खराब हो गई और उसे एंबुलैंस से सिविल अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

(पंजाब केसरी, 10 दिसम्बर 2024)

महिला ने अंधविश्वास में बच्ची की बलि देकर कलेजा खाया

जागरण संवाददाता, पलामू : झारखंड के पलामू जिला में काला जादू के नाम पर एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। एक मां ने अपनी ही बेटी की बलि चढ़ा दी। इसके बाद चाकू से उसका कलेजा निकालकर खाया। हुसैनाबाद थाना की पुलिस ने खराड़ गांव से आरोपित महिला गीता देवी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। थाना प्रभारी संजय कुमार यादव ने बताया कि महिला ने अंधविश्वास में अपना आपा खो दिया था। पूछताछ करने पर उसने बताया कि वह डायन-बिसाही (काला जादू) सीख रही थी। उसे स्वप्न आ रहा था कि बलि देनी होगी। इसके बाद बच्ची की बलि दी।

महिला गीता देवी मंगलवार की सुबह अपनी सास से बाजार जाने की बात कह घर से निकली। साथ में अपनी डेढ़ वर्ष की बेटी परी को भी ले गई। शाम होने पर वह अपने घर से लगभग दो किलोमीटर दूर जंगल के पास सुनसान जगह पर बेटी के साथ पहुंची। पूजा के बाद वह कुछ देर तक वहां नाची। इसके बाद चाकू से गला काटकर बच्ची की बलि दे दी।

(स्रोत : राष्ट्रीय जागरण) 15 नवंबर 2024

यदि कोई व्यक्ति आपसे कहे, ''एक लाख रुपए उधार दे दो। मरने के बाद, लौटा दूंगा।'' तो क्या आप उसे एक लाख रुपये उधार देंगे? आपका जवाब 100 प्रतिशत ना होगा।

इसी सादृश्य में मृत्यु के पश्चात असीम सुखों वाले किसी काल्पनिक स्वर्ग और असीम दुखों वाले किसी काल्पनिक नर्क की बातों को आप कैसे स्वीकार कर लेते हैं? महर्षि चार्वाक ने स्पष्ट लिखा है कि मृत्यु के बाद कोई पुनर्जन्म नहीं है।

पृष्ठ 31 का शेष

अनुकूल लेआउट जैसे सुरक्षित बुनियादी ढांचे को प्राथमिकता दें। प्रतिबंधात्मक विनियमों से प्रभावित पेशेवरों को वित्तीय और प्रशिक्षण सहायता प्रदान करें, जिससे उनकी आजीविका सुरक्षित रहे। राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन (एन.यू.एल.एम., 2013) के तहत सरकार द्वारा वित्तपोषित कौशल संवर्धन कार्यक्रम नाई और दर्जी को अपने ग्राहकों में विविधता लाने में मदद कर सकते हैं। लिंग के आधार पर व्यवसायों का पृथक्करण एक सतही प्रतिक्रिया है जो रूढ़िवादिता को मज़बूत करती है जबकि उत्पीड़न के प्रणालीगत मुद्दों को सम्बोधित करने में विफल रहती है। समावेशी कार्यस्थलों को बढ़ावा देकर, कानूनी सुरक्षा को मज़बूत करके और व्यवहार परिवर्तन को बढ़ावा देकर, भारत समानता और सम्मान में निहित समाज का निर्माण कर सकता है। ही फॉर शी अभियान जैसी वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं से प्रेरणा लेते हुए, भारत को ऐसे भविष्य के लिए प्रयास करना चाहिए जहाँ सुरक्षा और सम्मान अंतर्निहित हो, न कि लागू किया जाए।

रिसर्च स्कॉलर इन पोलिटिकल साइंस एवं स्तंभकार,
-70153-75570

बात है बस छोटी सी (कविता संग्रह)

– समीक्षा –जयपाल

तर्कशील साथी बलदेव सिंह महरोक लंबे समय से 'तर्कशील पथ' पत्रिका की टाईप सेटिंग्स से जुड़े रहे, जिनकी लघु कथाएं व कविताएं अन्य बहुत से पत्र–पत्रिकाओं के साथ ही **'तर्कशील पथ'** में भी छपती रही हैं.

बलदेव सिंह महरोक बाल साहित्यकार के रूप में चर्चित रहे हैं लेकिन पिछले दिनों उनकी कुछ कविताएं देखकर सुखद अनुभूति हुई। उनकी पुस्तक– **''बात है पर छोटी सी''** की कविताएं पढ़कर लगा कि उनमें एक विचारशील और संवेदनशील कवि भी छटपटा रहा था जो इस संग्रह के रूप में सामने आया है ।इन कविताओं को उनके सीधे/ सच्चे/ सरल उद्‌गार कहा जा सकता है।

अपने समय से कटकर कविता नहीं लिखी जा सकती। वर्तमान से टकराते हुए कविता अतीत को तोलती हुई भविष्य के सपनों को बुनती है ।महरोक की कविताएं कुछ ऐसी ही हैं।

आज का समय बहुत ही उलझा हुआ है। अनेक भ्रम , मुखौटे, दोहराव, घुमाव, चक्र, चक्रों के चक्रव्यूह, धुंध, धुआं, धूल, धमाल, गोलमाल आदि पाखंडों से घिरा हुआ समय। कवि के अनुसार सब कुछ धुएं जैसा आंखों में चुभता हुआ और दुखता हुआ...। पूंजीवाद की क्रूरता के साथ फासीवाद की आहट–इसी चक्रव्यूह में फंसा है लोकतंत्र ।

कवि इस लोकतंत्र को छू–मंत्र कहता है । कवि को धर्म, राष्ट्र और भगवान शब्द अच्छे नहीं लगते क्यों कि सत्ता के लिए ये अब नफरत के औजार बन गये हैं। ये कविताएं उस चतुर चालाक धोखेबाज दो–मुंहे निज़ाम के खिलाफ खड़ी हैं जो जनता को भिखारी समझता है या क्रीतदास। वह जनता को भ्रमित करता है या डराता है और शासन करता है। उसका शासन करने का यही तरीका है। ज्यादातर कविताएं इसी बिंदु के आस पास घूमती हैं और इस व्यवस्था को बदलने का आह्वान करती हैं। कवि आम जन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता खुलकर व्यक्त करता है और जो खुलकर बोलने से कतराते हैं उन्हें लताड़ता भी है (मेरे शहर के लेखक / और वह मर गई)

कवि को अपना बचपन याद करना अच्छा नहीं लगता क्योंकि उसमें याद करने जैसा कुछ है ही नहीं। यही स्थिति देश के लगभग हर उस बच्चे की है जो गरीब घर में पैदा हुआ है और कुपोषण और शोषण में पला है ।आम आदमी यहां उधार का जीवन जीता है जिसमें कोई उल्लास नहीं, कोई स्वाभिमान नहीं ।बस किसी तरह सांस चल रही है। निजाम कितना खुश हैं इस परिस्थिति से, इसका अंदाजा उसकी महानायक–मुद्रा से लगाया जा सकता है जो हर चौराहे पर आकाश में लटकी है । उसने स्वयं को सुपरमैन घोषित कर रखा है। वह सुपरमैन की छवि को बनाए रखना चाहता है ताकि जनता उसके सामने सिर न उठा सके। कवि के अनुसार यह एक तरह की तानाशाही है जिसके उपर लोकतंत्र का ठप्पा लगा दिया गया है। लोकतंत्र का यह ढोल इस समय पूरी दुनिया में बज रहा है और बहरे लोग सुन रहे हैं।

कवि कहता है–

तूं क्या सोचता है
देश यह तुम्हारा है !
तुझको यह भ्रम है!!

इसी तरह वह कहता है–

कितनी खुशफहमी में हो
कि धर्म जोड़ता है
धर्म अहिंसा सिखाता है
ईश्वर एक है
और सब इंसान बराबर हैं !

यहां तो ईश्वर अल्लाह भी एक नहीं है। दोनों के नाम पर हररोज दंगे होते हैं।

ईश्वर अल्लाह तेरो नाम
कहना है यह झूठों का काम
एक अगर है ईश्वर अल्लाह
क्यों नहीं उसका एक मकान

शेष पृष्ठ 37 पर

कट गई थी 'चौरासी' !

– बलराज सिंह सिद्धू
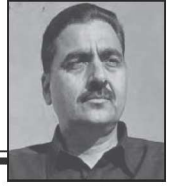
हमारे देश में बाबाओं, साधुओं और तांत्रिकों के पास लोगों को मूर्ख बनाने का सबसे बड़ा हथियार है- चौरासी काटने का झांसा देना। जिस व्यक्ति ने सारा जीवन भूख और ग़रीबी में, औलाद से बेइज्जत होते हुए या अन्य दुखों-बीमारियों से जूझते हुए व्यतीत किया हो, वह भी चौरासी लाख योनियों के चक्कर में उलझने की बजाय जल्दी से जल्दी दोबारा मनुष्य का जन्म लेने के लिए इच्छुक है। वैसे चौरासी लाख योनियों में सिर्फ भारतीय ही जाते हैं, बाकि धर्मों के दर्शन में ऐसा कोई विश्वास नहीं है और न ही वे कर्म सिद्धांत या पुन्रजन्म में विश्वास करते हैं। हमारे यहां कोई न कोई आलौकिक बच्चा पैदा होता ही रहता है जो अपने पिछले जन्म के बारे में जानता है। मिनटों में ही माथा रगड़ने वालों की लाइनें लग जाती हैं चाहे वह बेचारा मानसिक रोगी ही क्यों न हो। हैरानी की बात यह है कि उसका जन्म भी उसी भाषा बोलने वाले आसपास रहने वाले किसी परिवार में हुआ होता है। हिंदी या पंजाबी भाषी बच्चा कभी भी कन्नड़ या तेलगू परिवार में पैदा नहीं होता क्योंकि बेचारे को वह भाषा समझ नहीं आती। वैसे भारत एकमात्र ऐसा देश है जहां मूत्र पीया जाता है, घी जलाया जाता है और दूध पत्थरों पर बहाया जाता है।

क्या सचमुच ही चौरासी लाख योनियां होती हैं? अगर होती हैं तो क्या यह सिर्फ भारतीयों के लिए आरक्षित हैं? क्या पश्चिमी देशों के लोग भी मरने के बाद इसी चक्कर में पड़ते हैं? वैसे चौरासी लाख योनियों के बारे में हमारे बुजुर्गों का अंदाज़ा लगभग ठीक ही है। संसार में पानी और धरती के जीवों को मिलाकर अब तक कुल 87 लाख किस्में खोजी जा चुकी हैं। इनमें से 65 लाख धरती पर और 22 लाख पानी में निवास करते हैं। कई जीवों का जीवन कुछ दिनों का और कई सैंकड़ों साल जिंदा रहते हैं। धरती पर सबसे कम समय जिंदा रहने वाला जीव मेफलाई कीट है जो 24 घंटों में ही अपना जीवन चक्र पूरा कर लेता है और सबसे लंबा समय जिंदा रहने वाले सीशैलज़ नस्ल के समुद्री कछुए हैं जिनकी आयु 190 वर्ष तक हो सकती है। पानी में सबसे कम उम्र वाला गैस्टरॉटरिच नामक एक सूक्ष्मजीव है जो कुछ घंटे ही जिंदा रहता है और सबसे लंबा समय जीने वाली बोहैंड व्हेल मछली है जिसकी आयु 200 वर्ष तक है। अगर इन कम-ज्यादा जीने वाले जीवों की औसत आयु 2 वर्ष मान लें तो 87 लाख योनियां पूरी करने के लिए एक आत्मा को कम से कम 174 लाख वर्ष की जरूरत होगी। धरती पर स्तनधारी जीव 21 लाख वर्ष पहले और समझदार मानव 2-3 लाख वर्ष पूर्व ही पैदा हुए थे। इस हिसाब से तो अभी चौरासी का पहला राऊंड ही पूरा नहीं हुआ क्योंकि माना जाता है कि किसी आत्मा को 84 लाख योनियों के बाद ही मानवीय शरीर मिलता है। मानवीय शरीर 174 लाख वर्ष बाद मिलना चाहिए था पर इंसानों को तो यह स्तनधारी जीव पैदा होने के 19 लाख वर्ष बाद ही मिल गया। इसलिए मरने के बाद इंसानी शरीर प्राप्त करने के लिए हमें 174 लाख वर्ष ओर इंतज़ार करना पड़ेगा। पर लगता है कि ज्यादातर लोगों को मानव के रूप में दोबारा जन्म किसी ओर ग्रह पर लेना पड़ेगा क्योंकि जिस तरह के हालात हमनें प्रदूषण से पृथ्वी पर पैदा कर दिए हैं, तब तक तो यह खुद ही नष्ट हो जाएगी।

आज से तकरीब़न 45-46 वर्ष पुरानी बात है। एक धार्मिक सरोवर की सफाई के लिए कार सेवा चल रही थी। गाद काफी हद तक साफ हो गई थी पर सरोवर में अभी तक दोबारा पानी नहीं भरा गया था। पानी सूखे के कारण पानी के नीचे का भाग दिखाई देना शुरू हो गया था। पुरातन कारीग़रों ने निर्माण करते समय इसके निचले भाग में सुरंग जैसी व्यवस्था की थी ताकि पानी आसानी से आर-पार जा सके। जब वो सुरंगें भी नंगी हो गईं तो कुछ पिछलग्गू लोगों ने यह बात फैला दी कि जो कोई इन सुरंगों में से गुज़रता है, उसकी चौरासी कट

जाती है। कीचड़ के कारण सुरंगों में से गुज़रना बहुत मुश्किल था और रास्ता बहुत तंग था पर चौरासी काटने के इच्छुक इसमें से धड़ाधड़ आर-पार हो रहे थे। उस वक्त मैं आठ-दस साल का था और चौरासी काटने के लिए माताजी के साथ बरामदे में बैठा भीड़ कम होने का इंतज़ार कर रहा था। अचानक मेरा ध्यान एक नौजवान औरत की ओर गया जो अपनी बुजुर्ग सास और अपने 6-7 माह के बच्चे को गोद में उठाए तंग रास्ते से घिसर-घिसर कर चौरासी काट सुरंग की ओर बढ़ रही थी। अचानक बच्चा उछला और मां के हाथ से छूटकर नीचे एक गड्डे में भरे हुए पानी में गिरकर गोते खाने लगा। दोनों औरतें उसके पीछे पानी में छलांग लगाने की बजाय जोर-जोर से बचाओ-बचाओ की दुहाई देने लगीं। थोड़ी ही दूर गाद निकाल रहे कार सेवकों ने भागकर बच्चे को मरने से बचाया और उठाकर मां के हवाले किया। सबने उन दोनों को लाहनतें दीं कि आज आपकी तो चौरासी कट गई थी, बच्चा भी गँवा लेना था और घरवालों से जो सेवा होनी थी, वो अलग। बेचारी शर्मसार हुईं बच्चे को गले लगाकर वहीं से वापिस हो लीं। उनकी हालत देखकर ड़रे हुए मां और मैं भी चौरासी कटाए बग़ैर ही घर लौट आए।

अनुवाद - मुलख सिंह

घास

मैं घास हूँ
मैं आपके हर किए-धरे पर उग आऊँगा
बम फेंक दो चाहे विश्वविद्यालय पर
बना दो होस्टल को मलबे का ढेर
सुहागा फिरा दो भले ही हमारी झोपड़ियों पर
मुझे क्या करोगे?
मैं तो घास हूँ, हर चीज़ ढंक लूंगा
हर ढेर पर उग आऊँगा
बंगे को ढेर कर दो
संगरूर को मिटा डालो
धूल में मिला दो लुधियाना का ज़िला
मेरी हरियाली अपना काम करेगी...
दो साल, दस साल बाद
सवारियाँ फिर किसी कंडक्टर से पूछेंगी -
''यह कौन-सी जगह है?
मुझे बरनाला उतार देना
जहाँ हरे घास का जंगल है।''
मैं घास हूँ, मैं अपना काम करूँगा
मैं आपके हर किए-धरे पर उग आऊँगा।

-पाश

मर गए

जो मन में आया
लिख दिया
लिखते-लिखते मर गए

क्या फर्क पड़ता है
इतना कहा
कहते-कहते मर गए

सुनते रहे
बोले कुछ नहीं
चुपके-चुपके मर गए

चल पड़े
चले नहीं
पड़े-पड़े मर गए

उठने लगे
उठे नहीं
बैठे-बैठे गए

हंसने लगे
हंसे नहीं
रोते-रोते मर गए

जीने लगे
जिए नहीं
मरते-मरते मर गये

- जयपाल

क्या आप अंधविश्वासी है?

– संजीव खुदशाह

क्या आप अंधविश्वासी है? नही न, हर व्यक्ति अपने आप को अंधविश्वासी नही मानता है। सिर्फ झाड फूक करवाना, टोनही प्रथा ही अंधविश्वास नही कहलाता है। हर वह विश्वास जो आंख बंद करके किया जाय, जिसका कोई वैज्ञानिक आधार न हो वह अंधविश्वास कहलाता है। गौर करे रोजमर्रा के इन खास अंधविश्वासों पर और अवगत कराये अपने सभी करीबी दोस्तो और रिश्तेदारों को।

1. किसी को बांये हाथ से पैसे देना–अशुभ
2. किसी व्रत–त्यौहार के खिलाफ बोलना आशुभ
3. किसी के घर में बीमार पड़ जाने पे लाल मिर्च को आग पे जला के घर में धुआं करना
4. घर दुकान दरवाजे पे / नयी कार आदि पे निम्बू हरी मिर्च टांगना
5. भभूत खाना/खिलाना
6. बच्चों/सयानो के गले/बाजू में ताबीज पहनना
7. बिल्ली रास्ता काटने पर अशुभ मानना
8. चप्पल उल्टी होने पर अशुभ मानना
9. बाहर जाते समय टोकना अशुभ मानना
10. किसी त्योहार के दिन काले कपडे पहनना अशुभ मानना
11. घर के निर्माण के समय उसकी नीव में ताम्बे/स्वर्ण मुद्रा डालना
12. किसी कार्य के प्रारम्भ में छींकना अशुभ मानना
13. गुरूवार, शनिवार और मंगलवार को दाड़ी/बाल कटवाना अशुभ मानना
14. शनिवार को तेल या तेल में सिक्के का दान करना शुभ मानना
15. बच्चों को नजर लगना
16. चोरी करके घर में बोतल में मनी प्लांट उगना अशुभ मानना
17. पीछे से किसी को नमस्ते आदि करना अशुभ मानना
18. पड़ोस में खाने की वस्तु किसी बर्तन में देने पर खाली बर्तन वापस करना अशुभ मानना
19. विधवा स्त्री का किसी शुभ कार्य में शामिल होना अशुभ मानना
20. कौवें का छत पर बैठ कर बोलना अशुभ मानना
21. रात में कुत्ते का रोना/ अलग प्रकार से भोंकना अशुभ मानना
22. लड़की से वंश न चलना।
23. बच्चों को परीक्षा के लिए दही शक्कर खिलाकर भेजना शुभ मानना
24. गले या बाजु में काला धागा बाँधना।
25. बच्चे को काला टीका लगाना।
26. नदी में सिक्के फेंकना।
27. किसी दिन विशेष किसी खास दिशा की यात्रा न करना।
28. अख़बारों में राशिफल देखना उसके अनुसार कार्यक्रम बनाना।
29. रात में किसी को पैसे उधार देने या लौटाने से परहेज करना।
30. शनिवार को लोहा न खरीदना।
31. विशेष संख्या जैसे 13 को अशुभ मानना।
32. उल्लू पक्षी का दिखना अशुभ मानना
33. छिपकली का ऊपर गिर जाना अशुभ मानना
34. सवप्न फल को भविष्वाणी की तरह विश्वास करना
35. कुछ कहते समय बिजली बंद हो जाय तो झूठ बोल रहा है
36. कुछ कहते समय बिजली आ जाय तो सच बोल रहा है
37. धनतेरस के दिन यह सोच कर खरीददारी करना कि शुभ है।
38. भविष्यवाणी पर भरोसा करना कुण्डली ज्योतिष आदि
39. वास्तुशास्त्र को मानना एवं उसके अनुसार टोटके या तोड फोड करना
40. दान कर्म से मेरा भला होगा यह सोच कर दान देना
41. मृत पूर्वज को पानी पिलाना खाना खिलाना या श्राद्ध कर्म करना
42. विवाह के लिए शुभमुहूर्त निकलवाना
43. जिसके साथ बुरा हुआ है इसका मतलब उसने पूर्व जन्म में इस जन्म में बुरा किया होगा ये मानना
44. किन्नरों की दुआ बद्दुआ पर विश्वास करना

शेष पृष्ठ 46 पर

कविता

संस्कारों की आड़ में

खोखले आदर्शो के नाम पर
घिनौनी परंपराओं के खोल में
अपनी मर्दवादी
पाशविक मानसिकता को
चाहे जितना भी छुपा लो
चाहे जितना भी दबा लो
लेकिन तुम्हारी
पुरुषवादी
धार्मिक व्यवस्था में
नारी की अस्मिता
हमेशा नंगी हुई है

''नार्यस्तु पूज्यन्ते'' का कितना भी
ढिंढोरा पीट लो
महिला अधिकारों की
कितनी भी
बकैती कर लो
स्त्री शशक्तिकरण की
कितनी भी पैरवी कर लो
तुम्हारी
घृणित नारीविरोधी सोच में
नारी सिर्फ एक देह है
उपभोग की सामग्री है
इससे ज्यादा
उसकी कोई औकात नही।

औरत को दांव पर लगाकर
तुम्हारे खोखले
आदर्श पुरुषों ने
क्या साबित किया है ?

यही न कि
नारी सिर्फ एक देह है
उपभोग की सामग्री है
इससे ज्यादा
उसकी कोई औकात नही.

भरे दरबार मे
जब एक नारी नंगी होती है
तो ये नँगापन
उस नारी का नँगापन नही
उसके चरित्र का नँगापन नही
बल्कि
ये अंधे राजा के
अंधे साम्राज्य का नँगापन है

फिर भी इसे 'धर्म' कहते हो
और उस औरत के
नंगेपन के दोषी को
धर्मराज कहते हो
तो ये उस औरत का
नँगापन नही बल्कि
तुम्हारा दोगला पन है.

जब एक औरत
भरे बाजार
या भरे दरबार
नंगी होती है
या की जाती है
तो असल मे
ये उस बेबस औरत का
नँगापन नही बल्कि
उस समाज के
सभी पुरुषों का
नँगापन होता है

ये नग्नता
सिर्फ
एक औरत की नग्नता ही नही
आपके धर्म, समाज, न्याय
और राजनीति की
दरिद्रता भी है

जड़ हो चुकी
थोथी मान्यताओं के नाम पर
अपनी हैवानियत भरी
पौरुषवादी सोच को
चाहे जितना भी छुपा लो
चाहे जितना भी दबा लो
लेकिन तुम्हारी
अराजकतावादी व्यवस्था में
स्त्री की आबरू
हमेशा नंगी हुई है
और होती रहेगी।

–शकील प्रेम

पृष्ठ 33 का शेष

कवि ने बचपन, प्रेम, मानवीय रिश्तों, मित्रता, चुनाव, सांवली लड़की और गौरापन, युद्ध की शतरंज, शासन की क्रूरता आदि को अपनी कविताओं का विषय बनाया है। विशेषकर --- हे जनता, निज़ाम की चिंता, इन दिनों, निकम्मे, बच्चे भगवान नहीं होते, राजा तो राजा होता है, मदारी,बाइस्कोप, आतंकवादियो, मैं पाकिस्तान जाऊंगा, मेरे शहर के लेखक, बेटियां,भीख, माहौल गर्म है, उड़ते लोग आदि कविताएं अपने तीखे तेवरों के कारण एक व्यंग्यात्मक प्रभाव छोड़ती हैं।इन कविताओं में हास्य भी और मारक व्यंग्य भी। एक तरह से ये व्यंग्य प्रधान कविताएं हैं जो बिना किसी लाग-लपेट के आम आदमी के पक्ष में खड़ी हैं और व्यवस्था के अंतर्विरोधों को उभार कर समाज में आमूल परिवर्तन चाहती हैं। इन कविताओं में कवि का व्यक्तित्व मुखर हुआ है। उनकी मुखरता राजसत्ता को चुनौती देती है और आम आदमी के दुख दर्द को सामने लाने का काम करती है। कवि इसमें कितना सफल हो पाया है यह तो पाठक ही बता पाएंगे लेकिन कवि का यह प्रथम प्रयास स्वागत योग्य है !

कविता संग्रह-बात है छोटी सी / बलदेव सिंह महरोक

प्रकाशक- यूनिक्रिएशन्स पब्लिशर्स, कुरुक्षेत्र।
-9050182156

***

बुद्धिवाद : पाखंड व अन्धविश्वास से मुक्ति का मार्ग

– पेरियार ई. वी.आर

ऐसा क्यों है कि हम एक विदेशी से यह अपेक्षा करते हैं कि वह हिमालय पर्वत की ऊँचाई का पता लगाए; जबकि हम यह दावा करते हैं कि हमने सात दुनिया ऊपर और, सात नीचे की खोज कर ली है? ऐसा क्यों है कि हम भगवान के ब्रह्मांड नृत्य का विस्तार करने की क्षमता रखने का दावा करते हैं; पर इस सरल लाउडस्पीकर का निर्माण हमारे लिए पहेली बन जाता है? हमें वास्तव में इन पहलुओं पर विचार करना चाहिए। आपको अपने सामान्य ज्ञान को बढ़ाने के लिए तर्क का उपयोग करना आना चाहिए।

मनुष्य को इस दुनिया में अन्य प्राणियों से बेहतर माना जाता है। क्योंकि, उसने ज्ञान का उपयोग करते हुए काफी उन्नति की है। लेकिन, हमारे देशवासियों की स्थिति इस ज्ञान का उपयोग न करने के कारण बेहद खराब हो रही है। यह बताते हुए कि हमारी भूमि ज्ञान की भूमि है; हम धार्मिक स्थान बनाते हैं; जबकि अन्य देशों में लोग अन्तरिक्ष में उड़ते हैं और पूरी दुनिया को आश्चर्यचकित करते हैं।

अन्य देशों में ज्ञान का सम्मान किया जाता है और उसी पर भरोसा किया जाता है और उसी को हर खोज का मूल आधार माना जाता है। लेकिन, इस देश में लोग केवल ईश्वर में, धर्म में और इसी तरह के अनुष्ठानों और समारोहों में विश्वास करते हैं।

तर्कवाद से पैदा हुआ ज्ञान ही असली ज्ञान है। क्या महज किताबी ज्ञान ज्ञान हो सकता है? क्या कोई रट्टा लगाकर प्रतिभाशाली हो सकता है? ऐसा क्यों है कि उच्चतम बौद्धिक प्रतिभा वाले शिक्षित व्यक्ति और वे भी, जो विशेष रूप से विज्ञान में डिग्रीधारी हैं; एक पत्थर को देवता मानकर उसके आगे दंडवत् होते हैं? क्यों विज्ञान में महारत हासिल करने वाले विद्वान भी अपने पापों को धोने के लिए खुद को पानी से मलते हैं? क्या उनके द्वारा पढ़े गए विज्ञान और गोबर तथा गोमूत्र के मिश्रण से अभिषेक करने के बीच कोई सम्बन्ध है?

यहां भी हवाई जहाज का सन्दर्भ दिया जाता है। लेकिन, उसे जादू की शक्ति से चलाया जाता है। अंग्रेजी साहित्य में भी हवाई जहाज का अर्थ बताया गया है। लेकिन, वह यांत्रिक शक्ति से उड़ता है। हमें अब क्या चाहिए? यांत्रिक ऊर्जा या जादुई शक्ति ?

आइए, हम एक ही माता–पिता के दो बच्चों को लेते हैं; एक को इंग्लैंड में पालते हैं और दूसरे को अपने देश में। इंग्लैंड वाला बच्चा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सब कुछ देखेगा और अपने देश वाला दूसरा बच्चा सब कुछ धार्मिक दृष्टिकोण से सोचेगा।

हमारे देश में वर्तमान अराजकता और पतन का कारण यह है कि हमें अनुसंधान और विचार करने से रोका गया है और तर्क का प्रयोग करने पर हमारा दमन किया गया है।

आप किसी भी तरह से ईश्वर को मानो और किसी भी तरह के अच्छे इरादों से धर्म को मानो, परिणाम वही होगा। एक सुधारवादी ईश्वर और एक तर्कसंगत धर्म से आप एक अन्धविश्वासी ईश्वर और एक अन्धे धर्म से ज्यादा कुछ हासिल नहीं कर सकते।

जैसे ही मनुष्य के सामाजिक भले के लिए मशीनों का आविष्कार हुआ, मनुष्य को अतिरिक्त लाभ देने के लिए; उसका श्रम और समय बचाने के लिए; उन्हें पूँजीपतियों के नियंत्रण में मजदूरों को भूखा रखने के लिए सौंप दिया गया।... और उन्होंने अपनी सन्तुष्टि और आराम के लिए लोगों को दुःख, गरीबी और चिन्ता में रखने के लिए गुलाम बना दिया।

ऐसी गतिविधियाँ, जो तर्कसंगत, बौद्धिक छानबीन और मानवीय जरूरतों के अनुरूप नहीं हैं; उन्हें प्रथाओं, परम्पराओं, देवताओं, धर्म, जाति और वर्ग या किसी अन्य के नाम पर नहीं चलाया जाना चाहिए।

आदमी के पास विवेक है। यह उसे जाँचने–परखने के लिए है, न कि अन्धा जानवर बनने के लिए। मनुष्य विवेक का दुरुपयोग करके खुद को बहुत–सी परेशानियों में डाल लेता है। जैसे कि उसने अपनी परेशानियों के विरोध स्वरूप ईश्वर को बनाया है।

जीवन में अनिश्चितताएँ, अभाव के कारण असन्तोष और
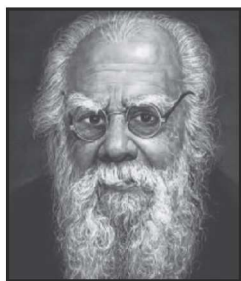
व्यक्तियों के बीच स्वार्थी प्रतिस्पर्धा; यदि ये किसी देश में मौजूद हैं, तो यह स्पष्ट है कि उस देश के लोगों के पास विवेक की पूर्ण शक्तियाँ नहीं हैं। जिस देश में लोग स्वतंत्र रूप से और सन्तुष्टि में रहते हैं, उससे पता चलता है कि वहाँ के नियम विवेकसम्मत हैं।

मनुष्य का मानना है कि उसे अपने बच्चों के लिए धन इकट्ठा करना चाहिए। उनके पास बुद्धि का उपहार है; इसीलिए वे अपने समाज को धोखा देकर भी धन इकट्ठा करते हैं। लेकिन, जानवरों और पक्षियों के पास बुद्धि का उपहार नहीं है; इसलिए वे अपने वंश के लिए कुछ भी बचाकर नहीं रखते हैं। वे समय आने पर अपने बच्चों के लिए शिकार करते हैं। चोंच में भरकर लाते हैं और खिलाते हैं। वे उनकी परवाह नहीं करते हैं या बाद में उन्हें याद भी नहीं करते हैं।

दो हजार साल की अवधि के भीतर लोगों ने अपनी बुद्धि का उपयोग करने का विशेषाधिकार खो दिया था। ज्ञान में वृद्धि नहीं हुई और समाज में सुधार नहीं हुआ। क्योंकि, लोगों को सवाल करने का अधिकार नहीं था कि चीजें क्यों और कैसे होती हैं? उन्होंने सिर्फ लिखे गए शब्दों को ही सुना और विश्वास किया। उन्हें बताया जा रहा था कि सोचना, बहस करना और सन्देह करना पाप है।

ईश्वर, संतों, ऋषियों और अवतारों की बात को समझना मनुष्य की अपनी बुद्धि से परे है। जो भी विवेक और आत्मसम्मान के अनुरूप नहीं है, उसे छोड़ दिया जाना चाहिए।

अगर अन्धविश्वास हटा दिया जाए और धर्म को विवेक के प्रकाश में देखा जाए, तो कोई धर्म जीवित नहीं रहेगा।

अगर लालच खत्म हो जाता है, तो कोई भी व्यक्ति विश्वास नहीं करेगा कि उसकी बुद्धि और अनुभव के विपरीत क्या है।

मुझे नहीं पता कि हमारे लोगों को विवेक और परिपक्वता प्राप्त करने के लिए अभी कितनी शताब्दियों का ओर इन्तजार करना है। मुझे विश्वास है कि तमिलनाडु का तब तक उद्धार नहीं होगा, जब तक कि वह एक विनाशकारी जलप्रलय या तूफान या बाढ़ या भूकम्प में नष्ट होकर एक नया निर्माण न हो जाए।

जो सुना जाता है; जो लिखा गया है; जो लम्बे समय से होता आ रहा है; जो बहुतों के द्वारा माना जाता है या जो 'ईश्वर' के द्वारा कहा गया है, उस पर विवेकशील लोगों को तुरन्त ही विश्वास नहीं करना चाहिए। जो कुछ भी हमें आश्चर्यजनक लगता है; उसे तुरन्त ही दिव्य या चमत्कारी नहीं मान लेना चाहिए। हर परिस्थिति में हमें स्वतंत्र रूप से तर्कसंगत और निष्पक्ष रूप से सोचने के लिए तैयार रहना चाहिए।

यह बुद्धिवाद के माध्यम से हुआ है कि मनुष्य की आयु में वृद्धि हुई है और उसकी मृत्यु दर में काफी कमी आई है।

जो ज्ञान रखता है और प्रकृति से अवगत है, वह दुःख से मुक्त है। जब एक इंजेक्शन लगता है, तो दर्द होता है। पर, वह अच्छे स्वास्थ्य के लिए दिया जाता है। लेकिन, दर्द के बावजूद हर कोई उसे इलाज की उम्मीद में बर्दाश्त करता है। वह ज्ञान की प्रकृति है।

यह सोचने की शक्ति ही है, जो मनुष्य को जानवरों और पक्षियों से अलग करती है। इसी सोचने की शक्ति के चलते मनुष्य अपने से भी शक्तिशाली जानवरों को गुलाम बना लेता है।

यह तर्क की शक्ति है, जो मनुष्य में किसी भी अन्य शक्ति से अधिक है; जो उसे अन्य सभी प्राणियों से श्रेष्ठं बनाती है। इसलिए, हम कह सकते हैं कि इसके उपयोग की सीमा के अनुपात में वह स्वयं को मानवीय गुणों से संचालित करता है।

जो अपने विवेक का उपयोग नहीं करता है, वह सिर्फ एक पशु है। क्योंकि, हमें लगातार बताकर यह मानने के लिए मजबूर किया जाता है कि तर्क करना या तर्क से किसी मामले की जाँच करना पाप है। इसलिए, हम अब किसी भी मामले का विश्लेषण करने में असमर्थ हैं। यदि हम साहस के साथ तर्क का इस्तेमाल करें, तो हम तेजी से प्रगति कर सकते हैं।

बर्बर कौन है? वह, जिसके पास दिमाग नहीं है। वह, जिसके पास विवेक नहीं है। वह, जो सोच और विवेक होने के बावजूद तर्क नहीं करता है। वह, जो बिना सोचे-समझे दूसरों को दोष देता है। मैं इन सबको बर्बर मानता हूँ।

तर्कसंगत ढंग से सोचे बिना अन्धविश्वासों को मानते रहने से ही मजदूर गुलाम बनने की स्थिति में चले गए हैं।

''इस हमाम में जो खुद को ढकता है, उसे पागल समझा जाता है।'' क्या इसी तरह बर्बर लोगों की भूमि में तर्क करने वालों को पागल नहीं कहा जाता है?

जो कुछ भी किया गया है, जो भी घटना और मामला है; हमें पहले यह देखना चाहिए कि वे अनुभव और जाँच के साथ क्यों और किन चीजों से मेल खाते हैं? तभी ज्ञान बढ़ेगा।

इसके बजाय यदि रिवाज, परम्परा और पैतृक प्रथा का पालन किया जाता रहेगा, तो केवल मूर्खता बढ़ेगी; बुद्धि नहीं। किसी का केवल इसलिए अनुसरण मत करो कि किसी और ने ऐसा कहा है। दूसरों के सामने अपना जमीर मत बेचो। हर चीज में विश्लेषण और छानबीन करो।

आप अपने पैसे और गरिमा को खर्च करने और किसी भी हद तक अपनी स्वतंत्रता और समानता को छोड़ने के लिए तैयार हैं। लेकिन, आप कुछ हद तक अपने विवेक का उपयोग करने में संकोच करते हैं। आप केवल इसी में इस तरह का संकोच क्यों दिखाते हैं? यदि यह स्थिति लगातार बनी रहती है, तो हम सब मनुष्य कब हुए?

इससे पहले कि हम मंत्री, मुख्यमंत्री, राज्यपाल, गवर्नर जनरल या महात्मा बनें, सबसे पहले हम सभी को मनुष्य बनना चाहिए। सबसे पहले विवेक बढ़ना चाहिए और सहज विचार प्रक्रिया पनपनी चाहिए; जिससे हम मनुष्य बन सकें।

यहाँ तक कि जब हम एक साड़ी खरीदते हैं, तो पूरी सौदेबाजी के बाद खरीदते हैं। हम उसी दुकान से साड़ी खरीदते हैं, जिससे पहले खरीदी थी और जो ईमानदार भी है और सेवा भी अच्छी करता है। हम ऐसे तुच्छ मामलों के लिए अपने विवेक का उपयोग करते हैं। पर, महत्त्वपूर्ण मामलों में विवेक उपयोग करने में विफल रहते हैं। इसलिए, हम काफी छले जाते हैं। इसलिए, मेरा पहला कर्तव्य विवेक की आवश्यकता पर बल देना है।आज हमें हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए ज्ञान की वृद्धि की आवश्यकता है। ज्ञान का बोलबाला होना चाहिए।

आज मनुष्य को पैसा या आश्रय या परिवहन की आवश्यकता नहीं है; बल्कि उसे बुद्धि के विकास की आवश्यकता है। हमें किसी भी धन को अर्जित करने की अपेक्षा ज्ञान प्राप्त करने के लिए अधिक प्रतिस्पर्धा करनी चाहिए।

आपकी अपनी चेतना आपको नियंत्रित करती है, ईश्वर या धार्मिक लोग नहीं। जो मैं कहता हूँ, उसे सीधे स्वीकार किए बिना केवल वही स्वीकार करो, जो आपके विवेक को सही लगे; और बाकी को अस्वीकार कर दो। विवेक मनुष्य का जीवन-रक्त है। सभी प्राणियों में केवल मनुष्य के पास विवेक है। जिसकी विवेक की क्षमता जितनी कम होती है, वह अपेक्षाकृत उतना ही अधिक बर्बर होता है। वह जो परिपक्वता प्राप्त करता है, स्पष्ट रूप से विवेक के माध्यम से ही प्राप्त करता है। विवेक से सोचने की तीव्र क्षमता आती है।

मनुष्य को केवल विश्वास के आधार पर नहीं, बल्कि विवेक के आधार पर किसी बात पर विश्वास करना चाहिए। उसे देखना चाहिए कि जिस बात पर वह विश्वास कर रहा है, वह विवेकसम्मत भी है या नहीं। तभी वह एक आदिम अवस्था से मानव कद की ओर बढ़ता है।

आपका मार्गदर्शक आपका अपना विवेक है। इसका अच्छी तरह इस्तेमाल करो। दूसरों पर शक करने से बचो। क्योंकि, आपके अपने विवेक में यह भर दिया गया है कि ज्ञान मूर्ख बनाता है। आपके पूर्वजों ने जो कहा है, उसमें न तो विविधता है और न ही चमत्कार। उन पुरखों को छोड़ दो; उनसे जुड़े बगैर स्वयं को खोजने और कार्य करने का प्रयास करो। ज्ञान को प्राथमिकता दो।

संसार के सभी प्राणियों में अकेले मनुष्य ही विवेक और बुद्धि रखता है। यदि वह उनका उपयोग करता है, तो वह महान कार्यों को प्राप्त कर सकता है। हर चीज का विश्लेषण साहस और बुद्धिमत्ता के साथ करना चाहिए और अवसर व आवश्यकता के अनुसार जो अस्वीकार्य हो, उसे अस्वीकार करना चाहिए; जो सही हो, उसको बढ़ाने में योगदान देना चाहिए; सुधार के लिए बिना डरे बदलाव करना चाहिए; यही अनिवार्य बौद्धिक कर्तव्य है।

(यह लेख कलेक्टेड वर्क्स ऑफ पेरियार ई.वी.आर., संयोजन : डॉ. के. वीरामणि, प्रकाशक : दि पेरियार सेल्फ-रेस्पेक्ट प्रोपेगंडा इंस्टीट्यूशन, पेरियार थाइडल, 50, ई.वी. के. सम्पथ सलाय, वेपरी, चेन्नई-600007 के प्रथम संस्करण, 1981 में संकलित 'रेशनलिज्म' का अनुवाद है)

(अंग्रेजी से अनुवाद : कँवल भारती)

साभार-जाति-व्यवस्था और पितृसत्ता पेरियार ई. वी. रामासामी किताब, संपादन : प्रमोद रंजन

याद रखिए आपके बच्चे धर्म के लिए लड़ रहे हैं।
और लड़ाने वाले नेताओं के बच्चे विदेश में पढ़ रहे हैं!

समानांतर सिनेमा के अप्रतिम फिलमकार : श्याम बेनेगल

– जवरीमल्ल पारख

23 दिसम्बर को श्याम बेनेगल के इंतकाल के साथ हिंदी और भारतीय सिनेमा के एक युग का अवसान हो गया। समानांतर सिनेमा आंदोलन के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण फ़िल्मकार श्याम बेनेगल का 90 वर्ष की अवस्था में 23 दिसम्बर 2024 को देहावसान हो गया। श्याम बेनेगल की पहली फ़ीचर फ़िल्म 'अंकुर' का प्रदर्शन 1974 में हुआ था और उनकी अंतिम फ़िल्म 'मुजीब : द मेकिंग ऑफ़ ए नेशन' का प्रदर्शन 2023 में हुआ। लगभग 50 सालों में उन्होंने 24 फ़ीचर फ़िल्मों का निर्देशन किया और ये सभी फ़िल्में चर्चित भी रहीं और उल्लेखनीय भी। उन्होंने पहली फ़ीचर फ़िल्म अंकुर का निर्देशन तब किया था जब उनकी उम्र 40 वर्ष थी। लेकिन मीडिया से वे 1960 के दशक के आरंभ से ही जुड़ गये थे। उन्होंने पहली लघु फ़िल्म 'घेर बेठा गंगा' का निर्माण 1962 में कर लिया था और पहला वृत्तचित्र 'क्लोज़ टू नेचर' का निर्माण 1967 में कर लिया था। इसी वर्ष एक और वृत्तचित्र 'ए चाइल्ड ऑफ़ द स्ट्रीट' का निर्माण किया था। 'अंकुर' के निर्देशन से पहले श्याम बेनेगल 17 वृत्तचित्र और 3 लघु चित्र बना चुके थे। यही नहीं, 1966 से 1973 के बीच उन्होंने पुणे स्थित फ़िल्म एण्ड टेलिविज़न इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंडिया में अध्यापन कार्य भी किया था। इसने उन्हें प्रतिभावान कलाकारों को पहचानने का अवसर दिया।

श्याम बेनेगल का जन्म 14 दिसम्बर 1934 को हुआ था। उन्हें आरंभ से ही फ़िल्म निर्माण में गहरी रुचि थी। अपने पिता से प्राप्त कैमरे से उन्होंने 12 वर्ष की अवस्था में फ़िल्म बनायी थी। हालांकि वे अर्थशास्त्र में एम ए थे, उन्होंने मीडिया को ही अपने कैरियर के लिए चुना। मीडिया के क्षेत्र में अपने कैरियर की शुरुआत उन्होंने मुंबई की एक विज्ञापन कंपनी में कॉपीराइटर के रूप में 1959 में कर दी थी। कॉपीराइटिंग, लघुचित्र, वृत्तचित्र, फ़िल्म अध्यापन में सक्रिय योगदान के 15 साल बाद ही वे कथाचित्रों के निर्माण की ओर अग्रसर हुए और आगे के लगभग 50 साल वे लगातार फ़िल्में बनाते रहे। लेकिन इन 50 सालों में उन्होंने कुछ ऐसे काम भी किये जिसकी शायद किसी और फ़िल्मकार से अपेक्षा भी नहीं की जा सकती थी। उन्होंने 1986 से 2014 के बीच विभिन्न विषयों पर दूरदर्शन के लिए छह धारावाहिकों का निर्माण किया। वैसे तो उनके सभी धारावाहिक महत्त्वपूर्ण हैं लेकिन 1988 में निर्मित 'भारत एक खोज' और 2014 में निर्मित 'संविधान' का ऐतिहासिक महत्त्व है। 53 आख्यानों मे बना धारावाहिक भारत : एक खोज भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की प्रख्यात पुस्तक **'डिस्कवरी ऑफ इंडिया'** का कथात्मक रूपांतरण है। भारतीय इतिहास के संदर्भ में नेहरू जी की यह पुस्तक ही नहीं, श्याम बेनेगल द्वारा निर्मित इस धारावाहिक का भी उतना ही महत्व और प्रासंगिकता है। विशेष रूप से वर्तमान दौर में जब सांप्रदायिक फ़ासीवाद की ताक़तें भारतीय इतिहास को अपने हिंदुत्ववादी राजनीतिक लक्ष्यों को हासिल करने के लिए विकृत करने के अभियान में लगी हुई हैं, श्याम बेनेगल का यह धारावाहिक उसका ठोस, तथ्यात्मक और ऐतिहासिक रूप से प्रभावशाली जवाब है। इस धारावाहिक में उन्होंने भारतीय इतिहास के विभिन्न युगों का वर्णन करते हुए उनसे सम्बद्ध साहित्यिक कृतियों के महत्त्वपूर्ण अंशों को कथात्मक रूपांतरण से अंतर्ग्रथित कर इस धारावाहिक को एक कालजयी रचना बना दिया है।
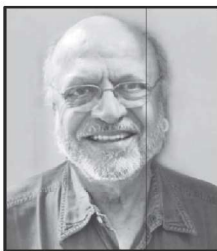
भारत एक खोज से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है संविधान धारावाहिक। भारतीय संविधान के निर्माण के लगभग तीन सालों में संविधान सभा में जो बहसें चली थीं, उन्हीं को आधार बनाकर उन्होंने इस धारावाहिक का निर्माण किया। इस धारावाहिक को देखकर यह समझा जा सकता है कि आज जिस संविधान पर हम इतना गर्व करते हैं, उसे ऐसे ही हासिल नहीं कर लिया गया था। यदि इसके पीछे आज़ादी के लगभग दो सौ साल के संघर्ष का इतिहास था तो इन्हीं दो सौ सालों में मध्ययुगीनता की जकड़बंदी से मुक्त होने के लिए किया जाने वाला सामाजिक और सांस्कृतिक संघर्ष भी था, जिसे पुनर्जागरण के दौर के नाम से जाना जाता है। महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू का यह एक सुविचारित निर्णय था कि संविधान निर्माण की प्रारूप समिति का अध्यक्ष बाबा साहब अंबेडकर को बनाया जाए। वैसे तो मौजूदा संविधान के निर्माण में पूरी संविधान सभा का सामूहिक योगदान रहा है, लेकिन संविधान को वैचारिक दिशा देने में निश्चय ही अंबेडकर और नेहरू का ही योगदान सबसे ज़्यादा था। श्याम बेनेगल नेहरू युग की चिंतनशीलता का प्रतिनिधित्व करने वाले अंतिम लेकिन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण

फ़िल्मकार कहे जा सकते हैं। यह महज़ संयोग नहीं है कि श्याम बेनेगल ने जवाहरलाल नेहरू पर नेहरू (1982) के नाम से वृत्तचित्र बनाया तो 'डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया' पर टेलिविज़न के लिए धारावाहिक बनाया।

श्याम बेनेगल ने अपनी पहली फ़िल्म अंकुर से ही यह साबित कर दिया कि वे एक ओर फ़िल्मकार नहीं है बल्कि अपनी तरह के अकेले फ़िल्मकार हैं जिनकी तुलना किसी ओर से नहीं की जा सकती। अन्य कई फ़िल्मकारों की तरह श्याम बेनेगल की मातृभाषा हिन्दी नहीं थी। लेकिन उन्होंने अधिकतर फ़िल्में हिन्दी में बनायीं। कुछ फ़िल्में उन्होंने दो भाषाओं में भी बनायीं। 1978 की कोंडुरा हिन्दी के साथ-साथ तेलुगु में भी बनी। इसी तरह नेताजी सुभाषचंद्र बोस पर बनी फ़िल्म में हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं का प्रयोग हुआ है। मुजीबुर्रहमान पर बनी फ़िल्म बांग्ला और हिन्दी दोनों में है तो 'द मैकिंग ऑफ़ द महात्मा' मूलरूप में अंग्रेजी में बनी है। शेष सभी 20 फीचर फ़िल्में हिन्दी भाषा में हैं। लेकिन हिन्दी में बनी फ़िल्मों की भाषा में श्याम बेनेगल ने इस बात का ध्यान रखा है कि फ़िल्म के कथानक का संबंध जिस प्रांत से है, पात्रों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा भी उनके अनुकूल हो ताकि फ़िल्म कथानक के आधार पर ही नहीं, संवादों की प्रस्तुति के आधार पर भी यथार्थवादी लगे। उदाहरण के लिए, मंथन (1976) के संवादों पर गुजराती का प्रभाव दिखता है, तो निशांत (1975) में तेलुगु भाषा, भूमिका (1977) में मराठी भाषा, जुनून (1979) के संवादों पर पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बोली जाने वाली खड़ी बोली के प्रभाव को देखा जा सकता है। क्षेत्रीय भाषाओं का ये प्रभाव शब्दों के चयन से ज़्यादा उसके उच्चारण पर दिखायी देता है। श्याम बेनेगल की फ़िल्मों में गीतों का प्रयोग कम हुआ है, लेकिन जब भी हुआ है, भाषा के प्रयोग की इस विशिष्टता को वहाँ भी देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, मंथन का गीत जो काफ़ी लोकप्रिय भी है, 'मेरो गाम काथा पारे जाँ, दूध की नदिया वारे जाँ,' उसमें हिन्दी और गुजराती भाषा को इस तरह मिल दिया गया है कि हिन्दी भाषी उसे समझ भी सकता है और गुजराती भाषा का आस्वादन भी कर सकता है।

श्याम बेनेगल सामाजिक और राजनीतिक रूप से एक जागरूक फ़िल्मकार थे और वैचारिक रूप से प्रगतिशील भी। उन पर वामपंथी विचारों का गहरा असर था जिसे उनकी शुरुआती फ़िल्मों में देखा जा सकता है। उनकी फ़िल्मों के आधार पर उनकी वैचारिक संरचना को वामपंथी झुकाव के साथ गांधी, नेहरू और अंबेडकर की विचारधारा माना जा सकता है। उन्होंने अपनी पहली फ़िल्म से इस बात का अहसास करा दिया था कि उनका मक़सद सिनेमा द्वारा मनोरंजन करना या पैसा बनाना नहीं है। अंकुर जिस कहानी पर बनी है, उस पर फ़िल्म बनाने का विचार 1960 के आसपास आ चुका था और उन्होंने कई निर्माताओं से संपर्क भी किया था, लेकिन उन्हें कामयाबी 1974 में जाकर मिली। वे इस फ़िल्म को क्षेत्रीय भाषा में बनाना चाहते थे लेकिन जिस मीडिया कंपनी ने फ़िल्म का निर्माण करने की सहमति दी, उसने उन्हें हिन्दी में बनाने का सुझाव भी दिया ताकि फ़िल्म ज्यादा दर्शकों तक पहुंच सके। लेकिन हिन्दी में जिस तरह की फ़िल्में बन रही थीं, अंकुर की कहानी उससे बिल्कुल अलग थी। यह ज़मींदारों द्वारा ग़रीब दलितों के आर्थिक और दैहिक शोषण पर आधारित कहानी थी जिसे बहुत ही यथार्थवादी शैली में बनाया गया था। शबाना आज़मी की यह पहली फ़िल्म थी। फ़िल्म के अंत में एक बच्चे द्वारा ज़मींदार सूर्या के घर पर पत्थर फेंका जाना एक सांकेतिक प्रतिरोध था, जो उनकी अगली फ़िल्म निशांत में विद्रोह के रूप में घटित होते हुए देखा जा सकता है। गांव के ज़मींदार द्वारा एक अध्यापक की पत्नी को उठा ले जाना और ज़मींदार और उसके भाइयों द्वारा उसका दैहिक शोषण करना और अंत में ज़मींदार के विरुद्ध गांव वालों का विद्रोह करना निशांत का मुख्य कथानक है। अंकुर में शोषण और उत्पीड़न के विरुद्ध जो प्रतिरोध अंकुरित होता है, वही निशांत में विद्रोह के रूप में फूट पड़ता है। मंथन की कहानी गुजरात की पृष्ठभूमि में चित्रित की गयी है। गुजरात में दूध उत्पादकों द्वारा सहकारी समिति बनाने का जो संघर्ष हुआ था, उसी को कहानी का आधार बनाया गया है। हिन्दी फ़िल्मों में जातिवादी शोषण को कभी कहानी का विषय नहीं बनाया गया था, लेकिन श्याम बेनेगल ने इसे अपनी पहली फ़िल्म में ही कथानक का हिस्सा बना लिया था। अंकुर में फ़िल्म की नायिका लक्ष्मी (शबाना आज़मी) एक दलित स्त्री होती है। इसी तरह मंथन में भी दूध उत्पादकों के बीच उच्च और निम्न जातियों के बीच टकराव को कहानी में शामिल किया गया है। मंथन में नसीरुद्दीन शाह ने विद्रोही दलित की भूमिका निभायी है। 1999 में उन्होंने समर फ़िल्म के माध्यम से मध्यवर्ग में, विशेष रूप से सवर्ण युवाओं में जातिवाद के गहरे प्रभाव की तीखी आलोचना की।

श्याम बेनेगल ने स्त्री शोषण और उनके मुक्ति के संघर्ष पर भी कई फ़िल्में बनायी हैं। वैसे तो उनकी लगभग सभी फ़िल्मों में स्त्री चरित्र बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं लेकिन भूमिका, मंडी, मम्मो, सरदारी बेगम, हरी-भरी, ज़ुबैदा, सूरज का सातवां

घोड़ा उनकी स्त्री केंद्रित फ़िल्में हैं और ये सभी महत्त्वपूर्ण फ़िल्में भी हैं। श्याम बेनेगल ने अपनी फ़िल्मों में दलित यथार्थ (अंकुर, मंथन, समर) को चित्रित किया है तो मम्मो, हरी-भरी, सरदारी बेगम, ज़ुबैदा में मुस्लिम समुदाय को अपनी फ़िल्मों के केंद्र में रखा है। उन्होंने महात्मा गांधी, नेताजी सुभाषचंद्र बोस और मुजीबुर्रहमान जैसे इतिहास पुरुषों पर भी फ़िल्में बनायी हैं, तो कई साहित्यिक रचनाओं का भी रूपांतरण किया है। राजस्थानी लोककथाओं को आधार बनाकर कहानी रचना करने वाले राजस्थानी कथाकार विजयदान देथा की रचना 'चरणदास चोर' का हबीब तनवीर ने नाट्य रूपांतरण किया था, उसका श्याम बेनेगल ने फ़िल्मांतरण किया है। 'भूमिका' फ़िल्म मराठी फ़िल्म अभिनेत्री हंसा वाडेकर की आत्मकथा पर आधारित है, 'कोंडुरा' मराठी लेखक चिंतामणि टी. खानोलकर के उपन्यास पर आधारित है, 'जुनून' अंग्रेजी लेखक रस्किन बॉन्ड के उपन्यास 'ए फ्लाइट ऑफ पीजंस' पर आधारित है, 'मंडी' उर्दू लेखक गुलाम अब्बास की कहानी पर आधारित है और 'सूरज का सातवां घोड़ा' हिन्दी लेखक धर्मवीर भारती के इसी नाम के उपन्यास पर आधारित है।

श्याम बेनेगल को इस बात का श्रेय भी जाता है कि उन्होंने अपनी फ़िल्मों के माध्यम से प्रथम श्रेणी के ऐसे प्रतिभावान कलाकार हिन्दी सिनेमा को प्रदान किये जिन्होंने अपनी भूमिकाओं के द्वारा अभिनय कला को शीर्ष पर पहुंचा दिया। स्मिता पाटील, शबाना आज़मी, नसीरुद्दीन शाह, ओम पुरी, कुलभूषण खरबन्दा, गिरीश कर्नाड, अनंत नाग, अमोल पालेकर, नीना गुप्ता आदि कई नाम लिये जा सकते हैं। इसी तरह गोविंद निहलानी जो उनकी कई आरंभिक फ़िल्मों के छायाकार रहे, न केवल श्रेष्ठ छायाकार थे बल्कि फ़िल्मकार भी थे जिन्होंने आक्रोश, तमस, पार्टी आदि कई महत्त्वपूर्ण फ़िल्में बनायीं। उनकी अधिकतर फ़िल्मों का संगीत वनराज भाटिया ने दिया है जो बहुत ही उच्च कोटी के संगीतकार थे।

श्याम बेनेगल को अपनी फ़िल्मों के लिए 18 राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए और 2005 में दादासाहेब फाल्के अवॉर्ड भी प्रदान किया गया। 1976 में उन्हें पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया गया और 1991 में पद्मभूषण सम्मान प्रदान किया गया। श्याम बेनेगल ने हिन्दी सिनेमा को ही नहीं, भारतीय सिनेमा को जिस शीर्ष पर पहुंचाया, वह अतुलनीय है। लेकिन साथ ही उनके द्वारा बनाये गये वृत्तचित्र और टीवी धारावाहिक भी कम महत्त्व के नहीं है। एक महान फ़िल्मकार के रूप में वे सदैव याद किये जाएंगे। भारत के अतीत और वर्तमान को अपनी विशिष्टताओं और दुर्बलताओं के साथ समझने और एक बेहतर समतावादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतान्त्रिक भारत को बनाये रखने के संघर्ष में श्याम बेनेगल के सिनेमा के महत्त्व से इन्कार नहीं किया जा सकता।

"Time and Space Theory" को हिन्दी में ''समय और स्थान का सिद्धांत'' कहा जाता है। यह सिद्धांत विशेष रूप से ऐल्बर्ट आइंस्टीन के ''सापेक्षता का सिद्धांत'' (Theory of Relativity) के संदर्भ में प्रसिद्ध है।

इस सिद्धांत के अनुसार, समय और स्थान (स्पेस) अलग-अलग और स्वतंत्र नहीं हैं, बल्कि वे एक संयुक्त और आपस में जुड़े हुए होते हैं, जिसे ''स्पेस-टाइम'' (Space-Time) कहा जाता है। आइंस्टीन ने यह सिद्धांत विशेष और सामान्य सापेक्षता के रूप में विकसित किया।

मुख्य विचार :

1. स्पेस-टाइम (Space-Time): समय और स्थान को एक साथ देखा जाता है। यह दोनों एक-दूसरे से संबंधित होते हैं और किसी भी वस्तु की गति और द्रव्यमान के आधार पर इनमें बदलाव होता है।

2. सापेक्षता का सिद्धांत (Theory of Relativity):

विशेष सापेक्षता (Special Relativity): यह सिद्धांत बताता है कि गति और समय एक दूसरे से जुड़े होते हैं और गति के बढ़ने पर समय धीमा हो जाता है।

सामान्य सापेक्षता (General Relativity): इसमें यह बताया गया है कि भारी वस्तुएं (जैसे ग्रह और तारे) स्थान और समय को मोड़ देती हैं, जिससे गुरुत्वाकर्षण का प्रभाव उत्पन्न होता है।

3. गति और समय का प्रभाव : जब कोई वस्तु प्रकाश की गति के करीब गति करती है, तो उसका समय दूसरों के मुकाबले धीमा हो जाता है (यह घटना ''टाइम डाईलेशन'' कहलाती है)।

4. गुरुत्वाकर्षण और स्थान : भारी वस्तुएं, जैसे कि सूर्य, स्थान को मोड़ देती हैं, और यह मोड़ गुरुत्वाकर्षण पैदा करता है।

आधुनिक भौतिकी में समय और स्थान का यह सिद्धांत बुनियादी भूमिका निभाता है, और यह हमारे ब्रह्मांड को समझने के तरीके को पूरी तरह से बदल देता है।

कहानी

कितने में दोगे मोक्ष !

– भारत दोसी

रात के ग्यारह बजे थे निजी ट्रावेल्स की बस जयपुर की सडको पर रूक–रूककर चल रही थी । बडी चौपड पहुचकर ड्राइवर ने बस खडी कर दी । कुछ देर बाद बडे घेरदार घाघरे पहने, एक फिट का परदा किए कुछ महिलाएं बस में चढी उनके साथ सिर मुंडे आदमी, बच्चे भी थे । वे सब रिजर्व स्लिपिंग केबिन मे सो गए ।

जब बस पूरी भर गई तो सरपट दौडने लगी । सुबह के पॉच बजे मेरी नींद खुली । बस दिल्ली की सडकों पर दौड रही थी। अभी उजाला नहीं हुआ था। रोशनी की चकाचौध मे दिल्ली जगमगा रही थी। फलाई ऑवर के नीचे बडी संख्या मे लोग सोए थे । गरीब को खुले मे भी कोई चिन्ता नही है। हम थोडे पैसे वाले बंद कमरों मे भी असुरक्षित महसुस करते है। फलाई ऑवर के पिल्लरों के एक तरफ राधे–राधे और दूसरी तरफ 786 लिखा देखकर मुझे हंसी आ गई धर्म ने इसे भी बांट दिया है ।

पता नहीं फिर कब झपकी लग गई । जब आंख खुली तो बस हरिद्वाव मार्ग पर स्थित किसी ढाबे पर खडी थी। मैं नीचे उतरा। मेरी बस की सवार घेरदार घाघरों वालियां खेतों के किनारे बैठी थी। कुछ पानी की बोतलों से नीचे छिंटे मार रही थी। ढाबें मे अनेक शौचालय थे शायद इन औरतों को शौचालय मे जाने से शर्म आती होगी। तभी तो खुले मे बैठी है ।

कुछ देर बाद बस फिर चली। रूडकी मार्ग था । सडक किनारे बडे–बडे फलेक्स लगे है। ख्यातनाम कथावाचकों, संतो, महात्माओं का प्रचार किया गया है। उनके विशाल भवन बने है जिन्हें आश्रम कहा जाता है । समुचे मार्ग पर दोनों तरफ वैभव, समृद्धि दिखाई देती है।

हमारे देश में पैसा या तो नेताओं के पास है या धर्म प्रचारकों के पास । करोडो –अरबों के मालिक है ये लोग। योग गुरू के नाम से ख्यातनाम बाबा की मात्र पांच वर्ष में ही सम्पत्ति हजारों करोड हो गई है। बस हरिद्वार पहुच गई। बस से नीचे उतरा ही था कि पंडे ने घेर लिया। श्रीमान कहां से आ रहे है ? का प्रश्न उसके छिपे अर्थ को बता रहा था। मैंने इधर–उधर नजर दौडाई। चारों तरफ प्लास्टिक की दीवार, छत वाले झोपडे बने है। जिनके बाहर नंग–धडंग बच्चें खेल रहे है। गंदे पानी से खड्डे भरे हुए है।

मैंने हाथ मे पकडा पालिथीन को बैग सम्भाला और गंदगी को पार करता हुआ गंगा नदी के घाट पर पहुंच गया। एक पेड के नीचे कुछ साधु बैठे है। एक नन्हा बालक कटोरी लेकर आया अंकल, एक रूपया दे दो, आपको मोक्ष मिलेगा। मुझे उसकी बात सुनकर हंसी आ गई । मैं वही सीढियों पर बैठ गया। पास ही लगी गुमटी से पारलेजी बिस्किट का पेकेट खरीदकर उस बच्चे को दे दिया। गुमटी वाले को एक चाय का कहकर सामने बहती गंगा नदी को निहारने लगा। फिर चारों तरफ नजर दौडाई। गरीब ही गरीब नजर आए। इधर–उधर आते–जाते, खेलते,हगते,खाना बनाते लोग। गंगा के घाट पर इतनी गरीबी ?

दीवर पर नजर गई। तीन–चार पेम्पलेट चिपके थे। गुमशुदा की तलाश। बच्चे, बुढे, लडकियो के फोटो है। मैं चाय की चुस्कियां लेने लगा। एक जटाधारी साधु आया और शेम्पू का पाउच लेकर चला गया। थोडी देर बाद मैंने नदी के किनारें घाट पर चलना शुरू किया। दो किलोमीटर चलने के बाद हर की पौडी, अस्थि विसर्जन घाट के सामने पहूचा। इस बीच अनिगन भिखारियों के हाथ, कटोरे, बरनियां भिखारियों का देश की उक्ति को चरितार्थ कर रहे थे।

सफेद कुर्ता–पायजामा पहने एक युवक तेजी से मेरी तरफ आकर बोला श्रीमान अस्थि विसर्जन करना है क्या ? मैंने कोई जवाब नहीं दिया। पुल पार करके बीच के प्लेटफार्म ,घाट पर आ गया। अब मेरे दोनों तरफ गंगा बह रही है। कुछ लोग गंगा में डूबकिया लगा रहे है। आदमी चड्डी मे और औरतें पूरे वस्त्र पहने हुए। कुछ औरतें साडी का वर्ग बनाकर खडी है जिसके अन्दर औरते बैठी–बैठी वस्त्र बदल रही है।

एक आदमी रशीद बुक लेकर आया। घाट की सफाई के लिए दान मांग रहा है। मैंने कोई जवाब नहीं दिया। कुछ लोग गंगा किनारे खडे फोटो खिंचवा रहे है। इतने मे फिर पंडा आ गया 'कहा से आए है श्रीमान ?' मैंने जवाब नहीं दिया। दूसरी

तरफ देखने लगा। एक भिखारी ने कटोरा आगे कर दिया। मैंने एक रूपए का सिक्का डाल दिया। वह हंस दिया। एक रूपया.... वह पौडी पर जाएगा तो हजार–पांच हजार दे देगा मोक्ष के लिए और मुझे सिर्फ एक रूपया !!! मैंने उसे ध्यान से देखा। वह मेरे पास ही सीढियों पर बैठ गया। मैंने पूछा 'बाबा, यहा इतने गरीब क्यों है ?' गरीबी है तो गरीब होंगे ही न।

तुम कहा के रहने वाले हो ?

पता नहीं

कब से यहां रहते हो ?

छोटा था तब से।

गंगा मे नहाते होंगे?

हा

तब तो तुम्हें मोक्ष मिलेगा जरूर।

वह हंस दिया। इतने मे एक पंडा आ गया। अस्थि विसर्जन करवाना है क्या ? मैंने कहा नहीं । अच्छा ब्राहमण हो ,स्वय ही करोगे ? पर इससे मोक्ष नही मिलेगा ,वह तो यही के ब्राहमण से करवाने पर ही मिलेगा। कह कर वह चला गया। एक औरत रशीद बुक लेकर आ गई बाबा ने उसे भगा दिया।

तुम्हें मोक्ष चाहिए ?

हां

कितने वाला, पांच सौ से पांच हजार तक का है मोक्ष

क्या, कैसे, क्या कह रहे हो ?

वह बाबा मुझे हर की पौडी की तरफ ले चला। रास्तें मे अनेक भिखारी बैठे थे। किसी के हाथ नहीं, तो किसी के पैर नहीं। उनके कटोरो मे पडे 10–10 पैसे के सिक्के देखकर मैं चौक गया। ये अब भी प्रचलन मे है यहा! बाद मे पता लगा की श्रद्धालु, दयालु, दानी, मोक्ष चाहने वाले पुल पर बैठे व्यापारियो को एक रूपया देकर 10 पैसे के आठ सिक्के लेते है और इन भिखारियों को देते है ये भिखारी 12 सिक्के इन व्यापारियों को देकर एक रूपया ले लेते है।

हम हर की पौडी पहुचें। यही अस्थिया विसर्जन पर मोक्ष मिलने का मिथक है। एक पंडे ने पूछा 'अस्थि विसर्जन करवाना है क्या ?' मैं कुछ कहता इससे पहले बाबा बोला 'हां, कितने रूपए लोगें ?

जैसी–जैसी पूजा

पूरा मोक्ष चाहिए

पांच हजार लगेगा

ओर तो कुछ नहीं देना होगा ने

21–51 ब्राहमणों को भोजन करवाना होगा

अच्छा ओर क्या करना होगा?

गाय को चारा डालने के लिए रूपए देने होंगे ?

इन दोनों का कितना होगा?

कम से कम पांच हजार

मतलब दस हजार रूपए मे मोक्ष मिल जाएगा

हां

बांबा हंस दिया बोला बिना पूजा के अस्थि विसर्जन कर दे तो मोक्ष नहीं मिलेगा क्या ?

ब्राहमण के हाथो ही मोक्ष मिलता है, बाबा। मैंने गड़बड़ कर दी। बीच मे बोल दिया 'गंगा तो इधर बह रही है अस्थियां नीचे की तरफ ही जाएगी और स्वर्ग तो उपर कि तरफ है तब आत्मा को टर्न लेना पडेगा।'

पंडा नाराज हो गया। घूरते हुए चला गया। मैंने देखा अनेक मध्यम वर्ग के लोग, धनाढ्य लोग मृत परिजनों की अस्थियों विसर्जन करवा कर पूजा करवा रहे है। कुछ तो चांदी की गाय दान दे रहे है। पंडा संस्कृत मे कुछ बोल रहा है। नोट गिन रहा है और बोल रहा है 'आपकी माताजी को मोक्ष मिल गया'। और दूसरे मोक्ष की तैयारी मे लग गया। वही घाट के निकट बने गंगा माता मन्दिर मे कोई भी 'दर्शन' नहीं कर रहा है। सब गंगा मे डूबकियां लगा रहे हैं तीन, पांच, सात। पाप धुल रहे है। अस्थि विसर्जन प्रवाह मे तीस–चालीस युवक खडे है। अस्थियों के साथ चढाए, बहाए गए सिक्कें, रूपयों को झपट रहे है ये पंडे नहीं गरीब है।

बाबा और मैं पौडी के उपर बने बाजार मे चले गए चार–पांच मंजिला भव्य होटल के डाइनिंग हॉल मे भोजन का आर्डर देकर बैठ गए। जिसे पंडे से बाबा की बहस हुई थी वह हमारे पास आकर बैठ गया। मैने कहा 'पंडित जी भोजन करोगे क्या ?'

यह होटल मेरा ही है। आप तो करो भोजन। बात–बात मे उसने बताया की इस वर्ष का अस्थि विसर्जन का ठेका उसने ही लिया है। रोज का एक लाख रूपया। उसके चेले–चपाटे

मोक्ष दिलवाते है। वह कुछ देर बाद फिर बोला 'आपको अस्थि विसर्जन करवाना है तो बताओं 200-500 रू मे करवा दूंगा।' मेरे मना करने पर वह नाराज हो गया।

बाबा और मैं घाट पर चलते-चलते बहुत आगे निकल गए। फिर नदी किनारें सीढियों पर बैठ गए। बहुत देर तक चुपचाप बैठे गंगा के बहते जल को देखते रहे। बाबा ने मौन तोडा। 'कर्मकांडियो ने अपने स्वार्थ के लिए धर्म का ऐसा जाल बुना है कि व्यक्ति विश्वास करे या न करे उसे मजबूरी, सामाजिक दबाव के कारण, संस्कार के नाम पर निरर्थक यज्ञ-हवन, तर्पण- विसर्जन, मुंडन-मंडन करना पडता है। पहले आस्था, श्रद्धा, विश्वास बाद मे फल अनुभव की अवधारणा ने अंध विश्वास, पाखंड, कुरीतियां, विडम्बनाएं पैदा कर दी है यही इन पंडो की कमाई का आधार है।'

मैने पालिथीन थैली में से दूध की बोतल, नाश्ता निकाला। बाबा हंसते हुए बोला 'पंडे इस थैली में अस्थियां समझते रहे।' मैं भी हंसने लगा।

मो : 97994-67007

पृष्ठ 36 का शेष

45. यह मानना कि चमत्कारी शक्तियां होती है।
46. मूर्ति से अपने लिए कुछ मांगना।
47. जाति आधार पर किसी को श्रेष्ठ और किसी को नीच मानना।

यह अंधविश्वास हमें त्यागने चाहिए।

*****

जब तर्कशील नेता भूरा सिंह महिमा सरजा ने निभाई रागी जत्थे (धार्मिक व्यक्ति) की भूमिका!!!

- अजायब जलालाना

कुछ समय पहले की बात है...तर्कशील लोग अपने विचारों को आम जनता तक पहुँचाने के लिए सभी तरीकों का उपयोग करते हैं। तर्कशील सोसायटी पंजाब के एक कार्यकर्ता के ताऊ जी के निधन के बाद उसके भोग, धार्मिक रस्म का दिन था, इस अवसर पर कालांवाली इकाई के प्रधान मास्टर जगदीश सिंहपुरा ने रागी जत्थे को कम खर्चा और प्रभावशाली बातचीत के लिए परिवार और इकाई साथियों से परामर्श किया और भूरा सिंह महिमा सरजा को आमंत्रित करने का निर्णय लिया गया।

भोग से पहले भूरा सिंह भोगस्थल गुरुद्वारा में चौकड़ी मारकर माईक के सामने बैठ गए। जीवन और मौत क्या है? वे क्यों मर गए? कैसे से शुरू करके छोटे-छोटे विषयों,बीमारियां, सरकारी प्रबंध पर बोलना शुरू किया। भूरा सिंह ने वैज्ञानिक विचारों के माध्यम से धर्म, दर्शन, पर्यावरण, कैंसर और अन्य कई सामाजिक समस्याओं के अस्तित्व को समझाया लगभग 2 घंटे तक बोलते रहे...

शुरुआत में मामला तब हास्यास्पद हो गया जब नवागंतुकों ने भूरा सिंह को रागी (धार्मिक व्यक्ति) समझ लिया और पैसा लेकर भूरा सिंह के आगे माथा टेकने लगे...

खैर, वहां मौजूद लोग भूरा सिंह की वैज्ञानिक बातों से इतने प्रभावित हुए कि वे लगातार उससे बातें करते रहने के लिए बोलते रहे और भोग दोपहर डेढ़ बजे के बाद ही पड़ा।

भोग के बाद तर्कशील से नवनिर्मित रागी बने भूरा सिंह को वहां मौजूद लोग घेर कर ओर भी उत्सुकता भरी बातें सुनने लगे। साथ ही मास्टर जगदीश को इतनी अच्छी पहल के लिए बधाई देने के साथ ही उनका मोबाइल नंबर भी ले रहे थे।

उत्तर क्षेत्रीय तर्कशील संगठनों की दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला अत्यंत सफल रही

– सुमीत अमृतसर

उत्तर भारत के राज्यों में अंधविश्वासों, तथाकथित चमत्कारों, पाखंडी बाबाओं, ज्योतिषियों, तांत्रिकों, सांप्रदायिक और गैर वैज्ञानिक घटनाओं के खिलाफ वैज्ञानिक जागरूकता अभियान को तेज करने और वहां काम करने वाले विभिन्न तर्कशील संगठनों के बीच आपसी तालमेल, बातचीत बढ़ाने के उद्देश्य से तर्कशील सोसायटी पंजाब हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, जम्मू, हिमाचल, राजस्थान, उत्तराखंड, झारखंड राज्यों के तर्कशील संगठनों और प्रगतिशील कार्यकर्ताओं के निमंत्रण पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला 7–8 दिसंबर को तर्कशील सोसायटी पंजाब के मुख्यालय तर्कशील भवन बरनाला में आयोजित की गई, जिसमें तर्कशील सोसायटी पंजाब, हरियाणा, ह्यूमनिस्ट एसोसिएशन चंडीगढ़, साइंस फॉर सोसायटी उत्तराखंड, राजस्थान तर्कशील सोसायटी, नौजवान भारत सभा दिल्ली, साइंस फॉर सोसायटी झारखंड, ज्ञान विज्ञान समिति हरियाणा, तर्कशील सोसायटी जम्मू, तर्कशील सोसायटी भारत, इंडियन सिविल सोशल फोर्स राजस्थान और तर्कशील सोसायटी कनाडा के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

तर्कशील सोसायटी पंजाब के राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय तालमेल विभाग के राज्य प्रमुख जसवन्त मोहली ने प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्देश्य बताते हुए सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया।

कार्यशाला के प्रथम दिन के प्रथम सत्र में उपरोक्त संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने मंच पर अपना परिचय दिया।

उन्होंने अपनी संस्था द्वारा अंधविश्वासों, पाखंडी बाबाओं, गैरवैज्ञानिक घटनाओं और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ वैज्ञानिक चेतना के प्रचार–प्रसार के तरीकों, समस्याओं, अनुभवों, गतिविधियों और तर्कशील साहित्य की जानकारी साझा की।

दूसरे सत्र में तर्कशील सोसायटी पंजाब के वरिष्ठ नेता भूरा सिंह महिमा सरजा ने समाज में अंध विश्वास, अंधश्रद्धा और सांप्रदायिकता के बढ़ने के लिए जिम्मेदार कारणों और सरकार की सांप्रदायिक राजनीति को समझाते हुए कहा कि वैज्ञानिक सोच ही मनुष्य को इतिहास, समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, विज्ञान, राजनीति और शासन को समझने में मदद कर सकता है और जीवन में सही तरीके से समझने, परखने और अभ्यास करने का विचार देता है। उन्होंने कहा कि हमें धर्म और सांप्रदायिकता के बीच के अंतर को समझना चाहिए। राज्य नेता मास्टर राजिंदर भदौड़ ने पंजाब के तर्कशील आंदोलन के चार दशकों के विकास और राज्य, जोन और इकाई स्तर पर काम करने वाले विभिन्न विभागों के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

तीसरे सत्र में हिमाचल के युवा नेता अमनदीप सिंह लूथरा ने तर्कशील आंदोलन में युवाओं, छात्रों और महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के तरीकों के बारे में एक शोध पत्र पढ़ा गया। उन्होंने कहा कि हमें विद्यार्थियों में हर घटना के पीछे के कारणों को समझने की मानसिकता विकसित करनी चाहिए तथा विद्यार्थियों के स्तर का अधिक से अधिक तार्किक साहित्य लिखकर विद्यार्थियों तक पहुंचाना चाहिए। तर्कशील पारिवारिक बैठकों एवं सेमिनारों में युवाओं एवं महिलाओं की अधिक से अधिक भागीदारी के साथ–साथ उनके विचारों को सुना जाना चाहिए तथा समय–समय पर किसी तर्कशील पुस्तक पर विद्यार्थियों का व्याख्यान आयोजित किया जाना चाहिए।

अंतिम सत्र में राज्य नेता राजपाल बठिंडा ने वैज्ञानिक चेतना के प्रचार–प्रसार में 'तर्कशील' पत्रिका और तर्कशील साहित्य के महत्व पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि तर्कशील सोसाइटी पंजाब को अपने साहित्य का हिंदी और अंग्रेजी में अनुवाद कर लोगों तक पहुंचाना चाहिए। हिन्दी भाषी राज्यों की तर्कशील संस्थाओं और अन्य संस्थाओं के साहित्य का पंजाबी में अनुवाद किया जाना चाहिए। इस मौके पर तर्कशील सोसायटी पंजाब के प्रदेश नेता जोगिंदर कुल्लेवाल और करतार सिंह जगराओं ने क्रांतिकारी गीत प्रस्तुत किए, जबकि जोन पटियाला के नेता राम कुमार ने हाथ की सफाई के गुर दिखाकर पाखंडी बाबाओं का पर्दाफाश किया।

प्रशिक्षण कार्यशाला के दूसरे दिन के प्रथम सत्र में साम्प्रदायिक ताकतों द्वारा वैज्ञानिक सोच पर किये जा रहे हमलों का मुकाबला करने पर चर्चा की गयी। वरिष्ठ तर्कशील नेता भूरा सिंह महिमा सरजा ने मोदी सरकार द्वारा हिंदुत्व एजेंडे के तहत समाज में सांप्रदायिक नफरत फैलाने, शिक्षा के भगवाकरण करने और सदियों से तर्कशील विचारधारा पर सांप्रदायिक फासीवादी हमलों और संपूर्ण तर्कवादी आंदोलन को एक संगठनात्मक रूप देने के बारे में विस्तार से बताया।

साम्प्रदायिक ताकतों के खिलाफ एकता के साथ इसे वैज्ञानिक, सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, कानूनी और वर्ग स्तर पर मजबूत और प्रभावी बनाकर कड़े प्रतिरोध का आह्वान किया।

दूसरे सत्र में वैज्ञानिक चेतना के प्रसार में सोशल मीडिया के महत्व पर चर्चा की गई। वक्ताओं ने कहा कि आज के वैज्ञानिक युग में सोशल मीडिया एक प्रभावी हथियार बन गया है, जिसका उपयोग तर्कशील सोच के दायरे को व्यापक बनाने के लिए किया जा सकता है। अन्य राज्यों में वैज्ञानिक चेतना के प्रचार–प्रसार के लिए तर्कशील साहित्य को और अधिक सक्रिय करने के संबंध में विचार–विमर्श किया गया। इस मौके पर विद्यार्थी चेतना परीक्षण परीक्षा अनुवादित पुस्तक **'वैज्ञानिक चेतना'** का विमोचन हुआ। उसी समय जिसकी 400 से अधिक प्रतियां विभिन्न संगठनों द्वारा हाथों–हाथ खरीद ली गईं।

तीसरे सत्र में तथाकथित भूत–प्रेत और मानसिक समस्याओं के मामलों को सुलझाने के लिए तर्कशील और मनोवैज्ञानिक साहित्य के गहन अध्ययन पर जोर दिया गया। इसके अलावा समय–समय पर होने वाले पाखंडी बाबाओं, तांत्रिकों, ज्योतिषियों, आंखों पर पट्टी बांधकर नाक से सूंघकर पढ़ने वालों और गैर वैज्ञानिक घटनाओं के खिलाफ हर स्तर पर आम लोगों को जागरूक करना और एक समान अंधविश्वास विरोधी कानून बनाना तथा लागू करवाना। इसके लिए पूरे देश में हर स्तर पर अपने प्रयास तेज करने पर विचार किया गया।

इस अवसर पर प्रशिक्षण कार्यशाला का विश्लेषण करते हुए विभिन्न तर्कशील संगठनों के नेताओं ने कहा कि वैज्ञानिक चेतना और जन–हितैषी सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन के क्षेत्र में तर्कशील सोसायटी पंजाब द्वारा समय–समय पर की जाने वाली विशेष गतिविधियां और कार्यक्रम, जिसमें विद्यार्थी चेतना परीक्षण परीक्षा और तर्कशील साहित्य वैन की योजना,प्रकाशन विभाग, सांगठनिक ढांचा,प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में प्रचार आदि अनुभव से उन्होंने बहुत कुछ सीखा है। जिसे वे अपने राज्यों में भी लागू करने का प्रयास करेंगे।

कार्यशाला के अंतिम सत्र में तर्कशील साहित्य, पत्रिकाएं एवं सोशल मीडिया सहित अन्य क्षेत्रों में संवाद एवं तालमेल की रणनीति को मजबूत करने के लिए सभी संगठनों के प्रमुखों द्वारा एक संयुक्त तालमेल समिति का गठन किया गया। जिसमें इंडियन सिविल सोशल फोर्स राजस्थान के जगदीश प्रसाद, नौजवान भारत सभा दिल्ली के अमित बेरा, तर्कशील सोसायटी हरियाणा के फरियाद सनियाना, तर्कशील सोसायटी भारत के राजा राम हंडियाया, ह्यूमनराइट्ज एसोसिएशन चंडीगढ़ के दीपक कनौजिया, तर्कशील सोसायटी पंजाब के अजायब जलालाना, साइंस फॉर सोसायटी झारखंड के विकास कुमार, तर्कशील सोसायटी राजस्थान के राम मूर्ति, साइंस फॉर सोसायटी उत्तराखंड के गिरीश चंद्र, ज्ञान विज्ञान समिति हरियाणा के सुरेश कुमार, तर्कशील सोसायटी हरियाणा के बलवान सिंह और तर्कशील सोसायटी पंजाब के जसवंत मोहली को पूर्ण सहमति से नामांकित किया गया।

विभिन्न सत्रों के दौरान हुई चर्चा में तर्कशील संगठनों के प्रतिनिधि फरियाद सिंह, अनुपम, हेम राज स्टेनो, राम मूर्ति, गिरीश चंद्र, सुभाष तितरम, पारिजात, गुरप्रीत शेहना, राजेश पेगा, प्रिंसिपल हरिंदर कौर, सुरेश कुमार, विकास, प्रशांत, राम स्वर्ण लखेवाली, सुमीत अमृतसर, मनोज मलिक, अभिनव जम्मू, वीर सिंह, राजेश अकलिया, मदन सिंह, जोगिंदर कुल्लेवाल, संदीप धारीवाल भोजा, भूपिंदर सिंह, विक्रम सिंह, मैडम मंजू स्वामी, मंजू हनुमानगढ़, विकास, बलवान सिंह, चांदी राम, राजा राम हंडियाया, संदीप कुमार के अलावा तर्कशील सोसायटी के नेता अजायब जलालाना, हरचंद भिंडर. राम कुमार पटियाला, सतपाल सलोह नवांशहर, डॉ. मजीद आजाद, गगन रामपुरा, जगदेव रामपुरा, मोहन बडला, करतार सिंह जगराओं आदि ने भाग लिया। तर्कशील सोसायटी कनाडा से बलविंदर बरनाला और बीरबल भदौड़ ने विशेष तौर पर शिरकत की।

तर्कशील सोसायटी पंजाब राज्य नेता मास्टर राजिंदर भदौड़ ने प्रतिनिधियों का धन्यवाद किया। इस अवसर पर सभी तर्कवादी संगठनों के 70 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर विभिन्न तर्कशील संगठनों द्वारा अपने अपने साहित्य की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई। इस दो दिवसीय कार्यक्रम की संपूर्ण व्यवस्था की जिम्मेदारी व पंजीकरण के लिए राज्य वित्त प्रमुख राजेश अकलिया, बिंदर धनौला,बरनाला इकाई के नेता भीमराज, बीरबल भदौड़ ने निभाई। शाम के आखिरी सत्र के समापन के बाद सभी संगठनों के प्रतिनिधि अपने–अपने राज्यों में तर्कशील आंदोलन को और विस्तार देने का संकल्प लेते हुए अपने–अपने गंतव्य के लिए रवाना हो गये।

(राज्य मीडिया प्रमुख)

अनुवादक : अजायब जलालाना

याद सदीवी

प्रेरणा, सबक व अहिद

कृष्ण बरगाड़ी तरकशील लहर का वह मरहूम नायक है, जिसका जीवन व कार्य समाज में ज्ञान–विज्ञान को रौशन करने के लिए कर्मयोगियों के लिए प्रेरणास्रोत है। वह जितना समय लहर के अंग–संग रहे, सही कदम चला। नये राह तलाशे। अपना निजी छोड़ लहर को पहल दी है। अंधविश्वासों से अज्ञानता के अंधेरे को मात देने के लिए मशाल की तरह लट लट कर जगाया। वह विज्ञानक सोच को लोकाई तक पहुंचा कर तर्कशील काफ़ले का मोहरी बना। रास्ते में आ रही मुश्किलों के साथ डट कर माथा लगाया। अपने अम्लों के साथ दर्शाया कि मिशन, संस्था के लिए सुहिरदता के साथ काम करते समूह के हित बड़े होते हैं।

1950-2002

कैंसर जैसी बीमारी का हौंसले से मुकाबला करते हुए उसे बिछुड़ने के समय भी लोकाई को सबक दिया। ज़िंदगी का सफ़र खत्म कर के भी मानवता के साथ वफा निभाई। अपने शरीर को मैडीकल खोजों के लिए प्रदान करने के फैसले को परिवार ने आगे बढ़ाया। कृष्ण बरगाड़ी उत्तरी भारत का पहला शरीर दानी बना। वह याद में हमारे मन के अंदर समाया हुआ है। चलते रहने का बल है। तर्कशील लहर के कार्यों के कदमों का उत्शाह है। अंधविश्वासों के अंधेरे को हराने की प्रेरणा है। अपने इस मरहूम नायक के जीवन संघर्ष को सिजदा, सलाम करते हुए उनकी 23वीं वर्षगांठ पर उनके राह पर चलने का अहिद करते हैं।

23वां कृष्ण बरगाड़ी यादगार सूबाई समागम फरवरी 2025 के तीसरे सप्ताह तर्कशील भवन बरनाला में होगा।

तृची (तामिलनाडू) में 28, 29 दिसंबर को फैडरेशन आफ इंडीयन रैश्नेलिस्ट ऐसेसोसिएशन (फ़ीरा) की नयी चुनी गई कौमी कार्यकरणी कमेटी

(विस्तृत रिर्पोट अंगले अंक में)

जनवरी-फरवरी 2025 Reg. No. HARHIN/2014/60580 वर्ष 12 अंक 1

तरकशील लहर के बडते कदमों का सफर

7-8 दिसम्बर 2024 को तर्कशील भवन बरनाला (पंजाब) में सम्पन्न उतरी भारतीय राज्यों दिल्ली,झारखंड,हिमाचल प्रदेश, राजस्थान,उत्तराखंड, जम्मू,हरियाणा एंव पंजाब की दो दिवसीय तर्कशील कार्यशाला में शामिल कार्यकर्ताओं की तस्वीर

कार्यशाला में विद्यार्थी चेतना परीक्षा के लिए तैयार किताब का विमोचन

If undelivered please return to :
Tarksheel
Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera By Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Cell. 98769 53561, 98728 74620
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....